

UNIVERSAL
LIBRARY

OU_182447

UNIVERSAL
LIBRARY

OUP—67—11-1-68—5,000.

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No. H 82

Accession No. H 4086 .

V 65, N .
Author विद्यालंकार .

Title व्यास की जीवनी .

This book should be returned on or before the date last marked below

न्याय की रात

परिमार्जित संस्करण

लेखक

चन्द्रगुप्त विद्यालंकार

प्रकाशक

अत्तरचन्द कपूर एण्ड सन्ज़

काश्मीरी गेट, दिल्ली

जुलाई, १९५६

मूल्य ३ रुपये ५० नये पैसे

प्रकाशक :

अत्तरचन्द कपूर एण्ड सन्ज

काश्मीरी गेट

दिल्ली

तीन रुपये पचास नयं पैसे

मुद्रक :

न्यू इण्डिया प्रेस

कनॉट मरकम

नई दिल्ली

परिमार्जित संस्करण की भूमिका

आज से लगभग एक साल पहले मैंने यह 'न्याय की रात' नामक नाटक लिखा था। मेरा ख्याल था कि मेरे इस नाटक से हिन्दी जगत में एक तहलका-सा मच जाएगा। इसलिए नहीं कि यह विश्व-साहित्य के सर्वश्रेष्ठ नाटकों में है, पर इसलिए कि हिन्दी में अभिनय योग्य अच्छे नाटकों की बहुत कमी है, विशेषकर आज के युग की महत्त्वपूर्ण समस्याओं पर सफलतापूर्वक रंगमंच पर खेले जा सकने वाले नाटकों का तो लगभग अभाव ही है। 'न्याय की रात' की अभिनेयता पर जहाँ मुझे पूरा विश्वास था, वहाँ मुझे यह भी ख्याल था कि इस नाटक में आज के भारतीय जीवन के जिस पहलू को लिया गया है, वह अर्वाचीन युग का एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण सवाल है।

पर व्यवहार में हुआ यह कि 'न्याय की रात' की ओर बहुत कम लोगों का ध्यान गया। मैं इस बात से हतोत्साह या निराश तो नहीं हुआ हूँ, पर इस तथ्य द्वारा मुझे एक नई बात का ज्ञान जरूर हुआ है। हिन्दी में रंगमंच नहीं है, इससे अभिनय योग्य अच्छे नाटक भी बहुत कम हैं, यह तथ्य तो सर्वविदित है। यह एक दुश्चक्र है: जब अच्छे नाटक नहीं हैं तो हिन्दी रंगमंच पर किस चीज़ का अभिनय किया जाए? और जब रंगमंच नहीं है, तो अच्छे नाटक लिखे ही किस तरह जाएँ? यह दुश्चक्र कैसे तोड़ा जा सकता है, इस पर मैं आगे चलकर अपनी राय जाहिर करूँगा। यहाँ तो मैं इतना ही कहना चाहता हूँ कि हिन्दी में अच्छे नाटकों तथा रंगमंच की कमी या अभाव की बात तो मैं पहले भी जानता था, पर यह अनुभूति मुझे अब जाकर हुई है कि हिन्दी में अधिकार के साथ नाटक की आलोचना कर सकने वाले व्यक्ति और भी कम हैं। यानी नाटककारों और

रंगमंच से भी कम। जो लोग आलोचना करते हैं, उनमें से अधिकांश एकदम अनधिकारी हैं, उन्हें रंगमंच का रत्तो भर भी ज्ञान नहीं है। इस दशा में इस क्षेत्र में कोई अच्छी चीज़ तहलका नहीं मचा पाती और कोई बुरी चीज़ खिन्नता उत्पन्न नहीं कर सकती। यहाँ मैं यह स्पष्ट कर दूँ कि अच्छा नाटक मैं उमे ही कह रहा हूँ, जो रंगमंच पर खूब सफलता से अभिनीत किया जा सके। केवल पाठ्य नाटकों को मैं 'अच्छा नाटक' की संज्ञा नहीं दूँगा।

'न्याय की रात' का यह परिमार्जित संस्करण है। इस संस्करण में मैंने जो परिवर्तन किए हैं, उनकी कैफ़ियत तो यथास्थान दूँगा ही। यहाँ मैं यह निवेदन अवश्य करना चाहता हूँ कि इस तरह के सामाजिक नाटकों में, जहाँ लेखक किसी समस्या का चित्रण करने का प्रयत्न करता है, लेखक के लिए यह आवश्यक है कि वह अपना दृष्टिकोण भूमिका में स्पष्ट कर दे। इस नाटक के प्रथम संस्करण में मैंने अत्यन्त संक्षिप्त-सी भूमिका लिखी थी। बहुत शीघ्र मैंने यह अनुभव किया था कि नाटक की भूमिका मुझे विस्तार से लिखनी चाहिए थी, ताकि पाठक को मेरा दृष्टिकोण समझने में मदद मिले। इस संस्करण में मैंने जो परिवर्तन या परिमार्जन किए हैं, उनकी कैफ़ियत देना भी ज़रूरी हो गया है। इन्हीं कारणों से मैं यह दूसरी भूमिका ज़रा विस्तार से साथ लिख रहा हूँ।

स्वाधीनता प्राप्ति के बाद से हमारे देश की परिस्थितियाँ एकदम बदल गई हैं। अगस्त १९४७ से पूर्व हमारी जो समस्याएँ थीं, उनमें से कितनी ही बड़ी-बड़ी समस्याएँ—भारत को स्वाधीन करने का सवाल, विदेशियों द्वारा भारत का आर्थिक शोषण आदि—भारत के स्वाधीन होते ही आप से आप सुलझ गईं। तब तक प्रत्येक अनुभूतिशील भारतीय को सब से बड़ी साध यही होती थी कि उसका देश स्वतन्त्र हो। हज़ारों-लाखों भारतीय अपने-अपने ढंग से स्वाधीनता की इस देवी का चिन्तन और आराधन करते रहे। पिछली पीढ़ी के भारतीय साहित्य पर उस देशव्यापी अनुभूति की बहुत गहरी और स्पष्ट छाप है।

पर स्वाधीनता प्राप्ति के बाद हमारे देश के सामने एकाएक जो बहुत-से

नए सवाल आ खड़े हुए, उनकी ओर यथेष्ट ध्यान नहीं दिया गया । और तो और, हमारे साहित्यकारों का ध्यान भी इन नए सवालों की ओर नहीं गया । ये नए सवाल न सिर्फ बहुत विकट हैं, अपितु संख्या में भी बहुत अधिक हैं । उदाहरण के लिए—(१) सदियों तक भारत विदेशी शक्तियों द्वारा शोषित होता रहा था, इससे उसकी गरीबी अत्यन्त भीषण रूप धारण कर चुकी है, और किसी भी देश की गरीबी मन्त्र-बल से दूर नहीं की जा सकती, उसके लिए बहुत कठिन और लम्बी साधना और सब से बढ़ कर दृढ़ संकल्प की जरूरत होती है । (२) जनता का बहुत बड़ा भाग अशिक्षा, निरक्षरता और कमजोर स्वास्थ्य का शिकार है । इन सब को दूर करना एक आदश्यक कार्य है । (३) इन परिस्थितियों में भी भारत की आबादी बहुत तेजी से बढ़ रही है, इतनी तेजी से कि जितनी वह आज तक और कभी न बढ़ी थी । (४) स्वार्थ साधन, फूट और ईर्ष्या का वातावरण इस देश में सदियों से है, देश की अन्धविश्वासी साधारण जनता जागरूक नहीं है, इससे तिकड़मबाज स्वार्थी लोग देश तक को बेच खाने और अपने स्वार्थों के लिए देश में वैमनस्य और विभाजक प्रवृत्तियों को बढ़ाने की चेष्टा करते रहते हैं । इत्यादि । भारत की स्वाधीनता उसे देश-विभाजन की कीमत पर मिली थी, इससे अन्य भी कितनी ही बड़ी-बड़ी समस्याएँ—आबादी की अदलाबदली, अन्न की कमी आदि—स्वाधीन भारत के सामने आ खड़ी हुई थीं ।

यह स्पष्ट है कि उक्त बड़ी-बड़ी समस्याओं का सामना करने के लिए देश में और भी अधिक निःस्वार्थ साधना की आवश्यकता थी । यह आवश्यक था कि सारा देश उक्त कार्यों की पूर्ति में जुट जाता । यह और भी आवश्यक था कि भारत भर में भावनात्मक एकता का प्रसार किया जाता और देश भर में, विशेषतः देश के नौजवानों में वह आदर्शवाद भरा जाता, जो महात्मा गांधी के नेतृत्व में इस देश के पिछले तीन स्वाधीनता संग्रामों (१९२१, १९३० और १९४२) में दिखाई दिया था । पर वह सब नहीं हुआ । क्यों नहीं हुआ, इस सम्बन्ध में मुझे यहाँ कुछ नहीं कहना ।

सचाई यह है कि आचार्य विनोबा भावे जैसे कतिपय शानदार अपवादों को छोड़ कर आज देश में कहीं आदर्शवाद और निस्वार्थ भावना दिखाई नहीं दे रही। मध्य युग में यह प्रथा थी कि युद्ध में जीत जाने पर विजयी सेनाएँ खुली लूट मार किया करती थीं, जिसके जो हाथ लगता था, लूट लिया करता था। शायद यही उनकी तनख्वाह मानी जाती थी। आज भी हमारे देश में कुछ उसी तरह का वातावरण दिखाई दे रहा है। कुछ अजीब तरह की आपाधापी का वातावरण बना हुआ है।

भारत के वर्तमान प्रधान मन्त्री और उन्हीं के ढंग के कुछ बड़े या छोटे लोगों की बात जाने दीजिए, जो दिन-रात भारत को इन नई समस्याओं से जूझने में लगे हुए हैं ; मैं तो विभिन्न तबकों के अधिकांश सर्वसाधारण लोगों की बात कर रहा हूँ। इन तबकों में स्वाधीनता की प्रतिक्रिया बीसों रूपों में हुई। इनमें से कुछ इस प्रकार हैं :—(१) आजादी की लड़ाई में हमने हिस्सा लिया था, अब आजादी मिल गई है, अब हमारा हक है कि हम आराम करें, हमारी प्रतिष्ठा हो और हम फायदा उठाएँ। (२) अंग्रेजों के ज़माने में भी हम शासन चलाते थे, चाहे उस ज़माने में हम छोटे-मोटे अफसर या क्लर्क ही क्यों न रहे हों, केवल हमीं जानते हैं कि शासन किस तरह चलाया जाता है, इसलिए बारह बरसों में ही हमारा रुतबा अगर ५-६ गुना बढ़ गया है, तो यह हमारा हक है। हमें इससे भी अधिक अधिकार, सुविधाएँ और धन दो। (३) हमें उद्योग-व्यवसाय का पुराना और पुश्तैनी अनुभव है, देश को अब सभी कुछ अपने यहाँ ही बनाना है, सो वह सब हमारा हिस्सा है। प्राइवेट सैक्टर हमारा है, उसके सभी उद्योगों पर पूर्ण रूप से हमारा ही अधिकार और हमारा ही नियन्त्रण रहना चाहिए। यानी व्यवसाय का पूरा मुनाफ़ा हमारा मुनाफ़ा है। (४) आजादी का मतलब यह है कि अब हमारा कोई उत्तरदायित्व बाकी नहीं रहा, जो कुछ करना है, सब सरकार को करना है, सब समस्याओं को हल करना सरकार का ही काम है, नहीं तो विदेशी सरकार और अपनी सरकार में फ़र्क ही क्या हुआ ? (५) हमारे देश की संस्कृति और आचार

सब से उन्नत हैं, संसार भर में केवल हमीं ने अहिंसात्मक उपायों से स्वाधीनता प्राप्त की है, इस तरह हम संसारके सब से उन्नत राष्ट्रों में हैं। भौतिक उन्नति में रखा ही क्या है! हम तो संसार के आध्यात्मिक नेता हैं! (६) हम बहुत दूरदर्शी हैं, कानूनदाँ हैं, हम जानते हैं कि कानून से किस तरह बचा जा सकता है, हम यह भी जानते हैं कि पुरानी मनोवृत्ति आज भी गई नहीं, यानी अफ़सर और जनता के तथाकथित नेता दोनों को खरीदा जा सकता है, हम यह भी जानते हैं कि यातायात के साधनों की कमी आदि का उपयोग कर हम मनमाना फायदा उठा सकते हैं, हम जब चाहे कीमतें चढ़ा सकते हैं, हम टैक्स बचा सकते हैं, हम जनता को अन्धकार में रख सकते हैं, हमारे लिए स्वाधीनता का यही सबसे बड़ा वरदान है। (७) हम नौजवानी की ओर कदम बढ़ाने वाले विद्यार्थी हैं, देश आज़ाद है और अब हम भी आज़ाद हैं। हम जिस तरह चाहेंगे, शिक्षा की व्यवस्था उसी तरह होनी चाहिए। कल देश की बागडोर हमारे हाथों में आएगी, वह आज ही आ जाए, तो हर्ज ही क्या है? इत्यादि।

इन परिस्थितियों में, मेरी राय से और भी अधिक आवश्यक है कि सरकारी मशीन के कल-पुर्जे पूरी तरह निर्दोष हों। यह एक मानी हुई बात है कि जिस देश को कोई बड़ा काम करना हो, अथवा जब कोई देश विषम परिस्थितियों में से गुज़र रहा हो, तो उसका शासन तन्त्र अत्यन्त मजबूत होना चाहिए। इसी लिए युद्ध के दिनों में सरकार के नागरिक भाग में भी नियन्त्रण को बहुत अधिक महत्त्व दिया जाता है और शासन कड़ाई से चलाना पड़ता है। यह स्पष्ट है कि हमारे देश में आज जो परिस्थितियाँ हैं, वे युद्ध काल से भी अधिक विकट हैं, क्योंकि संसार की इस बड़ी प्रतिस्पर्धा में बहुत पिछड़े हुए होने पर ही हमारी वंश-वृद्धि भयंकर अनुपात में हो रही है। हम जो कुछ करते हैं, वह हमारी वर्तमान स्थिति को कायम रखने के लिए भी कठिनाई से पूरा होता है, हमारे आगे बढ़ने का तो सवाल ही कहाँ है?

मेरे कहने का यह अभिप्राय नहीं है कि स्वाधीनता के युग में भारत

ने कोई उन्नति ही नहीं की। पिछले १२ वर्षों में देश में बहुत व्यापक पैमाने पर कितने ही बड़े-बड़े काम हुए हैं। पर हमें यह ज्ञात होना चाहिए कि हमारी समस्याएँ इन बड़े कामों से भी बहुत अधिक बड़ी हैं। देश में अभी तक जो कुछ हुआ है, वह एक तरह से आगे आने वाले बड़े कामों की भूमिका या पूर्व-पीठिका मात्र है। जिस तरह कोई बहुत बड़ी इमारत बनाने से पहले निर्माण स्थल को खोद कर वहाँ गढ़ा-सा बना देना पड़ता है, उसी तरह हमने अभी तक जो कुछ किया है, वह गढ़ा खोदने के ही समान है। हमारी पहली दोनों योजनाएँ आगे आने वाली योजनाओं की तैयारी मात्र हैं। तीसरी योजना की पूर्ति से पहले यह आशा नहीं करनी चाहिए कि हम अपनी साम्प्रतिक दशा को साधारण ढंग से भी मजबूत कह सकें। मेरी यह निश्चित धारणा है कि जब तक सारा देश पूर्ण मनोयोग से इस बड़े निर्माण-कार्य में जी-जान से नहीं जुट जाएगा, हमें अधिक सफलता नहीं मिलेगी। और मैं यह ऊपर स्पष्ट कर आया हूँ कि देश की अधिकांश जनता आज उस 'मूड' में नहीं दिखाई दे रही।

ऐसी परिस्थितियों में नेतृत्व स्वभावतः सरकार के हाथ में आ जाता है। और सरकार तभी इस तरह का नेतृत्व कर सकती है, जब उस की अपनी मशीन निर्दोष हो। कठिनाई यह है कि पिछली विदेशी सरकार ने शायद जानबूझ कर ऐसी परिस्थितियाँ बनाए रखीं, जिनमें भ्रष्टाचार का पोषण हो। उदाहरण के लिए देश के हजारों-लाखों पटवारियों (या उस स्थिति के सरकारी कार्यकर्ताओं) के लिए उसी हास्यास्पद रूप से न्यून तनख्वाह रखने का मतलब ही क्या था? उन्हें जो तनख्वाह मिलती थी, वह उनके घोड़े की खुराक के लिए भी पर्याप्त न होती थी। उसका स्पष्ट अभिप्राय था कि लूटो और खाओ। वही होता भी था। कौन नहीं जानता कि उस युग में छोटी-बड़ी रिश्वत दिए बिना अदालत में (जिसे भारत में 'न्याय मन्दिर' माना जाता रहा है!) एक कदम भी नहीं चल सकते थे, रिश्वत दिए बिना रेल द्वारा आप कोई माल न भेज सकते थे, न मंगा सकते थे। स्वाधीन भारत की सरकार उन परिस्थितियों को बदलने

का गम्भीर प्रयत्न अवश्य कर रही है, पर क्या उन्हें आसानी से बदला जा सकता है ?

इन परिस्थितियों में सब से बड़ी आवश्यकता इस बात की है कि देश की जनता जागरूक हो । "प्रजातन्त्र प्रणाली की सफलता मुख्यतः इसी बात पर निर्भर करती है कि देश के जनसाधारण कितने जागरूक और सतर्क हँ । जन-साधारण को जागरूक बनाने के लिए यह आवश्यक है कि हमारे नौजवानों का एक अच्छा खासा भाग आदर्शवाद (Idealism) का पुजारी हो । जो आदर्श हमारे देश में आज अत्यन्त लोकप्रिय होने चाहिए, उनमें से कुछ इस प्रकार हैं : (१) भारत की भावनात्मक एकता—हम भारतीय हैं, सब से पहले भी भारतीय और सब से अन्त में भी भारतीय । प्रान्तीयता की भावना हमारे देश में से एकदम समाप्त हो जानी चाहिए । (२) हम सब समान हैं—जन्म या धन के आधार पर ऊँच-नीच तथा जात-पाँत की भावना भारत में से नष्ट हो जानी चाहिए । (३) संसार भर में शान्ति स्थापना का प्रयत्न—विश्व-भर में आज जो सन्देह, भय और घृणा का वातावरण व्याप्त है, उसके स्थान पर भारत मानव मात्र में प्रेम और विश्वास की भावना उत्पन्न करना चाहता है । इसे पंचशील कह लीजिए या गांधीजी का मार्ग । (४) 'कामये दुःखतप्ताना प्राणिनामर्तिनाशनम्' की पुस्तनी भारतीय भावना । "

'न्याय की रात' लिखते हुए ये सब बातें मेरे ध्यान में रही हैं । हेमन्त आज के समाज के सम्मानित, सम्पन्न पर नितान्त स्वार्थी और विकृत अंश का प्रतिनिधि है, तो सदानन्द सरकार के एक भ्रष्टाचारी पर भीरु वर्ग का । राजीव सरकार के श्रेष्ठ और आदर्शवादी अंश का प्रतिनिधि है और कमला तथा जुगलकिशोर वर्तमान युग के श्रेष्ठ और कुछ ठोस काम करने की इच्छा रखने वाले युवक वर्ग के प्रतिनिधि हैं । पर इस बात की ओर मेरा पूर्ण ध्यान रहा है कि ये सब पात्र विभिन्न वर्गों के प्रतिनिधि मात्र न रह जाँएँ । जहाँ तक मुझ से बन पड़ा है, इनके व्यक्तित्व को पृथक्-पृथक् और स्पष्ट रूप देने का प्रयत्न मैंने किया है । नाटक की कलात्मकता

की एक परीक्षा इस बात से भी होगी कि मैं अपने इस प्रयत्न में सफल हुआ हूँ या नहीं।

यह नाटक लिखते ही मैंने प्रेस में भेज दिया था। लिखे जाने के एक सप्ताह के भीतर ही यह प्रकाशित भी हो गया था। छप जाने के बाद कितनी ही बातें मुझे स्वयं ख्याल में आईं। नाटक छपने के करीब दस सप्ताहों के बाद श्री बलराज साहनी का निम्नलिखित पत्र पाकर मुझे बहुत खुशी हुई, क्योंकि वे नाटकों के रूपा तथा अभिनय दोनों के सम्बन्ध में अत्यन्त प्रामाणिक व्यक्ति हैं। वे न सिर्फ़ भारत के अत्यन्त श्रेष्ठ अभिनेताओं में हैं, अपितु गत ३० वर्षों से वे भारत में और भारत के बाहर नाटकों के अभिनय सम्बन्धी सभी कार्यों में क्रियात्मक गहरी दिलचस्पी लेते रहे हैं। उनका वह पत्र इस प्रकार है :—

स्टेला विला,
थियोसोफिकल कौलोनी,
त्रुह, वम्बई-२३,
१५ जुलाई, १९५८

मेरे प्यारे चन्द्रगुप्त जी,

मैंने अभी-अभी आपका नया नाटक 'न्याय की रात' पढ़ा है और उसी समय आपको पत्र लिखने बैठ गया हूँ। इसीसे आप यह अन्दाज़ कर सकते हैं कि नाटक ने मुझ पर कितना अमर किया है।

मब मे पहली बात मैं यह लिखना चाहता हूँ कि आपने अपनी नाट्य-सम्बन्धी प्रतिभा मे मुझे चकाचौंध कर दिया है। मुझे यह उम्मीद ज़रा भी नहीं थी कि यथार्थवादी टैकनीक को आप इतनी गहराई मे समझते है और नवीन पद्धति मे नाटक लिखने की इतनी सामर्थ्य आप में है। हिन्दी के नाटककारों में मिर्फ़ उपेन्द्रनाथ 'अश्व' ही ऐसे व्यक्ति है, जिन्होंने नाटक-शैली को थोड़ा-बहुत निभाया है। पर उनके नाटकों में मुझे सदा विचारों का हल्कापन दिखाई दिया है। उनके नाटकों में विषय-वस्तु की गहराई

नहीं है और टैकनीक का दिग्वावा है। आप के पहले नाटक 'अशोक' में भी कमजोरियों की भरमार थी। इसी कारण मेरा ख्याल था कि आप कभी अच्छा नाटक नहीं लिख सकेंगे। शायद यही कारण है कि इतने दिनों तक 'न्याय की रात' मेरे पास होते हुए भी मैंने अभी तक यह नाटक पढ़ने की तकलीफ नहीं की थी। पर आज जब मैंने यह नाटक पढ़ा, तो अनुभव किया कि आज तक न उपेन्द्रनाथ 'अशक' ने और न किसी अन्य हिन्दी-लेखक के किसी नाटक ने मुझे इतना अधिक प्रभावित किया है, जितना 'न्याय की रात' ने किया है। ऐसा क्यों हुआ ? यह इसी समय बता सकना कठिन है, क्योंकि नाटक मैंने अभी-अभी पढ़ा है। पर इतना मैं जरूर अनुभव कर रहा हूँ कि आपने बहुत ऊँचा हाथ मारा है। नाटक की विषय-वस्तु बहुत ही महत्त्वपूर्ण, बड़ी ही अनुकूल और अन्यन्त सामयिक है। "मेरे माँ-बाप का लोगों ने मेरी आँखों के सामने कत्ल किया था। वह दर्दनाक नजारा मैं कभी भूल नहीं सकती ! पर तुम लोग तो उन कानिलों में भी बड़े कातिल हो !"—कमला के ये शब्द मेरे कानों में गँज रहे हैं और मैं आप के हुनर की दाद दिए बिना नहीं रह सकता।

दूसरी बात जो मुझे बहुत पसन्द आई है, वह है 'न्याय की रात' का बहुत ही स्वाभाविक वातावरण। कमाल का डायलाग है। जो व्यक्ति ऐसे प्रभावशाली डायलाग (कथोपकथन) लिख सके, वह अवश्य ही कमाल का नाटककार बन सकता है, क्योंकि अभिनय का दारोमदार ही डायलाग पर होता है। आप के डायलागों में गति है, पात्रों की विशेषताओं को निखार कर रख देने की शक्ति है और बाकी भी सभी आवश्यक खूबियाँ हैं। इस कारण मैं दावे से कह सकता हूँ कि अगर आप मेहनत करते रहे, तो भारत के साहित्य की एक बहुत बड़ी न्यूनता को आप पूरा कर सकते हैं। आप मंजिल पर करीब-करीब पहुँच गए हैं। मैं तो अभी तक इस जगह तक पहुँचने के ख्वाब ही देखता आया हूँ। अगर मैं इस जन्म में मचमुच एक बहुत अच्छा एक्टर बन पाऊँ, और आप एक कमाल के नाटककार बन सके, तो समझिए कि हम दोनों के जन्म सफल हो गए। आप जानते ही हैं

कि यह एक बहुत बड़ी तपस्या है। यह नाटक लिख कर आपने मिद्ध कर दिया है कि आप काफ़ी तपस्या कर चुके हैं, बड़ी जबरदस्त तपस्या कर चुके हैं। यह जानकर मुझे बहुत अधिक खुशी हुई है, क्योंकि यह नाटक पढ़ने से पहले मेरे मन में यह मोच कर अफ़सोस ही हुआ करता था कि आप भी सरकारी दफ़्तर का एक पुर्जा बन कर रह गए हैं।

क्योंकि आप यह तपस्या कर चुके हैं, इस कारण मुझे ज्ञात है कि आप मेरी बात समझेंगे और इसे निरा बौद्धिक तर्क नहीं मानेंगे। अब सुनिए—

मेरे विचार में इस नाटक पर अभी कुछ और मेहनत करने की जरूरत है। अगर आप वह मेहनत करेंगे तो यह नाटक एक महान रचना बन सकता है। नाटक की कथा-वस्तु बड़ी सीधी और साफ़ है। मुझे वह इस प्रकार लगती है :—

हेमन्त एक निकड़मबाज़ बिजिनेसमैन था, जो ऊँचे सरकारी अफ़सरों को लालच में फँसा कर अपना काम निवाला करता था। लाखों रुपए वह खुद बनाता था और हजारों अफ़सरों को ख़िलाता था। उसकी अन्तर्गत्मा इस बात का विरोध नहीं करती थी, क्योंकि वह देख रहा था कि आज़ाद भारत में और भी कितने ही लोग यही कुछ कर रहे हैं।

इस हेमन्त का एक दोस्त था सदानन्द। वह एक बहुत बड़ा सरकारी अफ़सर था। उसके द्वारा हेमन्त ने अपने बहुत-से काम साधे थे और उसे भी बहुत रुपया दिया था। सदानन्द फिर भी कच्चा बदमाश था। बड़ा डरपोक और, पाप-पुण्य को मानने वाला। हेमन्त ने उसको फुसलाया कि इतना पैसा बना लिया है, तो कुछ एग भी करनी चाहिए। अर्धेड़ उम्र में बीबियाँ बूढ़ी हो जाती हैं, पर मर्दानों पर जैसे दमरी जवानी चढ़ती है। हेमन्त ने सदानन्द से कहा कि 'आप फिर न करे। मैं आपके लिए एक ऐसी लड़की का प्रबन्ध करूँगा, जो हर लिहाज़ से अच्छी हो।' उन्होंने दिनों एक शरणार्थी लड़की कमला हेमन्त की नज़रों में आई, जो जितनी सुन्दर थी, उतनी ही ज़रूरतमन्द भी। हेमन्त ने उसे सदानन्द का प्राइवेट सेक्रेटरी लगवा दिया।

कमला को शुरू ही से मदानन्द पर गहरी श्रद्धा है, जो दफ्तर के बाकी लोगों को हैरानी में डालती है। खाम तौर से जुगलकिशोर को। जुगलकिशोर स्वयं भुक्तभोगी था और उसे मदानन्द के हथकण्डों का अनुभव प्राप्त था। मदानन्द ने कोशिश की थी कि कमीशन द्वारा चुने जाने पर भी जुगलकिशोर की पोस्ट अपने किमी दोस्त या रिश्तेदार के लड़के को दे दे। खुशकिस्मती से जुगलकिशोर को वस्तु पर यह बात मालूम हो गई और मदानन्द से भी बड़े अपने पिता के दोस्त एक सरकारी अफसर से कहलवा कर वह अपनी पोस्ट पर बहाल हो सका। जुगलकिशोर कमला से कुछ ही साल बड़ा था और उसका हितचिन्तक था। उसने कमला को समझाने की कोशिश की। उसने कमला से कहा कि आज का समाज गन्दगी से भरा हुआ है। उसका सामना करना होगा। कमला जुगलकिशोर को बहुत पसन्द करती है पर उसकी रैडिकल बातों से डरती भी है।

मदानन्द कमला पर डोरे डालता है। वह उसे अकेले में अपने कमरे में बुलाता है और चिट्ठी टाइप करने को कहता है। वह चिट्ठी टाइप कर रही होती है तो उसके पीछे आ खड़ा होता है। बढ़ने की कोशिश करता है, पर झिझकना भी है। क्योंकि कमला उसे पवित्र भाव से देखती है, वह उसकी पाप-भावना को समझ तक भी नहीं पाती। मदानन्द के प्रति वह अत्यन्त कृतज्ञ है। मदानन्द को वह किमी भी हरकत से रोकती नहीं है, उसके पूछने पर वह उसे कह देती है कि 'आपको देखते ही मुझे अपने पिता जी याद आ जाते हैं। मुझे आप पर उतना ही विश्वास है, जितना अपने पिता जी पर था।'

यहाँ तक तो आपके नाटक का कथानक कम-अधिक यही है और मेरी राय से ठीक चलता है। पर उसके बाद आपको कुछ अधिक परिवर्तन करना चाहिए। आपने दिखाया है कि कमला के संसर्ग से मदानन्द तो सुधर जाता है, पर जालसाज हेमन्त उसे सुधरने का मौका नहीं देना चाहता। अपने नाटक के क्लाइमेक्स में आपने हेमन्त को रंगे

हाथों गिरफ्तार करवा दिया है और कमला, सदानन्द तथा जुगलकिशोर नाटकीय परिस्थितियों में उसे गिरफ्तार करने का उपकरण बनते हैं।

पर मेरी राय से इसकी जगह आपको यह दिखाना चाहिए था कि जन्म का भीरु सदानन्द अपने स्वार्थ के मुकाबले में कमला की भी परवाह नहीं करता। हेमन्त की तम्बाकू कम्पनी की बेइमानियाँ जब पकड़ी जाने लगती हैं, तो वह सदानन्द की ऊँची स्थिति की आड़ लेकर बचने का प्रयत्न करता है और सदानन्द को धमकी देता है कि वह उसकी जगह कमला को उस जालसाजी का जिम्मेवार ठहराए (इस बात का आधार आप अपने नाटक में बना ही चुके हैं)। तब अपने स्वार्थ की खातिर भीरु सदानन्द कमला को भी फँसाने के लिए तैयार हो जाता है और कमला पूरी तरह फाँस ली जाती है।

किडनैप कर के कमला हेमन्त के कमरे में पहुँचाई जाती है, जहाँ नाटकीय परिस्थिति में वह पाती है कि उमका उद्धार असम्भव है। अब आप यह दिखाएँ कि किसी बहाने से हेमन्त को कमरे से बाहर भेज कर कमला खिड़की से ४ मंजिल नीचे छलांग मार कर आत्मघात कर लेती है। उम्मी वस्तु जुगलकिशोर कमला को बचाने के लिए वहाँ पहुँचता है। नीचे शोर मच गया है। पुलिस भी आ जाती है। लोग कमरे में पहुँच जाते हैं और जुगलकिशोर चिल्ला-चिल्ला कर हेमन्त और सदानन्द से कहता है —“अगर मैं अपने पिता की सन्तान हूँ तो तुम बदमाशों का सत्यानाश करके रहूँगा। कमीनो, गद्दारो, तुम देश के सबसे बड़े दुश्मन हो ! मैं तुम्हें जहन्नम में पहुँचा कर ही दम लूँगा। तुमने मेरी खुशी मुझ से छीन ली है, मैं तुम्हारा खात्मा कर के रहूँगा !” इत्यादि।

मेरी राय से ‘न्याय की रात’ के कथानक में आप उक्त परिवर्तन कर कहानी में वह पकड़ पैदा करें कि लोगों की चीखें निकल जाएँ। नाटक की कहानी सदा सीधी लकीर में चलनी चाहिए, उसमें सहज प्रवाह रहना चाहिए। न तो उसमें अनावश्यक पात्र रहने चाहिए और न अनावश्यक

घटनाएँ ही। मेरा यह मतलब नहीं कि आपके नाटक में अनावश्यक पात्र या घटनाएँ हैं। मैं तो सिद्धान्त की बात कर रहा हूँ।

मेरी यह भी सलाह है कि आप हैनरिक इब्सन की शैली का अनुसरण करें। उससे यह नाटक एक महान् नाटक बन जाएगा। अपने नाटक में आवश्यक सुधार अवश्य कीजिए। मुझे मालूम है कि संसार के कितने ही श्रेष्ठ नाटकों की स्क्रिप्ट में बीस-बीस बार सुधार किए गए हैं, तब जाकर उनमें वह निखार आया है कि वे कभी पुराने नहीं पड़ते और सारी दुनिया उन्हें पसन्द करती है। आप भी स्वयं मोच विचार कर और जानकारी लोगों से राय लेकर अपने नाटक में आवश्यक परिवर्तन और सुधार अवश्य कीजिए, ताकि यह नाटक भी उक्त श्रेणी में आ सके।

सप्रेम आपका,
वलराज साहनी

कुछ ही दिनों के बाद अन्य भी कितने ही मित्रों से उपयोगी परामर्श मुझे मिले। कुमारी शान्ता गांधी ने मुझ से कहा कि 'न्याय की रात' में राजीव का चरित्र उभरने नहीं पाया, वह असफल और कमजोर व्यक्तित्व का पात्र प्रतीत होता है, जो शायद नाटक की भावना के अनुकूल नहीं है। नाटकों के सम्बन्ध में प्रामाणिक मेरे एक अन्य मित्र, जो स्वयं एक बहुत ऊँचे दर्जे के सरकारी अफसर हैं, ने मुझे से कहा कि हेमन्त को तो अपने किए की सजा मिल जाती है, पर सदानन्द, जो सरकारी अफसर होते हुए भी भ्रष्टाचारी रहा है, बेदाग छूट जाता है। उमा और जुगलकिशोर के चरित्रों का समुचित विकास नहीं किया गया, यह आलोचना भी की गई। इन सब आलोचनाओं पर मैंने खूब गहराई के साथ विचार किया। उसके बाद प्रथम मई, १९५९ को यह नाटक नई दिल्ली की सुप्रसिद्ध संस्था लिटिल थियेटर ग्रुप की ओर से खेला भी गया। वह इस नाटक का कुछ अंशों में, विशेषतः दूसरे अंक में, परिवर्तित रूप था। लिटिल थियेटर ग्रुप के डाइरेक्टर महोदय का ख्याल था कि सदानन्द की कमला के प्रति आसक्ति

रंगमंच पर दिखाई जानी चाहिए। चुनांचे अभिनय में वही दिखाया गया था।

उक्त सभी आलोचनाओं पर विचार करने तथा उक्त अभिनय को देख लेने के बाद मैंने 'न्याय की रात' में काफी परिवर्तन किए हैं। मुख्यतः तीन परिवर्तन किए गए हैं: (१) राजीव को अब एक अत्यन्त जागरूक और सफल अफसर के रूप में चित्रित किया गया है। हेमन्त यह समझता रहता है कि वह राजीव को बेवकूफ बना रहा है, पर असल में वह स्वयं राजीव के जाल में फँस जाता है। (२) नाटक का अन्त अब हेमन्त की गिरफ्तारी से नहीं होता। हेमन्त जैसा जबरदस्त चरित्र आत्म समर्पण नहीं करता। (३) पहले संस्करण में हेमन्त की बहन उमा केवल प्रथम अंक में आती थी, अब वह तीसरे अंक में भी आती है और भाई को समझाने का प्रयत्न करती है। इन तीनों मुख्य परिवर्तनों के अतिरिक्त नाटक को और अधिक कस देने, निखारने तथा अभिनय की दृष्टि से अधिक उपयुक्त बनाने का प्रयत्न भी मैंने इस परिमार्जित संस्करण में किया है।

अत्यन्त प्रामाणिक व्यक्तियों द्वारा दी गई जिन दो सलाहों से मैं सहमत नहीं हूँ, उनके बारे में कैफ़ियत देना जरूरी समझता हूँ। श्री बलराज साहनी की राय है कि हेमन्त के चुगल में बुरी तरह फँस कर और सब ओर से निराश होकर कमला को आत्मघात कर लेना चाहिए। मेरी राय से यदि इस सुझाव पर अमल किया जाए तो 'न्याय की रात' मैलो-ड्रेमेटिक बन जाएगा, जिससे बचने का प्रयत्न मैंने हिरन्तर किया है। यदि कमला का आत्मघात दिखाया जाए, तो यह भी आवश्यक होगा कि यह भी दिखाया जाए कि जनता हेमन्त जैसे स्वार्थपरायण जालसाजों के विरोध में विद्रोह करने को तैयार है। अब ऐसी परिस्थितियाँ न तो देश में हैं और न मैं उन्हें वांछनीय ही मानता हूँ। स्थायी और उपयोगी परिवर्तन वही है, जो आततायी के हृदय को बदल दे। जैसा परिवर्तन इस नाटक में सदानन्द के चरित्र में दिखाया गया है।

दूसरा सुझाव सदानन्द को सजा देने के सम्बन्ध में है। सदानन्द हेमन्त का सहयोगी रहा है। धोखेबाजी के बड़े-बड़े काम दोनों ने मिलकर

किए हैं। आलोचक महोदय का कथन है कि जैसे ताली दो हाथों से बजती है, उसी तरह धोखाधड़ी के काम हेमन्त (चालबाज और स्वार्थ-परायण धनिक वर्ग का प्रतिनिधि) तथा सदानन्द (भ्रष्टाचारी सरकारी अफसरों का प्रतिनिधि) के पारस्परिक सहयोग ही से होते हैं। इस दशा में सदानन्द का हृदय-परिवर्तन दिखा कर उसे छोड़ देना, उनकी राय से, उचित नहीं है। पर मैं अपने मित्र की राय से सहमत नहीं हूँ। मेरी राय यही है कि जो व्यक्ति सच्चे दिल से सही मार्ग का अवलम्बन करने को तैयार हों, उनके पुराने अपराधों की अवहेलना करना अधिक उचित तथा उपयोगी सिद्ध होगा। स्वाधीनता के एक वर्ष पूर्व जब भारत में अस्थायी (इन्टरेिम) राष्ट्रीय सरकार की स्थापना हुई थी, तब उसके सामने कितने ही अंग्रेज उच्च पदाधिकारियों के भ्रष्टाचार सम्बन्धी मामले आए थे। इसी तरह के एक अंग्रेज उच्च पदाधिकारी राष्ट्रीय सरकार की स्थापना होते ही यह देश छोड़ कर जा रहे थे। उस महकमे के मन्त्री का ख्याल था कि उनके बारे में जाँच-कमीशन बंठाया जाए। इस सम्बन्ध में जब महात्मा गांधी से राय मांगी गई तो उन्होंने खूब सोच-विचार कर यह उत्तर दिया कि भ्रष्टाचारी को सजा देने का तो मैं विरोधी नहीं हूँ, हमें यह भी भरसक प्रयत्न करना होगा कि देश में भ्रष्टाचार का उन्मूलन हो जाए, पर हमें गड़े मुँह उखाड़ने से बचना चाहिए। जो अधिकारी राष्ट्रीय सरकार से डर कर स्वयं अपना आसन खाली कर रहा है, उसे अपना आसन खाली करने दीजिए। अगर हम पुरानी बातों की छानबीन में ही लग गए, तो नव-निर्माण के काम की ओर ध्यान देने का हमें समय ही नहीं मिलेगा। इस नाटक में यही दृष्टिकोण स्वीकार किया गया है। हमें बदले की भावना से नहीं, अपितु हृदय-परिवर्तन करने की भावना से काम लेना है।

हमारे देश में नाटक को साहित्य का सबसे विशिष्ट अंग माना जाता रहा है। मेरी राय से आज की परिस्थितियों में नाटक का महत्त्व और भी अधिक है। एक ऐसे देश में, जहाँ की जनता का बहुमत साक्षर तक

नहीं हैं, नाटक शिक्षा का एक अत्यन्त श्रेष्ठ माध्यम सिद्ध हो सकता है। अच्छे नाटकों द्वारा हम देश की सांस्कृतिक और सामाजिक चेतना को जागृत कर सकते हैं।

संस्कृत नाटकों की पुष्ट परम्परा के रहते भी हिन्दी में नाटक-साहित्य कमजोर क्यों है, इसके कारण स्पष्ट हैं। जैसा कि ऊपर कहा जा चुका है, रंगमंच के बिना अच्छे नाटक लिख सकना अत्यन्त दुष्कर कार्य है। कुछ ही दिन हुए, हिन्दी नाटक साहित्य की दरिद्रता के कारणों के सम्बन्ध में हम लोग चर्चा कर रहे थे। भाई जैनेन्द्र जी ने कहा कि इसका एक मुख्य कारण यह है कि अभी तक नाटक हिन्दी की प्रतिभाओं को अपनी ओर आकृष्ट नहीं कर सका। मैंने उनसे कहा कि मैं आप की बात से सहमत नहीं हूँ। हिन्दी के वर्तमान रूप के प्रणेता भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र नाटककार थे (आश्चर्य तो इस बात का है कि वह एक अच्छे नाटककार थे, फिर भी हिन्दी में नाटक का विकास नहीं हो पाया), उसके बाद प्रसाद और प्रेमचन्द जैसी प्रतिभाओं ने नाटक लिखे। प्रसाद जी के नाटक पढ़ने में कितने ही अच्छे क्यों न हों, रंगमंच के लिए एकदम अनुपयुक्त हैं। प्रेमचन्द जैसी महान प्रतिभा भी नाटक के क्षेत्र में असफल रही। इन पिछले ३५ वर्षों में हिन्दी के कितने ही लब्ध-प्रतिष्ठ उपन्यासकारों और अत्यन्त श्रेष्ठ कवियों (श्री वृन्दावन लाल वर्मा, आचार्य चतुरसेन शास्त्री, श्री सुमित्रानन्दन पन्त आदि) ने नाटक लिखने का प्रयास भी किया। पर यह एक ऐसी दुरूह चट्टान सिद्ध हुआ कि इस पर (भारतेन्दु के एकमात्र अपवाद के साथ, वह भी अपने युग की दृष्टि से) किसी को सफलता नहीं मिली। मेरी राय से हिन्दी रंगमंच के अभाव में इस क्षेत्र में सफलता मिलना सम्भव ही नहीं था।

प्रश्न यह है कि इस दिशा में अब किया क्या जाए। स्पष्ट है कि सबसे पहली आवश्यकता रंगमंच की है। मेरी राय से हिन्दी क्षेत्र के प्रत्येक नगर में नाटक संस्थाओं तथा रंगमंचों की स्थापना होनी चाहिए। हिन्दी क्षेत्र के सभी विश्वविद्यालयों और उनसे सम्बद्ध कालेजों में भी हिन्दी नाटक संस्थाओं की स्थापना की जानी चाहिए। उनमें

परस्पर प्रतिस्पर्धा उत्पन्न की जानी चाहिए। जिस तरह क्रिकेट, हाकी और फुटबाल के टूर्नामेंट होते हैं, उसी तरह नाटकों के साम्मुख्यों का आयोजन होना चाहिए। रंगमंच की शिक्षा का प्रारम्भ स्कूल ही से हो जाना चाहिए। यह शिक्षा बालकों के मानसिक विकास के लिए भी अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होगी। नाटक का अभिनय एक सामूहिक कार्य (टीम वर्क) होता है। लिपि-संशोधन, रंगमंच की सज्जा, प्रकाश-व्यवस्था, पात्रों की सज्जा, विशेष प्रभावों का प्रबन्ध, अभिनय, निर्देशन, मंच-प्रबन्ध आदि कितने ही काम होते हैं, जिनकी शिक्षा अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होती है। अभी तक इस दिशा में जो थोड़ा-बहुत काम हो रहा है, उसे एक सुविचारित योजना के अनुसार बहुत बड़े पैमाने पर करने की आवश्यकता है।

प्रश्न उठेगा कि उक्त रंगमंचों और अभिनयों के लिए नाटक कहाँ से प्राप्त किए जाएँ। इस सम्बन्ध में मेरा उत्तर यह है कि हिन्दी में आज जितने रेडियो रूपक, एकांकी और पूरे नाटक विद्यमान हैं, उनमें से चुनाव कर उनके रंगमंचीय संस्करण तैयार करने का प्रयत्न किया जाए और यह कार्य भी जन-रंगशालाएँ तथा विश्वविद्यालयों की नाटक संस्थाएँ ही करें, क्योंकि यह एक बहुत उपयोगी शिक्षा सिद्ध होगी। इसके अतिरिक्त विश्व साहित्य के श्रेष्ठ नाटकों के हिन्दी संस्करण बल्कि हिन्दी रूप (adaptations) भी अधिक से अधिक संख्या में छपने चाहिए। विश्व-साहित्य में ऐसे नाटक बहुत-से हैं, जो विश्वजनीन हैं, जो थोड़े बहुत परिवर्तन के साथ संसार के किसी भी देश में और किसी भी भाषा में खेले जाकर विदेशी प्रतीत नहीं होंगे। हिन्दी रंगमंच पर भी उन नाटकों के हिन्दी रूपान्तर पूरी सफलता के साथ खेले जा सकेंगे।

१५ जून, १९५९ }
४, पटौदी हाउस }
नई दिल्ली }

चन्द्रगुप्त विद्यालंकार

भूमिका

(प्रथम संस्करण से)

पिछले दिनों परिस्थितियों ने जैसे एक षड्यन्त्र-सा कर लिया था कि मुझे यह नाटक लिखने ही न देंगी। एक नहीं, एक साथ चार बाधाएँ उपस्थित हो गई थीं। मुझे प्रसन्नता है कि परिस्थितियों का वह षड्यन्त्र सफल नहीं हो पाया, और दस दिनों में मैं यह नाटक सम्पूर्ण कर सका।

यह नाटक रंगमंच के लिए लिखा गया है। रंगमंच सम्बन्धी उतने ही निर्देश इस नाटक में दिए गए हैं, जितने आवश्यक थे और जिनसे नाटक की पठनीयता पर प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ता। किसी नाटक का अभिनय करते हुए निर्देशक को अभिनय की प्रत्येक क्रिया के सम्बन्ध में अपने निर्देश विस्तार से अंकित करने ही होते हैं। इसी से एक ही नाटक विभिन्न निर्देशकों द्वारा निर्देशित होकर एक दूसरे की कार्बन कापी नहीं बनने पाता।

रंगमंच के लिए लिखित यह मेरा तीसरा नाटक है। सबसे पूर्व मैंने 'अशोक' और 'रेवा' नाम से जो नाटक लिखे थे, वे रंगमंच के लिए नहीं थे। रंगमंच सम्बन्धी अपने यत्किंचित् व्यावहारिक ज्ञान और अनुभव के लिए मैं पंजाब ड्रामा लीग के मुख्य निर्देशक प्रिन्सिपल श्री डी० जी० सोंधी तथा लिटिल थियेटर ग्रुप, नई दिल्ली के कला-निर्देशक श्री आई० एल० दास का कृतज्ञ हूँ। श्री सोंधी के निर्देशन में ही मेरा पहला नाटक पूरी तैयारी के साथ अभिनीत हुआ था।

इस नाटक का उद्देश्य स्वतन्त्र भारत से भ्रष्टाचार का उन्मूलन तथा

देश में गहरी भावनात्मक एकता का प्रसार है। जिस श्रेणी के जीवन का चित्रण इस नाटक में किया गया है, उस जीवन में टेलीफ़ोन का महत्त्व बहुत अधिक है। मैंने इस स्थिति से 'न्याय की रात' में पूरा लाभ उठाने का प्रयत्न किया है। मेरी यह धारणा है कि रंगमंच के लिए लिखे जाने वाले नाटकों की भाषा बहुत सरल और बोलचाल की होनी चाहिए। इस नाटक में अपनी उक्त धारणा पर मेरा ध्यान निरन्तर रहा है।

४, पटौदी हाउस
नई दिल्ली।

।
}

—चन्द्रगुप्त विद्यालंकार

३ मई, १९५८,
बुद्ध पूर्णिमा

न्याय की रात

इस नाटक के सभी पात्र और सभी घटनाएँ
कल्पनात्मक हैं ।

—लेखक

नाटक के पात्र

(रंगमंच पर आने के क्रम से)

मुख्य :

हेमन्त—प्रचलित मानव कमजोरियों से अधिकतम लाभ उठाने वाला एक चलता-पुर्जा व्यक्ति ।

मुन्शी देवराज—हेमन्त का अत्यन्त विश्वस्त बूजुर्ग सहकारी ।

राजीव—एक अत्यन्त ईमानदार भारतीय नागरिक, हेमन्त का बहनोई ।

उमा—हेमन्त की बहन और राजीव की पत्नी ।

कमला—एक सुशिक्षिता शरणार्थी लड़की ।

सदानन्द—एक बहुत ऊँचा सरकारी अफसर ।

जुगलकिशोर—एक ईमानदार सुशिक्षित युवक ।

गौण :

हेमन्त का चपरासी ।

सदानन्द का चपरासी ।

लेखक की कुछ रचनाएँ

नाटक :

१. देव और मानव
२. रेवा
३. अशोक
४. न्याय की रात
५. हिंदुस्तान जाकर कहना (एकांकी-संग्रह)

कहानी-संग्रह :

१. तीन दिन
२. अमावस
३. भय का राज्य
४. चन्द्रकला
५. वापसी

अन्य :

१. आजकल
२. मानव जाति का संघर्ष और प्रगति
३. संसार की सर्वश्रेष्ठ कहानियाँ
४. हिंदी के नए उपन्यास

प्रथम अंक

स्थान—हेमन्तकुमार की बैठक

समय—सांझ

(बैठक पाश्चात्य ढंग से सजी है और दो हिस्सों में बँटी-सी दिखाई देती है। यही बैठक हेमन्तकुमार के दफ्तर का भी काम देती है। दाहिनी ओर एक बड़ी मेज़ रखी है, जिस पर फाइलें, रैक आदि ठीक ढंग से सजाए गए हैं। इस मेज़ के एक किनारे बैठक की ओर मुंह किए, घूमने वाली एक सुन्दर कुर्सी पर हेमन्त बैठा है। हेमन्त की कुर्सी के पास ही एक छोटी-सी तिपाई पर काले रंग का टेलीफोन रखा है। मेज़ के साथ दूसरी तरफ सिर्फ एक ही कुर्सी पड़ी है जो मिलने वालों के काम आती होगी। हेमन्त की मेज़ के बाईं ओर एक छोटी टेबल रखी है, जिसके पास हेमन्त का निजी सहायक और मुन्शी देवराज बैठा है। इसी तिपाई पर हरे रंग का एक टेलीफोन पड़ा है। बैठक के बाईं ओर दीवार के पास एक सोफ़ा पड़ा है, उसके सामने शीशे की एक छोटी तिपाई को घेरती हुई दो सोफ़ा कुर्सियां रखी हैं। बाईं ओर की दीवार में एक खिड़की है, जो बन्द है और उस पर परदा पड़ा हुआ है। हेमन्तकुमार की आयु ४० के लगभग है, चेहरा भरा हुआ और उस पर तराशी हुई मूँछें। उसने तंग पाजामे पर बन्द गले का कोकटी रंग का कोट पहना हुआ है। मुन्शी देवराज की उम्र ५० से ऊपर है। बड़ी-बड़ी और संभाल कर रखी हुई मूँछें हैं, आंखों पर चांदी का चश्मा है, सिर पर बड़ी पगड़ी, जिसमें से सफ़ेद-काले बाल बाहर झाँक रहे हैं। शरीर पतला और लम्बा है। पाजामे के ऊपर खुले कुर्ते पर वह काली बास्केट पहने हुए है। जब परदा उठता है, तो हेमन्त कोई फाइल देखता हुआ दिखाई

देता है और मुन्शी अपनी मूँछें सहलाता हुआ। परदा उठते ही दीवार की घड़ी साढ़े पाँच की एक घंटा बजाती है।)

हेमन्त

साढ़े पाँच बज गए मुन्शी जी !

मुन्शी

बज जाने दीजिए साहब, हम लोग तो पूरी तरह तैयार ही हैं।

हेमन्त

तुम कभी राजीव से मिले हो ?

मुन्शी

नहीं साहब।

हेमन्त

बड़ा चलता पुर्जा आदमी है।

मुन्शी

आपका बहनोई कोई ऐसा-वैसा आदमी थोड़े ही होगा।

हेमन्त

उस पर रोब डाल सकना कोई आसान काम नहीं होगा मुन्शीजी।

मुन्शी

बड़े-बड़े उस्ताद आपका लोहा मान गए साहब। फिर यह तो घर के आदमी हैं !

हेमन्त

मैं तो आदमी को देखकर ही उसकी वास्तविकता पहचान लेता हूँ। पर राजीव को देखकर तो क्या, अपना बहनोई बना कर भी मैं पहचान नहीं पाया।

मुन्शी

राजीव जी को आप बचपन से जानते हैं न ?

हेमन्त

हाँ, वह और मैं एक ही कालेज में पढ़ते थे। वह मुझे से दो ही साल छोटा है। अपनी-अपनी श्रेणी में हम दोनों की धाक थी। राजीव की तो इसलिए कि वह सदा अपनी श्रेणी में प्रथम आता था और मेरी इस लिए कि मेरी करतूतें ही कुछ ऐसी थीं। मेरे कालेज छोड़ने के ३ वर्ष बाद एम० ए० में प्रथम श्रेणी और प्रथम स्थान प्राप्त कर वह आई० सी० एस० की प्रतियोगिता में बंठा और पहले ही साल सफल भी हो गया।

मुन्शी

(आश्चर्य से) पहले ही साल ?

हेमन्त

हाँ, पहले ही साल। आई० सी० एस० में सम्मिलित होकर वह बिहार के एक ज़िले में कलेक्टर के पद पर नियुक्त हुआ। भारत जब स्वाधीन हुआ, तब वह एक राज्य में सिविल सप्लाइज का चीफ़ कंट्रोलर था। पर भारत की स्वाधीनता के एक वर्ष के भीतर ही वह त्यागपत्र देकर पृथक् हो गया।

मुन्शी

(आश्चर्य से) वह क्यों ?

हेमन्त

इस बात का उत्तर मुझे मिल जाता तो मैं राजीव के व्यवितत्व को पहचान न लेता ? उन दिनों अंग्रेज सिविलियन भारत छोड़कर इंग्लैण्ड वापस जा रहे थे, कुछ पाकिस्तान चले गए थे, इससे भारतीय सिविलियनों को उन्नति का बहुत अच्छा अवसर मिल गया था। वह यह भी जानता था कि देश को उसकी जरूरत है। फिर भी उसने त्यागपत्र दे दिया।

मुन्शी

यह तो अच्छी-खासी पहली बन गई।

हेमन्त

यही तो बात है। राजीव बहुत गहरा आदमी है। पर मैंने भी निश्चय कर लिया है कि उसकी गहराई की थाह पाकर ही रहूँगा। अच्छा, सभी कुछ तैयार है न मुन्दी जी ? मुझे मनुष्य की गन्ध आ रही है।

मुन्शी

मैं पूरी तरह तैयार हूँ। किसी बात में कहीं कोई गलती न होगी।

(दरवाजे पर दस्तक मुनाई देती है)

हेमन्त

भीतर आ जाइए।

(चपरासी दरवाजा खोलता है। मुन्शी दौड़कर दरवाजे के पास पहुँचता है। दरवाजा खुलते ही राजीव और उमा भीतर प्रवेश करते हैं। राजीव की आयु ४० वर्ष से कुछ ही कम है। इकहरा शरीर। तंग पाजामा और उस पर सफ़ेद शेरवानी पहने हुए। नंगा सिर। उमा हल्के नीले रंग की साड़ी और उसी रंग का चुस्त ब्लाउज़ पहने हैं। वेशभूषा आधुनिक। राजीव के भीतर आने पर हेमन्त राजीव से हाथ मिलाकर उमा की पीठ थपथपाता है, उसके बाद वे तीनों सोफ़ा सेंट पर जा बैठते हैं। मुन्शी अपनी टेबल की ओर लौट आता है। राजीव वाई ओर रखी सोफ़ा कुर्मी पर बैठा है, उमा सामने वाले सोफ़े पर राजीव की ओर, और हेमन्त सोफ़े ही पर उमा के निकट।)

राजीव

हमें कुछ देर हो गई। परन्तु—

हेमन्त

(बीच ही में) नहीं ५, ७ मिनट की देर हमारे देश में देर नहीं मानी जाती। बस, हम लोग आपकी प्रतीक्षा में ही थे।

राजीव

मेरी आदत देर से आने की नहीं है। मगर बात यह हुई कि—

हेमन्त

(बीच में ही बात काट कर) अजी जाने भी दीजिए। जब मुझे इस बात की शिकायत ही नहीं है—

उमा

(बीच ही में) मुझे तो यह डर था भाई साहब, कि हमें बुलाकर आप स्वयं कहीं और चाय पीने न चले गए हों।

हेमन्त

यह भी कभी हो सकता है ?

उमा

हो सकता क्या, अक्सर होता है !

हेमन्त

तुम्हारी बात दूसरी है उमा। पर यह तो—

उमा

(बीच ही में) हाँ, बहनोई तो बहन से बढ़कर होता है न।

हेमन्त

(राजीव में) आप क्या पीएँगे राजीव भाई ?

राजीव

उमा चाय पसन्द करती है और मैं काफ़ी।

हेमन्त

यहाँ दोनों ही का प्रबन्ध है। पर इतने बरसों में न आप उमा को काफ़ी का कायल कर सके और न उमा आपको चाय का कायल।

उमा

हम दोनों व्यक्तिगत स्वाधीनता के कायल हैं।

हेमन्त

अब के अभी से इतनी तेज़ गरमी पड़ने लगी। आप लोग किसी पहाड़ पर जा रहे हैं क्या ?

राजीव

मैं मजदूर आदमी हूँ। पहाड़ पर जाने की सुविधा मुझे कहाँ है ?

हेमन्त

आप-सा मजदूर कौन न बनना चाहेगा। ५० लाख का कारखाना आप लगा रहे हैं। पर हैं मजदूर ही !

उमा

(हेमन्त से) भाई साहब, इनके काम की बात छोड़िए। आप तो यह बताइए कि आपके कामकाज का क्या हालचाल है ?

हेमन्त

आजकल तो दम मारने की भी फुरसत नहीं है।

राजीव

इससे बढ़कर खुशकिस्मती और क्या हो सकती है ?

(इसी समय हरे रंग के टेलीफोन की घंटी बजती है। हेमन्त मुन्शी की ओर देखता है, जो शीघ्रता से झुककर टेलीफोन का रिमीवर उठा लेता है।)

मुन्शी

हैलो ! चार, पाँच, दो, सात, चार।...जी हैं।...जी, मैं उनका पी० ए० बोल रहा हूँ।...जी, अभी बुलात। हूँ।...कौन साहब बोल रहे हैं ?... जी अभी !

(हेमन्त से) हज़ूर, व्यवसाय मन्त्री साहब का टेलीफोन है।

हेमन्त

(राजीव से) क्षमा कीजिए। मैं अभी आया।

(उठ कर टेलीफोन के पास जाता है और रिमीवर हाथ में लेकर बात करने लगता है।)

जी, मैं हेमन्त बोल रहा हूँ...नमस्कार।...बहुत अच्छा।...जी किस व्यवसाय के सम्बन्ध में ?...अच्छा फोटोग्राफी की फ़िल्में बनाने के

सम्बन्ध में ?...जी हाँ ! मैं पूरी सामग्री पढ़ गया हूँ ।...बहुत ठीक । आज रात मैं अपनी रिपोर्ट लिख लूँगा । कल तक वह अवश्य आपको मिल जाएगी ।...जी आप क्यों कष्ट करेंगे, मैं स्वयं हाज़िर हो जाऊँगा । मुझे खुद आपसे कुछ बातें करनी हैं ।...आपकी कृपा है ।...जी काम तो रहता ही है... बहुत अच्छा !...जी नमस्कार ।

(रिसीवर टेलीफोन पर ग्वकर मुन्शी से)

आज शायद सारी रात आपको काम करना होगा मुन्शी जी !

मुन्शी

मुझे यों भी रात को नींद नहीं आती जी ?

(सब लोग मुस्कराते हैं ।)

(इसी समय तिपाइयों पर चाय, काफ़ी लगा दी जाती है और कुछ खाने की चीज़ें भी । उमा एक प्याले में काफ़ी उँडेलते हुए)

उमा

भाई साहब, आप मेरा साथ देंगे या अपने जीजा जी का ?

हेमन्त

मैं पीऊँगा तो चाय हो, पर साथ दूँगा जीजा जी का ।

राजीव

बहुत खूब !

हेमन्त

(अपनी जगह बैठकर) आपके मशीन टूल्स के नये कारखाने का क्या हाल है ?

राजीव

नए कारखाने की दिक्कतें तो आप जानते ही हैं भाई साहब ! सबसे बड़ी दिक्कत तो यह है कि अच्छे कार्यकर्ता आसानी से नहीं मिलते ।

(हरे टेलीफोन को घंटी बजती है । हेमन्त उधर कोई ध्यान नहीं देता । पर मुन्शी जी उठकर वहाँ पहुँचते हैं और रिसीवर उठाते हैं ।)

मन्शी

हैलो ! चार-पाँच-दो-सात-चार !...जी हाँ, यही हूँ । पर अभी व्यस्त हूँ ।...बुला दूँ ?...आप कौन साहब बोल रहे हैं ?... जी अभी बुलाता हूँ ।

(हेमन्त से) रिज़र्व बैंक के गवर्नर साहब का टेलीफ़ोन है हज़ूर ! कहते हैं कोई बहुत ज़रूरी काम है ।

(हेमन्त आराम से उठता है और धीरे-धीरे टेलीफ़ोन के पाम जाता है । जाते-जाते राजीव से)

हेमन्त

माफ़ कीजिए, मैं इन्हें टालकर अभी आया ।

(टेलीफ़ोन के पाम पहुँच कर और रिमीवर कान से लगा कर)

नमस्कार !...जी आप कब तशरीफ़ लाए ?...आज सुबह के हवाई जहाज़ से ?...अब आपकी तबीयत तो ठीक है न ?...आपका तार मिल गया था...बम्बई आ नहीं सका ।...जी माफ़ कीजिए, कल तो नहीं । हाँ, परसों ज़रूर...समय की कोई बात नहीं..यों साँझ ठीक रहेगी ।...बहुत ठीक ! बहुत ठीक,...अच्छा नमस्कार ।

(रिमीवर टेलीफ़ोन पर रखकर वापस आता है और नज़दीक ही खड़ा हो जाता है । राजीव से)

क्षमा कीजिएगा राजीव भाई । हमारी ज़िन्दगी भी कोई ज़िन्दगी है !

राजीव

भाई साहब, आजकल आप क्या काम कर रहे हैं ?

हेमन्त

आखिर न मैं किसी कारखाने का मालिक हूँ और न कोई सरकारी अफ़सर ।

उमा

(चाय का प्याला लिये हेमन्त के पास आकर) पर भाई साहब, आपने

न कभी कारखानों के मालिकों को कुछ समझा है, न कभी सरकारी अफसरों को ही। पिताजी कहा करते थे कि हेमन्त सारी दुनिया से न्यारे हैं।

गजीव

तुम्हारे भाई साहब में असाधारण प्रतिभा है। और आज से नहीं, तभी से, जब यह कालेज में पढ़ा करते थे।

उमा

पिछले कितने ही बरसों से भाई साहब इम्पीरियल होटल में एक सबसे महंगा सैट लेकर रहते थे। नए से नए माडल की शानदार बड़ी कारें दिल्ली में सबसे पहले भाई साहब के पास ही देखने में आती थीं। पर न जाने किस कारण भाई साहब ने इम्पीरियल होटल छोड़ कर गुजारे लायक यह छोटा-सा बंगला ले लिया। बड़ी कार छोड़ कर 'हिन्दोस्तान-१४' पर सफ़र करने लगे और कीमती सूट छोड़कर चूड़ीदार पाजामा और बन्द गले का कोट पहनने लगे।

राजीव

(हेमन्त से) पर भाई साहब, यह तो आपने बताया ही नहीं कि आजकल आप क्या काम कर रहे हैं ?

हेमन्त

(मुस्करा कर) मसल मशहूर है न 'काजी जी दुबले क्यों, शहर के अंदेशे से !' सो सारी दुनिया के काम मेरे काम हैं। नगर की कितनी ही संस्थाएँ हर समय सलाह मांगती रहती हैं। जिस किसी का कोई काम अटकता है, वह दौड़ा हुआ यहाँ पहुँचता है। क्यों मुन्दीजी !

मुन्शी

अजी जनाब, लोगों ने इस दफ्तर को जैसे कोई दरगाह समझ लिया है, जहाँ जो माँगो मिल सकता है। किसी को नौकरी की तलाश है तो हमारे साहब के पास दौड़ा आएगा, किसी से कोई अपराध हो गया है तो वह भी यहीं दिखाई देगा, किसी को नोटिस मिल गया है तो वह भी सीधा

यहाँ पहुँचेगा। यहाँ तक कि बड़े-बड़े अफसर, बड़े-बड़े सेक्रेटरी, बड़े-बड़े मिनिस्टर—

हेमन्त

अधिक बहकिए नहीं मुन्शीजी। मैं तो जनता का अदना-सा सेवक हूँ। मेरी बिसात ही क्या है ?

राजीव

यह सब तो आपकी समाज सेवा हुई। मैं पूछ रहा था कि आपका पेशा क्या है ? ज़रा तकल्लुफ से कहूँ, तो पूछूँगा कि आपका 'शुगल' क्या है ?

उमा

भाई साहब ने जब से काम शुरू किया, मेरे लिए सदा यह एक रहस्य रहा है कि उनका काम क्या है ? मगर यह भी सच है कि वह सदा बहुत व्यस्त रहते हैं।

हेमन्त

यह कोई इतनी रहस्यपूर्ण बात नहीं है राजीव भाई। आप जानते ही हैं कि मैं कितनी ही कम्पनियों का डाइरेक्टर हूँ।

राजीव

तुम्हारी सिगरेट की उस फैक्टरी के बारे में वह इतना बवण्डर क्या खड़ा हुआ है ? अच्छा खासा स्कैण्डल बन गया है। असल में बात क्या है ?

हेमन्त

उस बवण्डर की सम्भावना ही से तो डर कर वे लोग मुझे अपना मने-जिंग डाइरेक्टर बनाने पर तुल गए थे। आखिर क्या करता ? मुझे इतना मज़बूर किया गया कि मुझे स्वीकार करना ही पड़ा। कोयले की दलाली में हाथ काले होते ही हैं। सो मेरा नाम भी बीच में लपेट लिया गया। (कुछ उद्विग्न-सा होकर उठ खड़ा होता है) आप श्री शौरी कृष्णन रैड्डी को तो जानते ही होंगे ?

राजीव

वह मेरे मित्र है। पर आपको उनसे क्या काम है ?

हेमन्त

बात यह है कि...

(हरे टेलीफोन की घंटी फिर से बजती है। अब के हेमन्त तेजी से टेलीफोन की ओर बढ़ता है। राजीव से 'माफ़ कीजिए' कहकर रिसीवर उठा लेता है।)

हेमन्तकुमार बोल रहा हूँ।...नमस्कार।...जी माफ़ कीजिए, मैं उद्घाटन समारोह में नहीं आ सकूंगा।...जी, आप मुझे ही यह सम्मान देना चाहते हैं ?...नहीं, नहीं। माफ़ कीजिए, मैं नहीं आ सकूंगा। मुझे इन दिनों बहुत अधिक काम है।...मुझे खेद है।...नमस्कार।

(रिसीवर टेलीफोन पर रखकर शीघ्रता से वापस लौटता है। राजीव से)

मैंने कहा न राजीव भाई, यह भी कोई जिन्दगी है ! इन्हीं शंशदों से बचने के लिए तो मैं पार्लियामेंट में नहीं गया।

उमा

कौन था यह ?

हेमन्त

दीनबन्धु कालेज के प्रिन्सिपल साहब थे। चाहते थे कि उनके नए छात्रावास का उद्घाटन मेरे हाथों से हो।

राजीव

आप तो बहुत महत्त्वपूर्ण व्यक्ति बन गए हैं भाई साहब।

हेमन्त

(विनय से) जी, आपकी कृपा है।

मुन्शी

(खड़े होकर) जी श्री शौरी कृष्णन रेंडु ! जी--

हेमन्त

हाँ, राजीव भाई, श्री शौरी कृष्णन् रेंडु आपके मित्र हैं न ?

राजीव

मैंने कहा तो था। क्यों बात क्या है ?

हेमन्त

बात कोई खास तो नहीं। आपने सिगरेट की उस फॅक्टरी का जिक्र किया था न ? उस मामले की प्रारम्भिक जाँच-पड़ताल वही रेंडु साहब कर रहे हैं। मुझे तो डाइरेक्टरों ने जबरदस्ती मैनेजिंग डाइरेक्टर बना दिया था। अब उन्हें डर है कि रेंडु साहब यह मामला किसी जाँच कमीशन को दे रहे हैं।

राजीव

माफ़ कीजिए भाई साहब। इस बारे में मैं आपकी कोई सहायता न कर सकूँगा। मेरी राय तो यह है कि यदि उस मामले में आपका कोई उत्तरदायित्व नहीं है, तो आप स्वयं रेंडु साहब से मिलें और उनके सामने सब बात स्पष्ट कर दें। वह बहुत खरे आदमी है। मेरी राय तो यहाँ तक है कि आप सिगरेट की उस कम्पनी से एकदम पृथक् हो जाएँ और उस मामले के बारे में जो कुछ आपको ज्ञात है, वह सब आप रेंडु साहब को बता दें।

हेमन्त

(ऊँची हँसी के साथ) आप तो अच्छा खासा लेंक्चर दे गए राजीव भाई। मेरा तो ख्याल था कि आपको भी उस सिगरेट कम्पनी का एक डाइरेक्टर बना लिया जाए। खैर, आज जाने दीजिए। फिर कभी इस बारे में बातचीत करूँगा। पर यह बात आप सदा ध्यान में रखिए राजीव भाई, कि मेरा कोई काम कानून की सीमा के बाहर नहीं होता !

(हरे टेलीफोन की घंटी फिर से बजती है और मुन्शी हाथ बढ़ाकर रिसीवर उठा लेता है।)

मुन्शी

हैलो ४५२७४ ! ...जी हाँ—हैं !...मैं उनका सेक्रेटरी बोल रहा हूँ ।
...जी प्रधान मन्त्री निवास से ? (उठकर खड़ा हो जाना है) अभी बुलाता
हूँ हज़ूर । अभी लीजिए ।

(घबराए हुए स्वर में हेमन्त से) प्रधान मन्त्री निवास से टेलीफोन
आया है । प्रधान मन्त्री के मुख्य सहायक साहब बोल रहे हैं !

(हेमन्त तेज़ी से हरे टेलीफोन के पाम पहुँचता है । रिसीवर हाथ में
लेकर)

हेमन्त

जी मैं हेमन्त बोल रहा हूँ । नमस्कार !...आपकी कृपा है !...प्रधान
मन्त्री साहब ने कल सुबह मुझे बुलाया है ? ...आठ बजे ? ज़रूर ज़रूर !
मैं ज़रूर हाज़िर हो जाऊँगा ।...जी मेरा उनसे सादर नमस्कार कह दीजिएगा ।
...धन्यवाद...आपकी कृपा है !...जी नमस्कार !

(रिसीवर टेलीफोन पर रखकर बड़े प्रसन्न मन में मोफ़े की ओर
बढ़ता है । पर पाता है कि राजीव और उमा अपनी-अपनी जगह खड़े हो
गए हैं और जोर-जोर से हँस रहे हैं । हेमन्त घबराकर उनकी ओर देखने
लगता है । मुन्शी जी और भी अधिक घबरा जाते हैं ।)

हेमन्त

यह भी क्या मज़ाक हुआ उमा ?

(दोनों की हँसी बन्द नहीं होती, बल्कि बढ़ जाती है ।)

हेमन्त

(राजीव से) आख़िर बात क्या है राजीव भाई !

राजीव

बात इतनी ही है कि आखिर आप बड़ी आसानी से पकड़ में आ गए। वह भी खुद-ब-खुद !

हेमन्त

पकड़ ! पकड़ कैसी ?

राजीव

अगर शुरू ही में आपने हमारे देर से पहुँचने का कारण सुन लिया होता तो यह नौबत ही न आती। पर तब आपने मुझे अपनी बात पूरी भी न करने दी थी। अब सोचता हूँ, वह भी अच्छा ही हुआ।

हेमन्त

यह आप क्या पहेलियाँ बुझवा रहे हैं राजीव भाई ?

(उमा अब भी उमी तरह हँसे जा रही है।)

राजीव

बात इतनी ही है कि प्रधान मन्त्री तो अपने हवाई जहाज से आज ५ बजे बम्बई चले गए और उनके मुख्य सहायक भी उनके साथ थे।

हेमन्त

(घबरा कर) एकदम झूठ ! आपको गलत खबर मिली है ! यह खबर क्या आपने “ईर्वाण काल” में पढ़ी है ? ये अखबार तो सदा चण्डू-खाने की—

राजीव

जी पढ़ा कहीं नहीं है, बल्कि हम दोनों ने अपनी आँखों से उन्हें दिल्ली से जाते हुए देखा है। बात यह हुई कि पीने पाँच बजे अपने एक मित्र को विदा देने हम दोनों पालम हवाई अड्डे पर गए थे। उन्हें छोड़कर हम चले ही थे कि वहाँ प्रधान मन्त्री और उनके मुख्य सहायक से मेरी भेंट हो गई।

ठीक ५ बजे उनका जहाज चला गया था। असल में हमारे यहाँ आने में विलम्ब हो जाने का कारण भी यही था।

(हेमन्त चुपचाप खड़े रहकर अपने मुन्गी की ओर आग्नेय दृष्टि से देखता है, जो अपनी जगह थर-थर काँप रहा है।)

उमा

(हसती हुई) अपने घर वालों पर रोब गालिब करने से आपको क्या मिलेगा भाई साहब ?

(एकाएक हेमन्त भी उम हँसी में सहयोग देता है।)

हेमन्त

यह दुनिया एक नाटक ही तो है। मैं अपने पार्ट में ज़रा ओवर एक्टिंग कर गया। बस, मेरा अपराध इतना ही है।

उमा

जीवन को अगर आप सचमुच एक नाटक ही समझते, तो यह नौबत ही क्यों आती भाई साहब ?

राजीव

मेरा सिद्धान्त इस बारे में एकदम दूसरा है, भाई साहब। जीवन को मैं एक बड़ी और महत्वपूर्ण वास्तविकता समझता हूँ। मगर जो कुछ बीत चुका होता है, उसके बारे में यही समझता हूँ कि वह सब एक अच्छा-खासा नाटक था।

हेमन्त

बहुत बड़ी बात कह दी आपने। पर यह कितनी कठिन बात है।

उमा

(हेमन्त से) पर भाई साहब ! आप तो शुरू ही से कठिन राहों के पुजारी रहे हैं।

राजीव

(उमा से) चलो, जाने दो इन बातों को। तुम्हारे भाई साहब आजकल बहुत व्यस्त हैं, इसलिए हमें अब इनसे विदा लेनी चाहिए।

(उमा एकाएक गम्भीर हो जाती है। राजीव की बात का जवाब न देकर वह हेमन्त के निकट चली जाती है और कहती है।)

उमा

मेरी ओर देखिए भाई साहब !

(हेमन्त उमा से आँख मिलाए बिना कहता है।)

हेमन्त

क्या बात है, उमा ?

उमा

पिता जी की मृत्यु शय्या पर आपने उन्हें जो वचन दिया था, वह याद है न ?

हेमन्त

यह सब तो एक मजाक था उमा ! बस, तुम तो हर बात को गम्भीर बना देती हो !

राजीव

आओ उमा, तुम्हारे भाई साहब का समय बहुत कीमती है। हम लोग चलें।

(नमस्कार कर राजीव और उमा बाहर चले जाते हैं। हेमन्त दरवाजे तक उन्हें विदाई देने जाता है। उमा और राजीव के चले जाने पर वह दरवाजा ठीक से बन्द करता है और क्षणभर चुपचाप उसी जगह खड़े रहता है। उसके बाद बाहर से कार चलने की आवाज़ आते ही वह गरज उठता है।)

हेमन्त

तुम कितने बड़े अहमक हो मुन्शी जी !

मुन्शी

जी, मैं आपका बच्चा हूँ !

हेमन्त

क्या कहा था तुमने शुरू में—“हम लोग पूरी तरह तैयार हैं !” यह थी तुम्हारी पूरी तैयारी ?

(दूरे टेलीफोन के पाम पहुँचना है और क्रोध से उसे एक झटका देता है। टेलीफोन तार ममेन नीचे जा गिरता है। हेमन्त और भी झल्ला उठता है।)

यह थी तुम्हारी पूरी तैयारी ? यदि कहीं राजीव टेलीफोन करने यहाँ आ जाता और ब्रैकेट के नीचे की घड़ी उसे दिखाई दे जाती तो क्या होता ?

मुन्शी

वही, जो अब घण्टी देखे बिना ही हो गया है !

हेमन्त

हम और तुम बुरी तरह फ़ेल हो गए मुन्शी जी !

मुन्शी

अजी जनाब, अपने को फ़ेल मानने वाले कोई और लोग होंगे। यह तो ज़िन्दगी है। ज़िन्दगी में ऊँच नीच तो आता ही रहता है।

(इसी समय दरवाज़े पर दस्तक मुनाई देती है। हेमन्त शीघ्रता से अपनी मेज़ के पाम लौट आता है और मुन्शी टेलीफोन उठाकर ब्रैकेट पर रखता है।)

हेमन्त

(गम्भीर स्वर से) भीतर आओ।

(चपरासी दरवाज़ा खोलकर भीतर आता है और सलाम बजाकर खड़ा हो जाता है।)

हेमन्त

क्या बात है ?

चपरासी

एक बाई आवत रही हजूर ।

हेमन्त

बाई ! कैसी बाई ?

चपरासी

फंसन-बैसन तो नाँय । मुल देख लेई हजूर । हुकुम होई तो भीतर लें आवें ।

हेमन्त

ले आओ । मगर एक मिनट ठहरो । तुम अभी बाहर जाकर ठहरो ।

चपरासी

जो हुकुम हुजर ।

(बाहर चला जाता है ।)

हेमन्त

मुन्शी जी !

मुन्शी

जी साहब !

हेमन्त

सदानन्द साहब की फ़रमाइश याद है ?

मुन्शी

खब याद है साहब ।

हेमन्त

जरा बाहर जाकर देखो कि लड़की हमारे काम की है या नहीं । यदि

काम की हो तो उसे भीतर ले जाओ। और काम की न हो तो उसे वहीं से टरका दो।

मुन्शी

जो हुक्म साहब।

(मुन्शीजी बाहर जाते हैं। हेमन्त खड़े होकर अपने बाल ठीक करता है। क्षण भर बाद मुन्शी भीतर आता है और हेमन्त के बहुत निकट आकर धीरे से कहता है।)

मुन्शी

बहुत चोखा माल है साहब। यह सदानन्द साहब तो बहुत खुशकिस्मत मालूम होता है।

हेमन्त

बहुत ठीक। अपनी जगह जाकर बैठिए। (ऊँचे स्वर से) चपरासी !

(चपरासी भीतर आता है।)

चपरासी

हुक्म साहब !

हेमन्त

बाई के लिए दरवाजा खोलो।

(चपरासी दरवाजा खोलता है और सादी पर स्वच्छ पोशाक में एक सुन्दर युवती का प्रवेश। झिझकते हुए वह हेमन्त के पास पहुँचती है और उसे प्रणाम कर मेज़ के सामने खड़ी हो जाती है।)

हेमन्त

कहिए, मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूँ ?

युवती

त्रिपाठी जी ने मुझे आपसे मिलने को कहा था।

हेमन्त

त्रिपाठी कौन ? (साथ ही साथ स्वयं) हरिदास त्रिपाठी ?

युवती

जी उन्हीं ने । त्रिपाठीजी ने यह पत्र भी दिया है ।

(युवती के हाथ से एक लिफाफा लेकर हेमन्त उसे खोलता है और शीघ्रता से पढ़ जाता है ।)

हेमन्त

इस कुर्सी पर बैठ जाइए ।

(युवती सामने की कुर्मी पर बैठ जाती है ।)

तो आपका नाम कमला है ?

कमला

जी हाँ ।

हेमन्त

अच्छा कमला जी, आप किस तरह का काम चाहती हैं ?

कमला

त्रिपाठीजी ने इस बारे में कुछ नहीं लिखा ?

हेमन्त

त्रिपाठीजी की बात जाने दीजिए । आप स्वयं बताइए कि आप क्या काम करना पसन्द करेंगी ?

कमला

(घबराहट भरे स्वर में) जी, त्रिपाठीजी ने कहा था कि आप मुझे कोई अच्छी सरकारी नौकरी दिलवा सकेंगे ।

हेमन्त

फिर वही त्रिपाठी ! त्रिपाठीजी से आपका परिचय किस प्रकार हुआ ?

कमला

(और भी अधिक धवरा कर) मैं त्रिपाठीजी को अधिक नहीं जानती । मेरी मासोजी उन्हें अच्छी तरह जानती हैं । उन्होंने यह परिचय पत्र लेकर दिया है ।

हेमन्त

आपके माता-पिता यह जानते हैं कि आप नौकरी की तलाश कर रही हैं ?

कमला

(उदाम स्वर में) मेरे पिता और माता दोनों का स्वर्गवास हो चुका है ।

हेमन्त

मुझे आपसे बहुत सहानुभूति है । माता-पिता दोनों का ही देहान्त हो गया ? कब ?

कमला

मैं जब सिर्फ १३ वर्ष की थी । पंजाब में मेरे घर पर ही मेरी आंखों के सामने पहले मेरे पिताजी और उसके बाद मेरी माताजी की हत्या की गई ! उस सबकी याद करते भी मैं कांप उठती हूँ । आप कृपा कर वह सब मुझसे न पूछिए । मुझे कोई काम दिला सकें तो आपकी बड़ी मेहरबानी होगी ।

हेमन्त

आप बेफ़िक्र रहें, आपको काम जरूर मिलेगा । एम० ए० आपने किस विषय में और किस श्रेणी में पास किया है ?

कमला

इतिहास लेकर दूसरी श्रेणी में । पर यह भी ख्याल कीजिए कि मैंने अपनी सारी पढ़ाई अपनी मेहनत से ही की है ।

हेमन्त

अपनी मेहनत का क्या मतलब ?

कमला

घर की सफ़ाई, खाना बनाना आदि घर के सब काम में स्वयं करती थी। मेरे पास पूरी किताबें तक नहीं थी। उस पर अपने गुज़ारे के लिए मैं तीन ट्यूशन भी लेती थी। रहने के नाम पर मेरे पास एक कमरा तक भी नहीं था। बाँस की खपचियों से मढ़े बरामदे के एक भाग पर मेरी चारपाई पिछले चार सालों से रखी हुई है। उसी पर बैठकर पढ़ते हुए मैंने दूसरी श्रेणी में एम० ए० पास किया है।

(स्वर में कुछ उत्तेजना-मी आ जाती है।)

हेमन्त

मुन्जीशी, चपरासी से कहकर एक प्याला काफ़ी मँगवाइए।

मुन्शी

बहुत अच्छा हुआ।

(बाहर चला जाता है।)

हेमन्त

मैं आपका दुख दर्द खूब समझता हूँ कमला जी। शरणार्थियों से मुझे पूरी सहानुभूति है। इस छोटी-सी उम्र में आपको दुनिया का इतना अनुभव हो गया है। यह मामूली बात नहीं है कमला जी।

कमला

मुझे दुनिया का क्या अनुभव हो सकता है साहब। मैं तो जन्म की एक अभागिन हूँ। आपकी कृपा होगी तो मेरा भविष्य बन जाएगा। आप विश्वास कीजिए, मैं पूरा मन लगाकर अपना काम करूँगी।

हेमन्त

तुम बड़ी खुशकिस्मत हो कमला। आज सुबह ही मुझे एक बहुत बड़े अफ़सर का टेलीफ़ोन आया था कि उन्हें एक पढ़ी-लिखी और चुस्त लड़की चाहिए। ठीक तुम्हारे जैसी।

कमला

(घबरा कर) मेरे जैसी ! मैं तो नौकरी की तलाश में आपके पास आई हूँ। मुझे नौकरी चाहिए। और कुछ भी नहीं। मैं अपना काम पूरी मेहनत और ईमानदारी से करूँगी।

हेमन्त

हाँ, हाँ। तुम्हें नौकरी ही मिलेगी। वही तो मैं तुम्हें बता रहा था। इतना घबराने से कैसे काम चलेगा ?

कमला

मुझे माफ कीजिए। मैंने कहा था न मैं जन्म की अभागिन हूँ। मैं बहुत जल्द घबरा जाती हूँ। आज से १० वर्ष पहले जिस तरह मेरे पिता-माता की हत्या की गई थी, वह सब मेरी आँखों के सामने आ खड़ा होता है। वह अत्यन्त भयंकर दृश्य जैसे मेरा पीछा ही नहीं छोड़ता ! मुझे सारी दुनिया से डर लगने लगता है ! आप मुझे काम दिलवाइए। मैं पूरा दिल लगाकर काम करूँगी।

(कमला इतना घबरा जाती है कि उसकी आँखों में आँसू भर आते हैं। वह सिर मुकाकर आँसू रोकने का प्रयत्न करती है। हेमन्त अपनी कुर्सी में उठकर खड़ा हो जाता है और कमला के पास आकर उसकी पीठ थपथपाता है। इसी समय कॉफी का एक प्याला हाथ में लिये चपगमी भीतर आता है और प्याला मेज़ पर रख देता है।)

हेमन्त

यह कॉफी पी लो कमला। तुम तो एक बहुत बहादुर लड़की हो। तुम्हारे तकलीफ़ के दिन अब सदा के लिए समाप्त हो गए।

(कमला रुमाल से अपना मँह पोंछकर अपने दुख पर काबू पा लेती है। चेहरे पर ज़बरदस्ती कुछ मुस्कराहट लाकर वह कहती है।)

कमला

धन्यवाद ! मैं इस समय कुछ भी नहीं ले सकूंगी । आपकी बड़ी कृपः होगी, यदि आप मेरी नौकरी का कोई प्रबन्ध कर सकें ।

हेमन्त

अपने एक मित्र के नाम मैं तुम्हें एक पत्र दूंगा । मेरे यह मित्र बहुत बड़े सरकारी अफसर हैं । तुम कल ही उनसे मिलना । मुझे विश्वास है कि कल ही से तुम्हें नौकरी मिल जाएगी ।

कमला

मैं आपकी बहुत कृतज्ञ हूँ । पर कृपया यह भी बताइए कि यह नौकरी सरकारी है या व्यक्तिगत ? मुझे वहाँ क्या काम करना होगा ?

हेमन्त

तुम्हें आम खाने से मतलब है कि पेड़ गिनने से ? यों नौकरी है भी सरकारी । पर वह पूरी तरह मेरे उस दोस्त की इच्छा पर निर्भर करती है । उन्हें अपना मनपसन्द सहायक चुनना है ।

कमला

मनपसन्द सहायक ?

हेमन्त

उन्हें ऐसा सहायक चाहिए जो उन्हें उनके सब कामों में मदद दे सके, जिस पर उन्हें पूरा भरोसा हो, जो उनकी जरूरी चीजों को समझता हो । बाकी रही काम की बात । वह स्वयं सब कुछ तुम्हें ठीक तरह समझा देंगे ।

(इसी समय काले टेलीफोन की घंटी बजती है । हेमन्त रिमीवर उठाकर बोलने लगता है ।)

हेमन्त

हैलो ! हाँ, मैं हेमन्त बोल रहा हूँ ।...नमस्कार ।...मुझे मालूम नहीं । नहीं अभी मैंने हिसाब नहीं देखा ।...मेरे पास ज़रा भी फुरसत नहीं है ।... (चौंक कर) जो क्या कहा ? बीस हजार ! नौनसेन्स ! यह असम्भव

है !... आपने समझ क्या रखा है !...हरगिज नहीं ! एक महीने तक तो बात भी मत कीजिए ।...कल सुबह मेरे मुन्शी को टेलीफोन कीजिएगा ।... मेरे अहसानों का यही बदला है ! ...मैं परवाह नहीं करता !...मैं अच्छी तरह देख लूंगा !

(क्रोध में रिमीवर पटक कर रख देता है, फिर ऊँचे स्वर में आवाज देता है।)

मुन्शी जी ! चपरासी !

(बाहर से दो आवाजें आती हैं।)

मुन्शी

अभी आया साहब !

चपरासी

आबत हैं, हुजूर !

(मुन्शी और चपरासी दोनों शीघ्रता से भीतर जाते हैं।)

हेमन्त

(चपरासी से) तुम बाहर जाओ।

(चपरासी 'जो हुकम सरकार' कहकर बाहर चला जाता है।)

हेमन्त

(मुन्शी से) सेठ रामकिशोर से हम कितना रुपया ले चुके हैं मुन्शीजी ?

(जैसे एकाएक कुछ ख्याल आ जाता है।)

माफ़ करना कमला ! इस वक्त मुझे बहुत ज़रूरी काम आ पड़ा है।

(कमला खड़ी हो जाती है।)

कमला

आपने कहा था कि आप मुझे परिचय पत्र देंगे।

हेमन्त

हाँ, हाँ ज़रूर। परिचय पत्र तो क्या, मुन्शीजी मेरी कार लेकर कल

सुबह तुम्हारे यहाँ आएँगे और तुम्हें साथ लेकर उन साहब से तुम्हारा परिचय करवा देंगे ।

(मुन्शी एक कागज कमला के सामने ले आता है। कमला उम पर अपना पता लिखती है और नमस्कार कर बाहर जाती है ।)

हेमन्त

मुन्शीजी, सेठ रामकिशोर का खाता देखकर बताओ कि हम उससे कितना रुपया ले चुके हैं ?

मुन्शी

इसकी क्या जरूरत पड़ गई साहब ?

हेमन्त

अभी-अभी उसका टेलीफोन आया था । कहता था कि मुझे उसका २० हजार रुपया देना है । वह नालायक हिसाब के लिए इसी वक्त यहाँ आना चाहता था । मैंने उसे टाल दिया । मेरा तो ख्याल था कि मुझे ही उससे कुछ लेना है ।

मुन्शी

साहब को याद है न ? कई बरस हो गए, जिन दिनों आपने उसे चीनी इम्पोर्ट करने का लाइसेंस ले देने का वायदा किया था, उन दिनों आपके इम्पीरियल होटल में रहने का पूरा खर्च तो वह आपको देता ही था, ३५ हजार की एक नई ब्यूक भी तो उसी ने खरीद कर आपको दी थी ।

हेमन्त

उससे क्या हुआ ? काम नहीं बना था तो मैंने उसकी कार उसे वापस भी तो कर दी थी । और फिर मैंने उसे कितनी ही और चीजों के परमिट लेकर दिए थे ।

मुन्शी

उन सब परमिटों के लिए तो ३ प्रतिशत के हिसाब से नकद रुपया हम लोग बसूल करते ही रहे हैं साहब ।

हेमन्त

रामकिशोर के पास उसकी कोई रसीद है ?

मुन्शी

मैं इतना नाशमन्त्र नहीं हूँ साहब । रसीद तो एक तरफ़ रही, मैं सदा फुटकर नोटों में वह रकम लेता रहा हूँ । इकट्ठे नम्बरों वाली नए नोटों की गड़्डी तक मैंने कभी उससे नहीं ली । मैं कोई ऐसा कच्चा थोड़े ही हूँ ।

हेमन्त

तो फिर सेठ किस तरह यह दावा कर रहा है कि मैं उसके बीस हजार का देनदार हूँ ?

मुन्शी

जी, होटल के सभी बिलों के भुगतान के लिए जब वह मुझे रुपया देता था, तो मुझ से डायरी में दस्तखत करवा लेता था ।

हेमन्त

पर वह तो कोई बहुत बड़ी रकम न होगी ।

मुन्शी

ठीक रकम तो मुझे याद नहीं । पर उन दिनों आपने बाजार से खरीद-फ़रोख्त भी तो बहुत की थी । जिन लोगों से काम लेना होता था, उनके लिए रेडियोग्राम, कालीन, कीमती घड़ियाँ, कमरे आदि जो कुछ भी खरीदा गया था, उन सब की भुगतान भी तो सेठ ही ने की थी साहब !

हेमन्त

मगर उसका सबूत क्या है ? सेठ के यहाँ से पैसा तो सब नकद ही आता था न !

मुन्शी

(मुस्करा कर) शायद आप भूल गए साहब ! उन सब पावनों के लिए भी मैं सेठ को दस्तखत देता था ।

हेमन्त

(झुंझलाहट से) तुम बड़े अहमक हो मुन्दी !

मुन्शी

जी, मैं तो आपका बच्चा हूँ ।

हेमन्त

तो फिर रसीदें क्यों दीं ?

मुन्शी

आप अब भूल गए साहब ! एक तरफ़ सेठ से आप खुद रक़म वसूल करते हुए डरते थे, शायद कहीं आप पकड़ में न आ जाएँ, इससे सारी वसूली मुझे करनी होती थी । दूसरी तरफ़ मुझ पर भी आपको पूरा भरोसा नहीं था, इससे आप ही ने तो कहा था कि कम-से-कम सभी बिलों की अदायगी वाली रक़मों के लिए मैं सेठ को दस्तखत दे दिया करूँ ।

हेमन्त

सब काम आपने बण्डल कर दिया मुन्दी जी !

मुन्शी

हैं, हैं, हैं ! जी, मैं तो आपका बच्चा हूँ !

(इसी समय काले टेलीफ़ोन की घंटी फिर से बजती है । हेमन्त रिसीवर उठा लेता है ।)

हेमन्त

हेलो, मैं हेमन्त बोल रहा हूँ ।...आहा सदानन्द जी ! नमस्कार !.. बहुत अच्छा हाल है । आपकी इनायत है ।...अभी-अभी हम लोग आप ही को याद कर रहे थे ।...ज़रूर आइए । अभी-अभी ।...मैं तो स्वयं आपको टेलीफ़ोन करने वाला था ।...बहुत लम्बी उम्र है आपकी...हः हः हः हः मैं इन्तज़ार कर रहा हूँ ।

(रिसीवर रख देता है) .

हेमन्त

इस बारे में कुछ सोचना होगा मुन्शी जी। इस सेठ के बच्चे को मैं ऐसा सबक दूंगा कि वह सारी उन्नत याद रखेगा। देखिए, अभी सदानन्द जी आ रहे हैं। ज़रा डायरी देखकर बताइए तो कि उनसे हमें क्या-क्या काम है? ज़रा अपना रजिस्टर ही यहाँ ले आइए।

मुन्शी

अभी लाया साहब।

(अपनी मेज़ में एक बड़ा रजिस्टर लाकर हेमन्त के हाथ में देता है। हेमन्त क्षण भर रजिस्टर के पन्ने पलट-पलट कर उसे देखता है।)

हेमन्त

सदानन्द का नाम तम्बाकू की किस जिन्स में आता है मुन्शीजी? मैं तो पंजाब से लेकर केरल तक की सब जिन्सों देख गया, पर मुझे समझ नहीं आया कि सदानन्द का नाम किस जिन्स में होना चाहिए।

मुन्शी

जी, आपने यह एक बहुत बड़ी बात कह दी मालिक। सच बात तो यह है कि सदानन्द तो सारे देश में फैला हुआ है। यह कहना सचमुच कठिन है कि वह पंजाब का है या केरल का। हिन्दुस्तान के पूरब का है, या पश्चिम का। वह तो एक प्रतीक है।

हेमन्त

आप भी एक जीनियस हैं मुन्शीजी। मैं तम्बाकू की एक कम्पनी का मैनेजिंग डाइरेक्टर हूँ। इससे आपने इन बेईमान सरकारी अफसरों का हिसाब रखने के लिए उनका नाम ही 'कच्चा तम्बाकू' रखकर यह रजिस्टर खोल दिया है। क्या खूब नाम रखा है आपने! हः हः हः। 'कच्चा तम्बाकू'! ये हुरामख़ोर, बेईमान सरकारी अफसर सचमुच कच्चे तम्बाकू हैं! हः हः हः!

मुन्शी

(विनय के साथ) जी !

हेमन्त

(रजिस्टर देखते हुए) यह बंगाली तम्बाकू नम्बर एक कौन है ?

मुन्शी

फणीन्द्रनाथ बैनर्जी ।

हेमन्त

बंगाली तम्बाकू नम्बर दो ?

मुन्शी

रिपुदमन साहा ।

हेमन्त

गुजराती तम्बाकू नम्बर एक ?

मुन्शी

माणिक भाई वसन्त राव ।

हेमन्त

पंजाबी तम्बाकू नम्बर एक ?

मुन्शी

लाला साहब फतहचन्द सीकरी ।

हेमन्त

ओह, यह सब याद रखना कितना कठिन है ! मुन्शी जी, परमात्मा न करे, पर अगर अचानक आपकी मौत हो जाए तो मैं तो यतीम हो जाऊंगा ! उस पर भी आपका तकियाकलाम है: "जी, मैं तो आपका बच्चा हूँ !" (नकल करता है)

मुन्शी

परमात्मा न करे कि आप या मैं दोनों में से कभी कोई यतीम बने ।

हेमन्त

(हंमकर) अच्छा तो बताइए मुन्गी जी, यह सदानन्द साहब तम्बाकू की किस जिन्स में हैं ?

मुन्गी

वह किस जिन्स के हैं, यह तो मुझे भी नहीं मालूम साहब । बात यह हुई कि 'सदानन्द' नाम ऐसा है, जिसके बारे में मुझे समझ नहीं आया कि वह किस राज्य का है । पंजाबी है कि बंगाली, गुजराती है कि आन्ध्र, कुछ भी पता नहीं चलता । यहाँ तक कि सदानन्द साहब को देखकर भी मैं जान नहीं पाया कि भारत का कौन-सा प्रान्त उन्हें जन्म देकर धन्य हुआ है । इस कारण उनका नाम मैंने 'अखिल भारतीय तम्बाकू' की सूची में रखा है । उस अखिल भारतीय यानी समूचे हिन्दुस्तान की लिस्ट में देखिए, तम्बाकू नम्बर एक ।

(आगे बढ़कर रजिस्टर में नाम निकालने का प्रयत्न करता है । इसी समय दरवाजे पर दस्तक सुनाई देती है ।)

हेमन्त

(धीमे स्वर में) आप यह रजिस्टर लेकर अपनी मेज पर चले जाइए । वहीं से इशारे कर मुझे बताते जाइएगा कि इस तम्बाकू से हमें कितने काम लेने हैं । (ज़रा जोर से) कृपया भीतर आ जाइए ।

(दरवाजा खुलता है । चपरामी एक किघाड पकड़ कर एक ओर खड़ा हो जाता है । उसके पीछे बन्द गले का सफ़ेद कोट और सफ़ेद पतलून पहने, नंगे सिर सदानन्द का प्रवेश । उन्हें देखकर सचमुच यह कहना कठिन है कि वह किस प्रदेश के हैं । मुन्गीजी आदर के साथ अपनी जगह खड़े हो जाते हैं और हेमन्त आगे बढ़कर सदानन्द का स्वागत करता है ।)

हेमन्त

नमस्ते साहब । इस बार तो बहुत दिनों के बाद आपके दर्शन हुए ।

उस दिन साँझ के बाद में आपके घर पर हाज़िर हुआ था। पर वहाँ मालूम हुआ कि आप अभी दफ्तर ही से नहीं लौटे हैं।

सदानन्द

किस दिन ?

हेमन्त

इसी पिछले सोमवार को। अगर मैं गलती नहीं करता तो उस समय रात के ८ बजे थे और आप वापस नहीं आए थे। उस दिन शायद आपको दफ्तर में ही देर हो गई थी।

सदानन्द

यह भी खूब कहा आपने। भलेमानस, ८ बजे से पहले मैं दफ्तर से तभी उठता हूँ, जब कोई ज़रूरी काम हो, नहीं तो रात के ८, ८॥ बजे तक दफ्तर में बैठकर काम करना तो रोज़मर्रा की बात है। कभी-कभी तो १० बजे तक भी दफ्तर से उठना नसीब नहीं होता।

(बातें करते-करते दोनों मोफ़े पर जा बैठते हैं।)

हेमन्त

आप क्या पीएंगे ?

सदानन्द

यह भी पूछने की बात है ? मैंने कभी अपना ड्रिंक बदला है ?

हेमन्त

माफ़ कीजिए। मेहमान से यह पूछने की कुछ आदत ही हो गई है। मुन्शी जी !

मुन्शी

हज़ूर।

हेमन्त

दो गिलासों में शुद्ध निर्मल जीवनामृत। एक में मेरे लिए ठण्डे पानी

के साथ और दूसरे में साहब के लिए विशुद्ध रूप में, सिर्फ बर्फ के एक टुकड़े के साथ ।

मुन्शी

बहुत जल्द हाजिर हुआ साहब ।

(बाहर जाता है ।)

सदानन्द

यह आदत की बात भी आपने खूब कही । इस आदत और ऐसे रिवाजों से मैं बहुत तंग आ गया हूँ हेमन्त जी । कभी-कभी तो इतनी झुंझलाहट पैदा होती है कि क्या बताऊँ । दफ्तर में मिलने वालों का तांता लगा रहता है । लोगों को मालूम है कि मैं बहुत व्यस्त हूँ । फिर भी जो आएगा, वह शुरू-शुरू में इधर-उधर की कुछ रिवाजी बातें जरूर करेगा । कभी-कभी तो अजीब अहमकों से पाला पड़ता है ।

हेमन्त

क्या बात कही है आपने साहब ! सचमुच कभी-कभी अजीब अहमकों से पाला पड़ता है !

(दोनों हँसने लगते हैं । इसी समय मुन्शीजी के पीछे चपरामी एक ट्रे में दो गिलास तथा कुछ नमकीन लिए आता है । ट्रे में एक और कोकाकोला की खुली बोतल भी रखी है, जिसमें कागज की नलकी पड़ी हुई है । चपरामी सब कुछ बीच की टेबल पर मजा देता है ।)

हेमन्त

मुन्शीजी ! (कोकाकोला की बोतल मुन्शीजी की ओर बढ़ाकर) हमारे मुन्शीजी का ड्रिंक भी कभी नहीं बदलता ! (हँसी)

(सदानन्द और हेमन्त गिलास हाथ में लेकर एक-दूसरे को 'हार्दिक सदाभिलाषाएँ' कहते हैं और धीरे-धीरे पीने लगते हैं ।)

हेमन्त

अभी आप रिवाजी बातचीत का जिक्र कर रहे थे न भाई साहब। शोपनहार का किस्सा सुना है न आपने ?

सदानन्द

कौन शोपनहार ? मेरे पास तो वह कभी नहीं आया !

हेमन्त

बड़ा बदकिस्मत है बेचारा। जाने दीजिए। वह परमिटों की अहमीयत नहीं जानता होगा !

सदानन्द

आपकी तम्बाकू कम्पनी वाले केस का क्या हुआ। मैंने आपको तरीका तो बता दिया था।

हेमन्त

बात कुछ बनती नज़र नहीं आती !

सदानन्द

मैं कभी मान नहीं सकता। अगर राजीव खुद रेड्डी साहब से कह दे तो क्या मजाल कि कहीं कोई और जाँच-पड़ताल हो। इस साले राजीव ने न जाने सब जगह कितना रौब गालिब कर रखा है।

हेमन्त

माफ़ कीजिए साहब ! मगर सच तो यह है कि राजीव साला नहीं है, बल्कि मैं उनका साला हूँ।

(दोनों हँसते हैं।)

सदानन्द

बहुत खूब मेरे यार। मगर मज़ाक की बात छोड़ो। यह बिल्कुल पक्की बात है कि अगर वह मिनिस्टर से कह दे कि वह व्यक्तिगत रूप से जानता है कि इस मामले में कम्पनी ने जानबूझ कर कोई बेईमानी नहीं की,

तो उतना ही काफ़ी है। अकेले राजीव की राय दस जाँच कमीशनों से अधिक विश्वसनीय मानी जाती है। क्या तुम उसे अभी तक नहीं मिले ?

हेमन्त

मिला तो हूँ। वह भी आज ही। अब से कुछ ही समय पहले।

सदानन्द

तो फिर उससे क्या बातचीत हुई ?

हेमन्त

वह इस बारे में कहीं भी और कुछ भी कहने को तैयार नहीं है।

सदानन्द

मज़ाक छोड़ो भाई। यह कैसे सम्भव है ?

हेमन्त

नहीं साहब। मैं बिल्कुल ठीक कह रहा हूँ।

सदानन्द

(आश्चर्य से) तब तो यह शक्स या तो देवता है और या दानव।

हेमन्त

अब मैं राजीव के बारे में क्या कह सकता हूँ।

सदानन्द

भई, हम तो यह मानते हैं कि आज की दुनिया में जो आदमी दोस्तों का साथ नहीं दे सकता, वह सबसे बड़ा पाजी है।

हेमन्त

मेरा अनुभव तो यह है भाई साहब, कि आज की दुनिया में ईमानदारी का जीवन बिताया ही नहीं जा सकता।

सदानन्द

(मुस्करा कर) भई, कभी तुमने उस रास्ते पर चलकर भी देखा है ? बुरा न मानना। यों मैं भी तुम्हारी बात से पूरी तरह सहमत हूँ।

हेमन्त

मैं अब किसी बात से बुरा नहीं मानता। पर यह भी सच है कि जब मैंने अपना जीवन प्रारम्भ किया था, मैंने निश्चय किया था कि मैं कभी न रिश्तों दूँगा और न कभी बेईमानी से रुपया बनाऊँगा।

सदानन्द

आश्चर्यजनक ! फिर बात क्या हुई ?

हेमन्त

दूसरे महायुद्ध के प्रारम्भ में मैं नया-नया विलायत से शिक्षा लेकर आया था। मैंने इमारती लकड़ी का व्यापार आरम्भ किया। जेहलम से मैंने दिल्ली के लिए मालगाड़ी के ३ डिब्बे बुक किए, जिनमें सैंकड़ों शहतीर भरे गए। जब मैंने माल बुक करवाया तो माल बाबू ने पूरा किराया लेकर ५) ६० प्रति डिब्बे के हिसाब से १५) ६० दस्तूरी मुन्नासे माँगी। मैंने उससे पूछा—“भई, यह क्या चीज है ?” वह बोला—“हमारा हिस्सा।” मैंने दस्तूरी देने से इन्कार कर दिया। तब उसने कहा—“आपकी मर्जी ! मगर बाद में शिकायत न कीजिएगा !”

माल बुक करवाकर मैं दिल्ली चला आया। पर तीन ही दिनों बाद वज्जीराबाद के स्टेशन मास्टर का एक तार मुझे मिला कि ‘लड़ाई के लिए डिब्बों की ज़रूरत थी इस कारण तुम्हारा माल यहीं उतार दिया गया है। रेलवे की ज़िम्मेदारी नहीं होगी। माल संभाल लो।’ यह तार पाकर मेरे तो होश उड़ गए। उतनी लकड़ी खरीदने में मैंने अपनी सारी पूँजी लगा दी थी।

सदानन्द

तो फिर तुमने क्या किया ?

हेमन्त

उसी समय में हवाई जहाज़ से लाहौर पहुँचा और वहाँ से टैक्सी लेकर रात के १२ बजे वज्जीराबाद स्टेशन पर पहुँचा। वहाँ जाकर बड़ी कठिना

से पता चला कि मेरा माल स्टेशन से आध मील दूर एक साइडिंग पर उतारा गया है। स्टेशन के सब कुली जमाकर मैंने वे शहतीर तरतीब से लगवाए और उनपर पहरा बैठाया। रेलवे वाले किसी काम में मदद देने को तैयार नहीं थे।

सदानन्द

इस सब काम में तो तुम्हारा बहुत खर्च हुआ होगा ?

हेमन्त

१५ की जगह पूरे १५०० साहब ! उस पर इतनी तकलीफ़ और चिन्ता ! तभी से मैं इस परिणाम पर पहुँचा कि आज की दुनिया में ईमान-दारी से गुज़ारा हो ही नहीं सकता।

सदानन्द

चलो, जाने दो। अब तो यार तुम उस सब की पूरी कसर निकाल चुके हो। यह सब उन्हीं १५०० की ही बरकत है मीयाँ !

हेमन्त

यह भी आप ठीक कह रहे हैं साहब।

सदानन्द

अच्छा भाई, मैं तुम्हारी तम्बाकू कम्पनी के बारे में कोई और इलाज सोचूँगा। घबराने की कोई बात नहीं है। मैं आज तो किसी और काम से तुम्हारे पास आया था। मेरे हाथ में कुछ और कीमती परमिट और लाइसेंस हैं। बहुत बड़े मुनाफ़े का सौदा है। कम से कम ३ लाख की बचत है।

हेमन्त

कितना हिस्सा चाहते हैं आप ?

सदानन्द

एक लाख।

हेमन्त

आज किसके पास एक लाख रुपया नकद होगा साहब। सरकार ने

सब पैसा चूस लिया है। फिर इतनी बड़ी रकम का भुगतान भी आसान नहीं होगा। पुलिस भी अब बहुत चौकसी हो गई है। और सच बात तो यह है कि पिछले दिनों ये जो पढ़े-लिखे नए नौजवान एस० पी० आए हैं, इनसे तो मैं बहुत डरता हूँ। न जाने किसने इन पुलिस वालों को भी आदर्शवादी बना दिया है !

सदानन्द

अपना लेक्चर छोड़ो हेमन्त ! यह बताओ तुम कितने का इन्तजाम कर सकोगे ?

हेमन्त

५० हजार खरा। इससे अधिक के लिए भी मैं पूरी कोशिश करूँगा। और जो कुछ मिलेगा, आप ही का होगा। कौन नालायक अपने दोस्त का पैसा खाएगा !

सदानन्द

बहुत ठीक। मगर कल ही इन्तजाम हो जाना चाहिए। सब काम नकद होगा। बाज़ार में चालू खुदरा नोटों में।

हेमन्त

बहुत ठीक साहब। कल ही लीजिए।

सदानन्द

अब अपनी तरफ़ के हालचाल बताओ।

हेमन्त

आपकी कृपा है। अपने निजी सहायक के रूप में आपको एक लड़की की ज़रूरत थी न ?

सदानन्द

मैंने तुमसे शायद कहा तो था।

हेमन्त

कल ही एक बहुत सुन्दर, समझदार और पढ़ी-लिखी लड़की आपके पास मेरा खत लेकर पहुँचेगी।

सदानन्द

(मुस्करा कर) मगर किसी जगह कोई धोखे की बात तो नहीं है न हेमन्त। मेरे सहायक को मेरे सब रहस्य मालूम हो जाते हैं।

हेमन्त

आप बेफ़िक्र रहें साहब।

सदानन्द

वह लड़की कहाँ की है ?

हेमन्त

पंजाब की।

सदानन्द

ना बाबा। इन पंजाबी लड़कियों से मैं बहुत डरता हूँ। ये तो खड़े-खड़े मर्दों को बेच आएँ !

हेमन्त

यह लड़की 'बेचने वालियों' में नहीं है साहब ! आप देखिएगा तो।

सदानन्द

सच पूछो तो ये लड़कियाँ सब की सब निकम्मी होती हैं। मर्दों के मुकाबले में आधा काम भी नहीं कर पातीं। मेरा बस चले तो दफ़्तर में किसी लड़की को पैर तक न रखने दूँ।

हेमन्त

पर इन लड़कियों के बिना आपका काम भी तो नहीं चलता साहब !

सदानन्द

यह बिल्कुल ठीक कहा तुमने। अच्छा भाई, कल उसे भेज देना।

(एकाएक उठ कर खड़ा हो जाता है।)

मुझे अब घर भी जाना चाहिए। दफ़्तर से सीधा तुम्हारे यहाँ ही चला आया था।

हेमन्त

कल सुबह ९ बजे मेरा मुन्शी उस लड़की को आपके घर ले आएगा।

सदानन्द

(दरवाज़े की ओर बढ़ते हुए)

९ बजे नहीं, ११ बजे। मेरे दफ़्तर में। और देखिए, मुन्शी को साथ आने की ज़रूरत नहीं है।

(एकाएक मुन्शी नज़दीक चला आता है और सदानन्द की पीठ की ओर से बार-बार हेमन्त को तीन उंगलियाँ दिखाने का प्रयत्न करता है।)

हेमन्त

क्या बात है मुन्शी जी ?

मुन्शी

जी ! (फाइल हाथ में लिए हुए) जी, हिन्दुस्तानी तम्बाकू नम्बर एक की तीन गाँठों का हिसाब नहीं मिल रहा !

हेमन्त

अभी छोड़ो इस किस्से को मुन्शी जी। कल मुझे याद दिलाना।

सदानन्द

(रुक कर) यह 'हिन्दुस्तानी तम्बाकू नम्बर एक' कौन-सा तम्बाकू होता है मुन्शी जी ! कभी हमें भी उसका स्वादचखाओ।

(हेमन्त और मुन्शी दोनों हंस पड़ते हैं)

हेमन्त

यह तो कच्चे तम्बाकू की किस्में हैं साहब। कोई भलामानस तो उनके नज़दीक भी न जाएगा।

(हेमन्त हंसता है। सदानन्द भी उसकी हंसी में साथ देता है।)

(हेमन्त आगे बढ़कर स्वयं दरवाजा खोलता है। नमस्कार के बाद सदानन्द का प्रस्थान। दरवाजा बन्द कर हेमन्त जब वापस लौटता है, तो वह दोनों हाथ मल रहा है और बहुत प्रसन्न दिखाई दे रहा है।)

हेमन्त

मुन्शी जी !

मुन्शी

जी हज़ूर !

हेमन्त

आज हम बहुत खुश हैं !

मुन्शी

सेठ रामकिशोर को टेलीफ़ोन करूँ जी ?

हेमन्त

आप तो जीनियस हैं मुन्शी जी।

मुन्शी

जी, मैं तो आपका बच्चा हूँ !

(मुन्शी सेठ रामकिशोर से टेलीफ़ोन मिलाता है। क्षण भर की प्रतीक्षा के बाद।)

मुन्शी

जी, मैं देवराज मुन्शी।...हाँ, हाँ आप साहब से बात कीजिए।... नहीं जी, वह नाराज-वाराज कुछ नहीं।...साहब को इन दिनों काम सचमुच बहुत ज्यादा है।

(टेलीफ़ोन का रिसीवर हेमन्त के हाथ में दे देता है।)

हेमन्त

हैलो सेठ ! दिमाग तो दुरुस्त है न ?...आप तो सारी दुनिया को अपनी ही तरह बेईमान समझते हैं ।...नहीं मैं नाराज तो नहीं हूँ, पर आपसे मुझे यह उम्मीद नहीं थी ।...आप तो यह समझें कि जैसे फिर कभी आपको मुझसे काम ही नहीं पड़ेगा ।...काम की बात ? अच्छा देखिए, इतने प्रिफरेन्शल शेयर्स मेरे पास इसी वक्त मौजूद हैं, जिनसे आपको ३ लाख का फ़ायदा है ।...हाँ, हाँ, पूरी तरह पक्के मोहरबन्द । कभी मेरी औफ़र भी गलत हुई है ?...माल लेते ही डेढ़ लाख हमें देना होगा ।...फिर वही सौदाबाजी !...मैं जानता हूँ आपकी यह बहानेबाजी !...हाँ, वह तो ठीक है ।...अच्छा तब ऐसा कीजिए कि एक लाख पूरा नकद और बीस हजार के पावने की पक्की रसीद ।...हाँ, हाँ, अभी आप मुझसे २०,००० माँग रहे थे न ? उसी की रसीद ।...आप लोग भी खूब उस्ताद हैं । नहीं, नहीं, माफ़ी माँगने की ज़रूरत नहीं है ।...अच्छा, चलिए आप भी क्या याद करेंगे । माफ़ कर दिया आपको ।...मैं खूब जानता हूँ कि आप किस तरह के सेवक हैं ।...बहुत ठीक । तो कल २० हजार की बसूली की रसीद और एक लाख नकद ! बहुत अच्छा । नमस्ते ।

(रिसीवर रखकर)

मुन्दीजी !

मुन्शी

जो हज़ूर ।

हेमन्त

हाथ मिलाइए !

(दोनों मुस्कराते हुए हाथ मिलाते हैं ।)

(परदा गिरता है ।)

प्रथम अंक समाप्त

तीन महीनों के बाद

दूसरा अंक

स्थान—सदानन्द का दफ्तर

समय—साँझ

(सदानन्द का कमरा बड़े साहबों के कमरे की तरह सजा है। कमरे में कालीन पर तिरछे रूप में एक बड़ी मेज़ पड़ी है, जिसके सामने तीन कुर्सियाँ रक्खी हैं। पीछे की दीवार पर एक घड़ी लटक रही है। कमरे में २, ३ चित्र हैं, जो स्पष्टतः विभिन्न रुचि के हैं। उन्हें देखकर सदानन्द की रुचि के सम्बन्ध में कोई भी धारणा नहीं बनाई जा सकती। दूसरे किनारे कुछ बड़े रैक रक्खे हैं, और उन्हीं के साथ एक ओर रेडियोग्राम पड़ा है। सदानन्द वन्द गले का सफ़ेद खद्दर का कोट पहने हुए है। जब पर्दा उठता है तो घण्टी का बटन दवाने हुए दिखाई देता है। घण्टी को तेज़ आवाज़ दूर तक सुनाई दे रही है।)

(क्षण भर बाद चपरामी दरवाज़ा खोलकर भीतर आता है।)

चपरामी

(सलाम बजाकर) हुज़ूर !

सदानन्द

देखो, बाबू लोग गया ?

चपरामी

जी जनाब ! पाँच बज गया और बाबू लोग चला गया।

सदानन्द

ठीक ! देखो, अब किसी को मेरे कमरे में मत आने देना।

चपरासी

(सिर झुकाकर) जो हुक्म सरकार ।

सदानन्द

जो भीतर आना चाहेगा, वह मिस कमला से इजाजत लेगा । तुम किसी का कार्ड भी सीधा मेरे पास मत लाना ।

चपरासी

बहुत अच्छा हज़ूर ।

सदानन्द

अच्छा, अब जाओ ।

(चपरासी खड़ा रहता है ।)

सदानन्द

क्यों, जाते क्यों नहीं ? क्या बात है ?

चपरासी

साहब, एक नौजवान सुबह से यहाँ इन्तज़ार कर रहा है ।

सदानन्द

मुझे मालूम है । उसको बोला था न कि वह मेरे सहायक से मिले ?

चपरासी

बोला था हज़ूर ।

सदानन्द

तो फिर ?

चपरासी

वह कितने ही छोटे-बड़े अफ़सरों से मिल चुका है । मगर वह कहता है कि आप से मिलना ज़रूरी है ।

सदानन्द

(झुंझलाकर) ज़रूरी है ! वह कौन होता है 'ज़रूरी' शब्द का इस्तेमाल करने वाला !

(चपरासी सिर झुकाकर चुपचाप खड़ा रहता है।)

सदानन्द

अच्छा, उसे भीतर बुलाओ।

चपरासी

बहुत अच्छा हज़ूर।

(चपरासी बाहर चला जाता है। सदानन्द कोई फ़ाइल उठाकर देखने लगता है। इसी समय मृट पहने और टाई लगाए एक युवक का प्रवेश। युवक आदरपूर्वक सदानन्द को प्रणाम करता है। उत्तर में सदानन्द अपना सिर ज़रा-सा हिला भर देता है।)

सदानन्द

क्या बात है ?

युवक

(खड़े रहकर) आपके सचिवालय से मुझे एक नियुक्ति पत्र गया था। उसमें लिखा था कि यूनियन पब्लिक सर्विस कमीशन द्वारा मैं चुना गया हूँ और मुझे एक सप्ताह के भीतर अपनी नई पोस्ट ले लेनी चाहिए। आपका वह पत्र पाते ही मैं बम्बई से दिल्ली चला आया।

सदानन्द

(जुंझलाकर) पर तुम मेरे पास क्यों आए हो ?

युवक

यही तो निवेदन कर रहा हूँ साहब ! कल ही मेरे पास आपके सचिवालय से एक और पत्र आया, जिसमें लिखा था कि पिछला नियुक्ति-पत्र रद्द समझा जाए और मैं अगले पत्र की प्रतीक्षा करूँ।

सदानन्द

तो इसमें बुराई क्या है ! अगले पत्र की प्रतीक्षा करो।

युवक

पर मैं तो कमीशन द्वारा चुना गया हूँ न ?

सदानन्द

(झुंझलाकर) मुझे क्या मालूम कि तुम कौन हो और किसके द्वारा चुने गए हो !

युवक

यही सब तो मैं बता रहा हूँ साहब ! आप ही के सचिवालय के इस पत्र के अनुसार मैं कमीशन द्वारा चुना गया हूँ ।

सदानन्द

तो यह सब पचड़ा मुझे क्यों सुना रहे हो ? मेरे किसी मातहत अफसर के पास क्यों नहीं जाते ?

युवक

आज सुबह से यही काम कर रहा हूँ साहब ! घंटों तक इन्तज़ार करवाने के बाद आपके अफसरों से मिला तो सब जगह ही जवाब मिला कि बड़े साहब के पास जाओ । तभी लाचार होकर मैं आपके पास आया हूँ !

सदानन्द

क्या नाम है तुम्हारा ?

युवक

जुगलकिशोर ।

सदानन्द

पोस्ट कौन-सी है ?

युवक

परचेज़ आफ़ीसर !

सदानन्द

अच्छा, कुछ याद तो पड़ता है । यह तो प्रथम श्रेणी की गजेटेड पोस्ट है न ?

युवक

जी हाँ।

सदानन्द

अच्छा, आप बाहर इन्तज़ार कीजिए। मैं अभी इस बारे में पूछताछ करता हूँ।

(युवक बाहर चला जाता है और चपरामी ठीक तरह दरवाज़ा बन्द कर देता है। सदानन्द भीतर का टैलीफ़ोन उठाकर बातचीत करने लगता है।)

हाँ, सुनिए, इस लड़के को मेरे पास क्यों भेज दिया?...क्या फ़िज़ूल बात है! आपको खुद निबटा लेना चाहिए था!...कमीशन से चुना गया है?...क्या कहते हो मैंने ही कहा था!...अच्छा, अच्छा, ठीक है। मुझे याद आया, यह पोस्ट विजय राघव को मिलनी चाहिए।...विजय राघव को तार दे दिया गया है न?...कब आ रहा है?...परसों...कमीशन को क्या लिखोगे?...ड्राफ्ट बना लिया गया है?...हूँ...हूँ...अच्छा, कोशिश कर लेनी चाहिए। कल ड्राफ्ट ज़रूर चले जाना चाहिए।...इसे १० दिनों के लिए टाल दो न!...नहीं मानता?...बहुत अच्छा, मैं ही इस लड़के से निबटता हूँ।

(रिमीवर रख देता है। क्षण भर चुपचाप बैठा रहता है। फिर घंटी बजाता है। चपरामी का प्रवेश और सिर झुकाकर खड़े हो जाना।)

सदानन्द

उस नौजवान को भेजो।

चपरामी

बहुत अच्छा हज़ूर।

(क्षण भर में जुगलकिशोर का प्रवेश। सदानन्द अब के भी उसे बैठने को नहीं कहता। वह खड़ा ही रहता है।')

सदानन्द

देखो भाई, मैंने उस बारे में पूछ लिया है। तुम्हें अभी कम से कम १० दिन और इन्तज़ार करना होगा।

जुगलकिशोर

दस दिन के बाद तो मुझे यहाँ बुला लिया जाएगा ?

सदानन्द

आजकल तुम क्या काम कर रहे हो ?

जुगलकिशोर

मैं बम्बई की एक बड़ी फर्म का सहायक मैनेजर था।

सदानन्द

‘था’ का क्या मतलब ?

जुगलकिशोर

जब मुझे आपका पत्र मिला तो मैंने जनरल मैनेजर से अनुरोध किया कि मेरा त्यागपत्र स्वीकार कर लिया जाए। वह मान गए। यह तो उन्हें बहुत दिनों से मालूम था कि मुझे यह पोस्ट मिलने वाली है।

सदानन्द

ऐसी जल्दबाजी कभी अच्छी नहीं होती। तुम अभी नौजवान हो न। मेरी यह बात गाँठ बाँध लो कि कभी जल्दबाजी से काम न लो। तुम्हारी उम्र क्या है ?

जुगलकिशोर

२७ वर्ष।

सदानन्द

विवाह किया या नहीं ?

जुगलकिशोर

अभी नहीं श्रीमन् !

सदानन्द

तब फिर तुम्हें किस बात की फ़िक्र है ?

जुगलकिशोर

मैं आपके पास न्याय की माँग करने आया हूँ श्रीमन् । मुझे मालूम हुआ है कि यहाँ इसी पोस्ट के लिए किसी ऐसे व्यक्ति को बुलाया जा रहा है, जिसे कमीशन ने नहीं चुना था । बल्कि वह कमीशन के सामने गया तक भी नहीं था ।

सदानन्द

(खिज कर) चण्डूखाने की ये गप्पें सुनने के लिए मेरे पास समय नहीं है । अब तुम जा सकते हो ।...चपरासी !

(क्षण भर रुक कर युवक दरवाजे की ओर बढ़ता है, जिसे चपरामी ने खोल दिया है । युवक के बाहर जाने ही दरवाज़ा बन्द हो जाता है और सदानन्द क्रोध के साथ उधर ही देखता रहता है ।)

सदानन्द

(आप ही आप) गुस्ताख कहीं का !

(सदानन्द फिर से एक फ़ाइल देखने लगता है कि टेलीफ़ोन की घंटी बजती है । सदानन्द रीमीवर उठाकर बातें करने लगता है ।)

मैं हूँ सदानन्द ।... (विनय में) नमस्कार हज़ूर ! ...जी, फरमाइए ।... कहें तो मैं अभी हाज़िर हो जाऊँ । (धवग कर) जी एक नौजवान ?... वह लम्बे कद का चुस्त युवक ?...जी वह आया तो था ।...मुझे कुछ भी मालूम नहीं ।...ज़रूर...ज़रूर ! मुझे मालूम है, कमीशन ने उसे चुना था । उसे कौन रोक सकता है हज़ूर ? बहुत अच्छा ।...आज ही वह ज़रूर ले लिया गया होगा । मैं मालूम करके सूचना दूंगा ।...नमस्कार ।

(बड़ी धबराहट के साथ एक ओर घंटी बजाना है और दूसरी ओर पुकारता है ।)

सदानन्द

चपरासी ! चपरासी !!

(चपरामी आता है।)

चपरामी

जी हज़ूर !

सदानन्द

वह नौजवान कहाँ है ?

चपरामी

कौन-सा नौजवान जनाब ?

सदानन्द

कौन-सा के बच्चे ! वही, जो अभी-अभी यहाँ से गया है।

चपरामी

वह लिफ्ट से चला गया हज़ूर !

सदानन्द

दौड़ कर उसे बुला लाओ। मेरा मुँह क्या देख रहे हो !

(चपरामी शीघ्रता से बाहर जाता है और सदानन्द एक कागज़ पर कुछ लिखने लगता है। मिनट भर में चपरामी दरवाज़ा खोलता है और जुगलकिशोर भीतर आता है। वह बहुत गम्भीर दिखाई दे रहा है।)

सदानन्द

आओ भाई। बैठो ! सामने की इस कुर्सी पर।

(जुगलकिशोर खड़ा रहता है।)

सदानन्द

(कोमल स्वर से) भलेमानस, तुमने यह पहले क्यों नहीं बताया कि तुम श्री वैकटाचारी के आदमी हो !

जुगलकिशोर

वह मेरे पिता जी के घनिष्ठ मित्र हैं और मुझ पर भी उनकी कृपा है।

सदानन्द

भलेमानस, तो यह सब पहले क्यों नहीं बताया ?

जुगलकिशोर

मैं आपकी बात समझा नहीं साहब ।

सदानन्द

मैं कहता हूँ कि तुमने सबसे पहले यह क्यों नहीं बताया कि तुम श्री वेंकटाचारी के आदमी हो ?

जुगलकिशोर

मुझे कहाँ मालम था कि मेरे पिता जी के किन-किन मित्रों के नाम में 'खुल जा सिमसिम' वाली शक्ति है ।

सदानन्द

आज की दुनिया में इसी बात का ज्ञान तो सबसे अधिक महत्वपूर्ण है भलेमानस । मैंने कहा तो, इस कुर्सी पर बैठ जाओ ।

जुगलकिशोर

धन्यवाद ।

(बैठ जाता है)

सदानन्द

“ रामनाम की महिमा सुनी है न तुमने ? इस कलिकाल में वह शक्ति परमात्मा के बनाए कुछ बन्दों के नामों में आ गई है । बस, इस बात का ज्ञान रखना जरूरी है कि किस मौके पर कौन-सा नाम अमोघ सिद्ध होता है । ”
(कहकर ऊँचे स्वर से हँसता है । जुगलकिशोर इस हंसी में साथ नहीं देता ।)
चपरासी कहता था कि तुम लिफ्ट से चले गए हो । फिर इतना जल्दी कैसे लौट आए ?

जुगलकिशोर

लिफ्ट पहले ऊपर की मंजिल पर जा रहा था । वहाँ से जब वह इस

मंजिल तक वापस आया तो चपरासी ने उसे रोककर आपका सन्देश मुझे दिया ।

सदानन्द

तुम सचमुच सौभाग्यशाली हो । अगर लिफ्ट तुम्हें ऊपर की जगह नीचे की ओर ले गया होता, तो शायद तुम सदा के लिए नीचे चले गए होते !

जुगलकिशोर

आप ही लोग हम नौजवानों की किस्मत को बनाने या बिगाड़ने वाले हैं ।

सदानन्द

अच्छा चलो, आज ही से तुम्हारी नियुक्ति हो गई ।

जुगलकिशोर

(प्रसन्न होकर) आज ही से ? पर इस समय तो आपका दफ़्तर भी बन्द हो गया है ।

सदानन्द

कोई फ़िक्र नहीं । अभी मैं एक चिट्ठी तुम्हें दूंगा । मेरे डिपुटी के पास जाना । वह आज ही से तुम्हारी नियुक्ति का आज्ञापत्र तुम्हें दे देंगे ।

जुगलकिशोर

धन्यवाद ।

(सदानन्द भीतर के टेलीफ़ोन का बटन दबाकर बात करने लगता है ।)

कमला, थोड़ी देर के लिए यहाँ चली आओ ।...नहीं, उसकी ज़रूरत नहीं है ।...अभी ।

(जुगलकिशोर से)

तुम बिलायत से कब लौटे ?

जुगलकिशोर

तीन साल हो गए ।

सदानन्द

वहाँ डिग्री किस संस्था से ली थी ?

जुगलकिशोर

लण्डन स्कूल ऑफ़ इकॉनॉमिक्स से ।

(इसी समय कमला का प्रवेश । वह हल्के आस्मानी रंग की पोशाक पहने हुए है । वेशभूषा में सादगी रहते भी वह प्रथम अंक की अपेक्षा बहुत अधिक सुन्दर दिखाई दे रही है ।)

सदानन्द

आओ कमला, मैं इस युवक से तुम्हारा परिचय करवाऊँ । यह है जुगलकिशोर । आज ही परचेज आफ़िसर के पद पर इनकी नियुक्ति हो रही है । (जुगलकिशोर से) और यह है मेरी व्यक्तिगत सहायक कुमारी कमला ।

(दोनों एक दूसरे को प्रणाम करते हैं ।)

सदानन्द

(कमला से) कमला, जुगलकिशोर की नियुक्ति के सम्बन्ध में तुम्हें जो चिट्ठी टाइप करनी है, वह मैंने इस कागज़ पर नोट कर दी है । यह चिट्ठी टाइप कर इन्हें अपने साथ लेकर तुम्हें मेरे डिपुटी के पास जाना होगा ।

कमला

अवश्य ।

(सदानन्द के हाथ से कागज़ लेकर देखने लगती है । इसी समय आन्तरिक टेलीफ़ोन की घंटी बजती है । सदानन्द रिसीवर उठाकर बातचीत करने लगता है ।)

सदानन्द

नमस्कार सर ! ...इसी वल्ल ! ...ज़रूर, ज़रूर ! ...मैं अभी आया !

(कमला से) मुझे कुछ मिनटों के लिए चीफ़ सेक्रेटरी साहब के पास जाना है। मैं अभी वापस आया। (प्रस्थान)

(कमला क्षण भर कागज़ की ओर देखती रहती है। उसके बाद जुगलकिशोर की ओर देखे बिना, बड़ी मंज़ू के पास एक तिपाई पर रखे टाइप राइटर के पास जा बैठती है और चिट्ठी टाइप करने लगती है। जुगलकिशोर अपनी जगह चुपचाप बैठा रहता है। टाइप करना प्रारम्भ करने के कुछ ही देर बाद कमला रुक जाती है और जुगलकिशोर से पूछती है।)

कमला

क्षमा कीजिए, आपका नाम जुगलकिशोर है या युगलकिशोर ?

जुगलकिशोर

जी, जुगलकिशोर। जे-यू-जी-ए-एल।

कमला

धन्यवाद। हिज्जे मैंने आपसे नहीं पूछे थे।

जुगलकिशोर

माफ़ कीजिए कमला जी। मैंने आपको कहीं देखा है।

कमला

क्या आपको विश्वास है कि बचपन ही से आपका यही नाम है ?

जुगलकिशोर

मैं आपका मतलब नहीं समझा।

कमला

मेरा प्रश्न तो बिल्कुल साफ़ है। क्या आज से १० बरस पहले भी आपका यही नाम था ?

जुगलकिशोर

(घबरा कर) मगर आपको यह शक किस तरह हुआ कि यह मेरा दूसरा नाम है ?

कमला

(मुस्करा कर) अगर मैं कहूँ कि आपका नाम जुगलकिशोर न होकर अमरनाथ है, तो इस बात का आप क्या जवाब देंगे ?

जुगलकिशोर

(कमला की ओर बहुत ध्यान से देखते हुए) क्या आप सी० आई० डी० में हैं ? (ज़रा मोच कर) आपका नाम कमला है... कमला ! (कमला की ओर बहुत गौर से देखते हुए, जैसे स्वगत) मगर यह कैसे सम्भव है !

कमला

क्या बात कैसे सम्भव है ?

जुगलकिशोर

जाने दीजिए । फिर भी अगर मैं आपसे पूछूँ कि आप डाक्टर तीर्थराज को जानती हैं, तो आप क्या जवाब देंगी ?

कमला

(मुस्करा कर) यही कि मैं उनकी बेटा हूँ ।

जुगलकिशोर

(भाववेश में एकदम उठ कर खड़ा हो जाता है और आगे बढ़ कर कमला का हाथ पकड़ लेता है) ओह, कमला, तुम कितनी बड़ी हो गई ! मैं तो किसी भी तरह तुम्हें पहचान न पाता । तुम कितनी सुन्दर निकल आई हो कमला !

कमला

मैं तो आपको देखते ही पहचान गई थी । पर मुझे पूरा निश्चय नहीं था । आप की आवाज़ सुनी, तो पूरा निश्चय हो गया ।

जुगलकिशोर

तुम कल्पना भी नहीं कर सकती कि तुम्हें देख कर मुझे कितनी अधिक खुशी हुई है। माता जी अक्सर तुम्हारी चर्चा किया करती थीं। डाक्टर साहब और चाची जी कहाँ हैं ? हमने तो सुना था कि—

कमला

तुमने ठीक ही सुना था जुगल। गुजराँवाले से मैं अकेली ही बचकर आ सकी। (भारी स्वर में) पिताजी और माताजी दोनों की हत्या मेरी आँखों के सामने की गई थी !

जुगलकिशोर

उन सब बातों को भुला दो कमला। सान्त्वना की बात इतनी ही है कि हम अकेले नहीं हैं। हमारे साथी लाखों हैं, ऐसे लोग भी लाखों हैं, जिन्हें बड़ी से बड़ी यातनाएँ उठानी पड़ी हैं। माताजी तुमसे मिलकर कितनी खुश होंगी कमला !

कमला

आश्चर्य की बात है कि दिल्ली में रहते हुए भी हम लोग अभी तक एक-दूसरे से मिल नहीं पाए थे।

जुगलकिशोर

मैं दिल्ली में कहाँ था कमला। विभाजन के दिनों में ही हम लोग कलकत्ता चले गए थे। उसके बाद मैं पढ़ाई के लिए विदेश चला गया। वापस आया तो बम्बई में मुझे काम मिल गया। सौभाग्य है कि अब मैं तुम्हारा साथी बन रहा हूँ। तुम कब से यहाँ काम कर रही हो कमला ?

कमला

तीन महीनों से। मैं तो अपना यह सौभाग्य मानती हूँ कि मुझे इतना अच्छा बौस मिला है।

जुगलकिशोर

(जरा धीमे स्वर में) पर मैंने तो कुछ और ही सुना है।

कमला

वह क्या ?

जुगलकिशोर

यही कि अब किसी भी जगह वह बात नहीं रही है। सब जगह खुशामद, पक्षपात और तिकड़मबाजी का दौरदौरा है। योग्यों की कोई कदर नहीं करता, तिकड़मबाज अत्यन्त अयोग्य होते हुए भी तरक्की पाते चले जाते हैं।

कमला

यह सब जानने का मुझे अभी तक मौका ही नहीं मिला।

जुगलकिशोर

कमला, विदेश में रहते हुए मेरे जी में बड़ी-बड़ी उमंगें उठती थीं। सोचता था कि अपने देश में वापस जाकर मैं यह करूँगा और वह करूँगा। इसी से मैं सरकारी नौकरी के लिए बहुत अधिक उत्सुक था। पर दिल्ली पहुँच कर इन ५, ६ दिनों में ही मैंने जो कुछ सुना है, मेरी अन्तरात्मा चाहती है कि वह सब झूठ साबित हो।

कमला

क्या सुना है तुमने जगल ?

जुगलकिशोर

बस यही कि यहाँ देश की चिन्ता किसी को नहीं है। सबको अपनी-अपनी चिन्ता है। कहीं दोस्ती चलती है, कहीं घड़ेबन्दी चलती है और कहीं प्रान्तीयता की सड़ी-गली भावना चलती है। मैंने सुना है कि यहाँ काम को और योग्यता को कोई नहीं देखता। यहाँ तो बस यही देखा जा रहा है कि किस की पहुँच कहाँ तक है !

कमला

यह सब तो मैं नहीं जानती, पर इतना जरूर जानती हूँ कि श्री सदानन्द उन लोगों में नहीं हैं।

जुगलकिशोर

सदानन्द जी के शब्दों में भी सब से महत्त्वपूर्ण बात यह है कि तुम किसके आदमी हो। अपनी योग्यता के बारे में कुछ भी कहे बिना सब से पहले तुम यही बताओ कि तुम किसके आदमी हो !

कमला

तुम सदानन्द जी को नहीं जानते जुगलकिशोर। कभी-कभी मैं सोचती हूँ कि अगर सदानन्द जी की मुझ पर कृपा न होती तो मेरा क्या हाल हुआ होता।

जुगलकिशोर

तुम योग्य थीं, इससे चुनी गईं।

कमला

यह योग्यता-अयोग्यता का सवाल नहीं है। श्री सदानन्द ने सिर्फ मुझे यह अच्छी नौकरी ही नहीं दी, उन्होंने जैसे मेरी सभी समस्याएँ हल कर दी हैं। उन्हीं की कृपा से मुझे एक अच्छा मकान मिल गया है। उन्हीं की कृपा से मुझ में फिर से कुछ आत्मविश्वास जागने लगा है। मेरा रोम-रोम उनका अनुगृहीत है।

(कमला के अनजाने में धीरे-धीरे दरवाजा खुलता है। हेमन्त के साथ सदानन्द का प्रवेश।)

सदानन्द

(मुस्करा कर) तुम्हारा रोम-रोम किसका अनुगृहीत है कमला ?
(कमला जवाब नहीं देती। वह और जुगलकिशोर दोनों अपनी-अपनी जगह खड़े हो जाते हैं। नमस्कार प्रति-नमस्कार होता है।)

हेमन्त

क्या हाल है कमला बहन ?

कमला

आपकी कृपा है।

सदानन्द

चिट्ठी तो टाइप हो गई होगी। उस पर मेरे दस्तखत करवा लो और तुम इन्हें (जुगलकिशोर की ओर इशारा कर) मेरे सहायक के पास ले जाओ।

कमला

अवश्य।

(सदानन्द टाइप किए हुए पत्र पर हस्ताक्षर करता है और कमला वह पत्र लेकर दरवाजे की ओर बढ़ती है। जुगलकिशोर उसके साथ जाता है।)

सदानन्द

इस तरह बिना टेलीफोन किए क्यों चले आए भाई हेमन्त ? तुम्हारा चेहरा देखकर मैं कह सकता हूँ कि अवश्य ही कोई बहुत जरूरी काम तुम्हें यहाँ खींच लाया है।

हेमन्त

ऐसी बात तो नहीं है साहब। पर थोड़ा-बहुत काम तो रहता ही है। और काम पड़ने पर हमें काबा की ओर दौड़ना ही पड़ता है। मशहूर है न, मुल्ला की दौड़ मस्जिद तक।

(मुस्कराने का प्रयत्न करता है।)

सदानन्द

अच्छा भाई, बैठो तो सही।

(दोनों बैठते हैं।)

हेमन्त

यह कमला तो पहले से भी अधिक सुन्दर दिखाई देने लगी है।

सदानन्द

उसके व्यक्तित्व को उभरने का मौका जो मिल रहा है।

हेमन्त

मुझे खुशी है कि वह आपके साथ रहकर इतनी प्रसन्न है।

सदानन्द

किसी तरह की गलतफ़हमी में न पड़ो भाई हेमन्त।

हेमन्त

गलतफ़हमी ! वह भी आपके सम्बन्ध में ?

सदानन्द

मेरे सम्बन्ध में तो शायद तुम्हें गलतफ़हमी कभी न हो ; पर इस बेचारी लड़की के सम्बन्ध में तुम्हें गलतफ़हमी जरूर हो सकती है।

हेमन्त

मैं इन शरणार्थी लड़कियों को खूब समझता हूँ साहब।

सदानन्द

क्या समझते हो ?

हेमन्त

यही कि अपना काम निकालने में ये खूब होशियार होती हैं।

सदानन्द

तुम खाक भी नहीं समझते हेमन्त। नारी चरित्र को समझना बड़ा कठिन है : 'देवो न जानाति कुतो मनुष्यः ?' और फिर सबको एक ही लाठी से हाँकना तो शायद भेड़ों तक ही चल सकता है।

हेमन्त

गुस्ताखी माफ़ हो। मालूम होता है, यहाँ मामला कुछ अधिक गहरा हो गया है।

सदानन्द

इस लड़की का मामला तो सचमुच बहुत गहरा है। यह एक साइको-लौजिकल केस है।

हेमन्त

साइकोलौजिकल केस ? क्या मतलब है आपका ?

सदानन्द

मैं इस लड़की में शुरू ही से बहुत गहरी दिलचस्पी लेता रहा हूँ ।
इस लड़की की एक-एक हरकत—

हेमन्त

(बीच ही में रोक कर) यहाँ तक ! पर श्रीमती सदानन्द का क्या होगा ?

सदानन्द

(हँसकर) तुम लगातार गलत रास्ते पर जा रहे हो हेमन्त । ठीक रास्ते पर चलना शायद तुम्हें पसन्द ही नहीं है ।

हेमन्त

यह तो भविष्य ही बताएगा कि कौन गलत रास्ते पर है । या फिर श्रीमती सदानन्द ही इस बात का निश्चय कर सकेंगी ।

सदानन्द

फिर वही श्रीमती सदानन्द !

हेमन्त

तो क्या उन्हें इस बात में कोई आपत्ति नहीं है ?

सदानन्द

किस बात में ?

हेमन्त

यही कमला के सम्बन्ध में ! और अब तो नए कानून के अनुसार कोई सरकारी कर्मचारी एक साथ दो विवाह कर भी नहीं सकता ।

सदानन्द

(हँसकर) बहुत समय तक लड़कियों के सम्बन्ध में मेरा भी वही दृष्टिकोण था, जो तुम्हारा है ।

हेमन्त

आज तो आप पहेली बुझवा रहे हैं साहब । भला किस दृष्टिकोण की बात आप कर रहे हैं ? लड़कियों के बारे में मेरे तो बहुत से दृष्टिकोण हैं ।

सदानन्द

तुम्हारे बहुत से दृष्टिकोण भी मैं जानता हूँ—लड़कियों से काम निकाला जा सकता है, पहला दृष्टिकोण; लड़कियों से खिलवाड़ किया जा सकता है, दूसरा दृष्टिकोण; लड़कियों को आसानी से फँसाया जा सकता है, तीसरा दृष्टिकोण; उन्हें फटे हुए पुराने कपड़े की तरह जब चाहे उतार कर फेंक दिया जा सकता है, चौथा दृष्टिकोण !—और भी गिनाऊँ तुम्हारे दृष्टिकोण ?

हेमन्त

जी आप तो यह बताइए कि कमला के बारे में आपका सबसे नया दृष्टिकोण क्या है ?

सदानन्द

शुरू-शुरू में तुम्हारी ही तरह मेरा भी ख्याल था कि अगर मैं उस पर कुछ ऐहसान करूँगा तो बदले में वह मेरी छोटी-मोटी ज्यादातियाँ भी सहन करती जाएगी । पहले भी तो तुम कितनी ही लड़कियाँ मेरे पास भेज चुके हो हेमन्त ।

हेमन्त

ठीक संख्या तो मुझे याद नहीं श्रीमन् ।

सदानन्द

(हंसते हुए) और मुझे भी याद नहीं । खैर, जाने दो । हां, तुम अभी रिफ्यूजी लड़कियों की बात कर रहे थे न । पर मेरा तो अनुभव है कि इन रिफ्यूजी लड़कियों में आत्मरक्षा की भावना सबसे अधिक रहती है । यह शायद इन्हें परिस्थितियों की देन है । बीस कोशिश करके भी तुम उस आत्मरक्षा-भावना की सीता-रेखा को अतिक्रान्त नहीं कर सकते ।

(सदानन्द क्षण भर के लिए चुप रहकर हेमन्त की ओर देखता है, जो कोई जवाब नहीं देता, न कोई प्रश्न ही करता है।)

सदानन्द

पर जैसा कि मैंने अभी-अभी कहा, कमला उन सबसे एकदम भिन्न है।

हेमन्त

वह किस तरह ?

सदानन्द

कमला जैसे आत्मरक्षा-भावना की उस सीता-रेखा को जानती तक भी नहीं। उसने कभी मुझे किसी बात से नहीं रोका।

हेमन्त

इससे अधिक अच्छी बात और क्या हो सकती है साहब ?

सदानन्द

यहीं तो तुम गलती करते हो हेमन्त। (गम्भीर स्वर में) कमला पहली लड़की है, जिसने मुझे पूरी तरह पराजित कर दिया है !

हेमन्त

आप तो फिर से पहेलियाँ बुझवाने लगे।

सदानन्द

कमला को मुझपर ऐसा अगाध विश्वास है कि जो विश्वास सौ कवचों से बढ़कर उसकी रक्षा करता है।

हेमन्त

पर उस विश्वास का आप चाहे जिस तरह लाभ भी तो उठा सकते हैं ?

सदानन्द

यही तो मैं भी कह रहा हूँ भलेमानस। जब मैंने अनुभव किया कि कमला पर मेरे काफी एहसान हो गए हैं तो एक साँझ मैंने उसे अपने कमरे में बुलाया। इसी कमरे में और करीब-करीब इसी समय। यह कुछ ही दिन

पहले की बात है। मेरा चपरासी बहुत समझदार है। इससे किसी किस्म की चिन्ता मुझे नहीं थी।

हेमन्त

फिर ?

सदानन्द

कमला से मैंने इस तिपाई पर रखे टाइप राइटर से एक चिट्ठी टाइप करने को कहा।

हेमन्त

तभी मैं यह देख कर हैरान हुआ था कि इतने बड़े अफसर के कमरे में टाइप राइटर क्यों रक्खा हुआ है। उसके बाद ?

सदानन्द

कमला इस स्टूल पर आकर बैठ गई। यहीं, ठीक इसी जगह। इस जगह बैठकर वह टाइप करने लगी। मैं एकाएक उठ खड़ा हुआ और धीरे-धीरे उसके पीछे जाकर खड़ा हो गया। मैं क्रमशः उस पर झुका। मुझे मालूम नहीं कि कमला को कुछ भी ज्ञात हुआ या नहीं, पर धीरे-धीरे मैं अधिक-अधिक झुकता चला गया। जाहिर में कमला ने कुछ भी नहीं कहा। वह उसी तरह टाइप करती रही। धीरे-धीरे मैं उसके सिर पर झुका। धीरे-धीरे मेरा शरीर उसकी पीठ से स्पर्श करने लगा, पर कमला उसी तरह टाइप करती रही।

हेमन्त

उसके बाद ?

सदानन्द

मालूम नहीं मैं कितनी देर तक उसी तरह झुका रहा। उसके बाद मैंने पुकारा—“कमला ! कमला !!” उसने पीछे की ओर घूम कर मेरी ओर देखा। उसकी आँखें मेरी आँखों से मिलीं। ओह हेमन्त, वैसी पवित्र दृष्टि मैंने अपने जीवन में आज तक नहीं देखी थी। साहित्य में मेरी रुचि कभी

नहीं रही । पर उस दिन कमला की आँखों में जैसे मैं आदि-कवि वाल्मीकि का पूरा काव्य पढ़ गया ! उन आँखों में मेरे प्रति इतना अगाध विश्वास भरा हुआ था कि जैसे वे समुद्र को भी एक चुनौती दे सकती हों । और मेरे लिए तो वे सचमुच ही एक चुनौती थीं ।

हेमन्त

किस तरह की चुनौती ?

सदानन्द

यही, कुछ इस तरह कि जैसे कमला मुझसे कह रही हो कि मुझे आप पर पूरा विश्वास है । आप जो कुछ भी करेंगे, वह कभी अनुचित न होगा !” मैंने कहा—“कमला खड़ी हो जाओ ।” वह खड़ी हो गई । मैंने कहा—“कमला, मुंह ऊपर करो !” उसने अपना मुंह ऊपर उठा दिया और मेरी तरफ़ देखा । उसकी निगाह ने जैसे मुझे कँपा दिया । इससे मैंने कहा—“कमला, आँखें नीची करो !” कमला ने आँखें नीचे की ओर झुका लीं । मैंने कहा—“कमला, तुम बहुत अच्छी हो !” कमला के चेहरे पर मुसकरा-हट का प्रकाश फैल गया । मैंने कहा—“तुम खुश तो हो कमला ?” कमला ने कहा—“आपकी छत्रछाया में आकर मैं बहुत खुश हूँ !” मेरा सम्पूर्ण हृदय झनझना उठा । अनायास ही मेरे मुँह से निकला—“वह किस लिए ?” मेरे इस प्रश्न के उत्तर में कमला ने अत्यन्त शान्त स्वर से कहा—“आपको पाकर जैसे मैं दुबारा अपने पिताजी को पा गई हूँ ! मेरे पिताजी भी मुझे बहुत प्यार करते थे ।” और मैंने पाया कि मोती से दो बंद कमला की आँखों से निकले और धीरे-धीरे नीचे की ओर बह चले !

हेमन्त

आप इतने भावुक होंगे, यह मैंने कभी कल्पना भी नहीं की थी ।

सदानन्द

मैं भावुक कहाँ हूँ हेमन्त । मगर आखिर इन्सान हूँ, पत्थर नहीं हूँ ।

हेमन्त

मैंने सुना था कि भक्त लोग पत्थर को भी भगवान बना लेते हैं।
आप तो फिर इन्सान हैं।

सदानन्द

और तुम ?

हेमन्त

“ मैं शक्ति का पुजारी हूँ। यह दुनिया कमजोरों के लिए नहीं है।
दया, ममता, करुणा—इन सबको मैं कमजोरी मानता हूँ। शक्ति की
स्थिति, प्रमाण और निरन्तरता के लिए मैं हिंसा और अपहरण को अपरि-
हार्य मानता हूँ। ”

सदानन्द

तुम इन्सान नहीं हो हेमन्त, तुम शंतान हो !

हेमन्त

(मुस्करा कर) मेरा मुन्दी यहाँ न हुआ। नहीं तो वह जवाब देता :
'हज़ूर, मैं तो आपका बच्चा हूँ।'

सदानन्द

अच्छा, छोड़ो इन बातों को। कौन-सी बड़ी जरूरत तुम्हें यहाँ खींच
कर लाई थी ?

हेमन्त

तम्बाकू कम्पनी वाला केस एकाएक बहुत पेचीदा बन गया है साहब।
स्थिति बहुत नाज़ुक प्रतीत हो रही है।

सदानन्द

भई, तुम्हारी यह तम्बाकू कम्पनी शुरू ही से इतनी पेचीदा है कि उस
में पेचीदापन के बढ़ने की गुंजाइश ही कहाँ है ? झूठे हिस्सों की बिक्री,
हिस्सों की बदली, झूठ-मूठ के बेबुनियाद कामों के लिए बड़े-बड़े ठेके लेकर

अपना हिस्सा पहले ही नक़द वसूल कर उन्हें आगे बेच देना—ये सब काम तुम्हारी यह तम्बाकू कम्पनी करती रही है। मुझे सभी कुछ मालूम है। पर मेरा ख्याल था कि तुम्हारे जैसा चालाक आदमी कभी कानून की पकड़ में नहीं आएगा। अब बात क्या हुई ?

हेमन्त

नौ महीना पहले हम लोगों ने एक काल्पनिक व्यक्ति को जन्म दिया था।

सदानन्द

(चौंक कर) काल्पनिक व्यक्ति को ! इस काल्पनिक व्यक्ति की तुम्हें क्या जरूरत पड़ गई ? खास तौर से उस दशा में जब हत्या और डकैती तक के लिए भी वास्तविक व्यक्ति यहाँ मिल जाते हैं।

हेमन्त

पर इन वास्तविक व्यक्तियों को हिस्सा देना होता है साहब। उस पर जान हर वक़्त सांसत में रहती है, क्योंकि उन्हें आपका रहस्य मालूम होता है और जब चाहे वे ब्लैकमेलिंग तक कर सकते हैं।

सदानन्द

तुम्हारी सूझ की मैं दाद देता हूँ हेमन्त। अच्छा तो मैं समझ गया। इस काल्पनिक व्यक्ति को तुमने इस तम्बाकू कम्पनी का मेन्जेटरी बना दिया। उसी के नाम से तुमने कितने ही अवैध काम किए। और तुम पर किसी को शक तक नहीं गुज़रा। ठीक है न ?

हेमन्त

बिल्कुल ठीक। पर अब मालूम होता है कि सरकार को इस बात का न केवल ज्ञान हो गया है, बल्कि इस बात का कोई प्रमाण भी सरकार को मिल गया है।

सदानन्द

तो फिर अब तुम क्या करना चाहते हो ?

हेमन्त

इसीलए तो मैं आपकी सेवा में उपस्थित हुआ हूँ।

सदानन्द

आखिर तुमने कोई उपाय तो सोचा ही होगा।

हेमन्त

सोचा तो था। पर अब वह उपाय आप से निवेदन करने की हिम्मत नहीं हो रही।

सदानन्द

वह क्यों ?

हेमन्त

यहाँ आकर पता चला कि परिस्थिति एकदम बदल गई है।

सदानन्द

मैं तुम्हारी बात ख़ाक नहीं समझा। अब तुम पहेलियों में बात करने लगे। अरे भाई, हम से सीधी-सादी और साफ़ ज़बान में बात करो।

हेमन्त

तो सुनिए। हमारी कम्पनी के इस कल्पित सेक्रेटरी का नाम था 'कमल'। आज एकाएक मुझे ख़्याल आया कि 'कमल' और 'कमला' में कुछ अधिक फ़र्क नहीं है।

सदानन्द

तुम इतने कमीने हो यह मैंने कभी ख़्वाब में भी न सोचा था। आखिर तुम चाहते क्या हो ? २३ साल की एक लड़की तुम्हारी इस चालबाज़ तम्बाकू कम्पनी की सेक्रेटरी थी, इस बात पर कौन भलामानस विश्वास करेगा ?

हेमन्त

कोई विश्वास करे या न करे—इससे हमारा क्या आता जाता है ! हमें तो कानून का पेट भरना है। बस, उसके इधर-उधर क्या हो रहा है,

यह सब जानना हमारे लिए निरर्थक है। और फिर आज की दुनिया को तो कोई चौंकाने वाली खबर चाहिए। अस्वाभाविक और अजीब लगने वाली बातों पर दुनिया और भी जल्दी विश्वास करती है।

सदानन्द

मगर नाम की इस ज़रा-सी समानता से तुम इतनी बड़ी-बड़ी स्कीमें कैसे बना रहे हो हेमन्त ?

हेमन्त

जी, पहले मेरी योजना तो सुन लीजिए।

सदानन्द

क्या है तुम्हारी यह सब से ताज़ी शैतानी-योजना ?

हेमन्त

मेरी योजना यह है कि आज से ९ महीना पहले की तारीख डाल कर हमारी सिगरेट कम्पनी की ओर से कमला जी को एक नियुक्ति पत्र दिया जाए, जिसके अनुसार वह उक्त तारीख से १००० रुपए मासिक पर कम्पनी की सेक्रेटरी नियत हों। यह पत्र मैं तैयार करवा कर साथ ही लाया हूँ।

(अपने पोर्टफोलियो केस से टाइप किए हुए तीन पत्र निकालता है।)

हेमन्त

यह रहा उनका नियुक्ति पत्र और यह रहा उनका स्वीकृति पत्र।

सदानन्द

और यह तीसरा पत्र कैसा है ?

हेमन्त

यह तम्बाकू कम्पनी की सेक्रेटरीशिप से कमला जी का त्यागपत्र है। इस पर आज से ३ महीना पहले की तारीख पड़ी हुई है।

सदानन्द

(क्रोध से) मैं यह सब हरगिज़ न होने दूंगा।

(हेमन्त शीघ्रता से तीनों कागज़ पोर्टफोलियो केस में डाल लेता है।)

हेमन्त

इसी लिए तो मैंने पहले ही माफ़ी भी माँग ली थी साहब ।

सदानन्द

(और भी अधिक क्रोध से) तुम परले दर्जे के बेईमान और शैतान हो । मेरे जी में आ रहा है कि तुम्हें जूते मार कर यहां से निकाल दूँ ।

हेमन्त

यह भी आजमा लीजिए, साहब ।

सदानन्द

(ज़रा संयत होकर) ओह ! (कुर्सी पर बैठ जाता है ।)

हेमन्त

तो फिर हमारी हिस्सेदारी आज से समाप्त हाती है । सेठ रामकिशोर से कल ही एक बड़ी रकम मैं आपके पास भिजवा रहा था । पर अब जाने दीजिए ।

सदानन्द

हाँ, हाँ, मुझे तुम्हारे जैसे कमीने आदमी से एक कौड़ी भी नहीं चाहिए !

हेमन्त

तो अब मेरी और आपकी राह अलग-अलग है ।... (क्षण भर चुप रह कर, धीमी आवाज़ में) मगर राह अलग कैसे हो सकती है ? मेरे सम्बन्ध में जाँच-पड़ताल हो ही रही है । मैं बहुत जल्द जेल चला जाऊँगा । मेरे बाद मेरे सभी कामों के सम्बन्ध में छानबीन होगी । आप भी उससे बच कहाँ पाएँगे ? उम्मीद यही है कि देर-सबेर आप भी वहीं पहुँचेंगे, जहाँ मैं आप से पहले भेज दिया जाऊँगा । जेल ! भगवान कृष्ण की जन्मभूमि ! महात्मा गांधी का पुण्यागार ! जेल जाने में बुराई ही क्या है ? मगर साहब, आप तो काँपने लगे !

सदानन्द

बस, बस ! बहुत हुआ । मैं चाहूँ तो इसी वस्तु तुम्हें पुलिस के हवाले कर सकता हूँ !

हेमन्त

तो फिर कर क्यों नहीं देते ! मैं मना कब करता हूँ !

(कुछ क्षण सन्नाटा रहता है।)

सदानन्द

यह सब ठीक नहीं हो रहा । मुझे गुस्सा आ गया था ।...मैं बहुत उद्विग्न हो गया हूँ !

हेमन्त

माफ़ कीजिए । आपकी भावुकता का मैं खूब समझता हूँ । आप भावुकता का शिकार हो गए हैं । मैंने कहा था न कि भावुकता को मैं एक कमजोरी, बल्कि एक बीमारी मानता हूँ । मेरी राय से यह भी एक खतरनाक नर्वस बीमारी है ।

(सदानन्द चुप रहता है । क्षण भर की चुप्पी के बाद हेमन्त फिर से कहने लगता है।)

हेमन्त

अगर सिकन्दर भावुक होता तो इतना बड़ा साम्राज्य न बना पाता, अगर नैपोलियन दया-माया का शिकार होता तो मास्को तक न पहुँच पाता ।

सदानन्द

(एकाएक मुसकरा उता है) मैं तुम्हारा लोहा मान गया हेमन्त । पर भलेमानस, उस छोटी-सी लड़की को फँसाने की राय मैं तुम्हें कभी न दूँगा ।

हेमन्त

मैं उसे फँसाना कब चाहता हूँ साहब । कमला को उन ६ महीनों के लिए सिगरेट कम्पनी का सेक्रेटरी बनाकर मैं इसी वस्तु उसे ६००० रुपया नकद दूँगा । बस, और तो कुछ भी नहीं ।

सदानन्द

मुझे बहलाने की कोशिश मत करो। क्या तुम कहना चाहते हो कि उन ६ महीनों के लिए तुम्हारी खतरनाक कम्पनी के सेक्रेटरी का पद स्वीकार कर कमला कोई खतरा मोल नहीं ले रही ?

हेमन्त

नहीं, यह बात तो नहीं है। खतरा जरूर है। पर कोई बड़ा खतरा नहीं है। जाँच कमीशन भी यह समझ जाएगा कि २३ साल की लड़की स्वयं कोई बड़ी जालसाजी नहीं कर सकती। और अगर कुछ हो भी गया तो आप और मैं किस मर्ज की दवा हैं ? और फिर इस उम्र प्रेम-व्रेम के चक्कर में पड़ कर अपने को खतरे में डाल लेना कहां की समझदारी है ?

सदानन्द

तुमसे पार पाना बहुत कठिन है हेमन्त।

हेमन्त

मैं तो सिर्फ आपका भला चाहता हूँ साहब। हमारी कम्पनी अगर जाँच कमीशन की मुसीबत से बच गई, तो मैं कम-से-कम एक लाख रुपया आपको दूँगा। पर उसके लिए आपको हमें खुले दिल से पूरी मदद देनी होगी। और हाँ, सेठ रामकिशोर से बाकी रकम भी वसूल हो गई है। आपको यह जानकर खुशी होगी कि आपके लिए मैंने उससे २५ हजार और भी वसूल कर लिए हैं।

(सदानन्द बहुत प्रसन्न दिखाई देने लगता है।)

सदानन्द

अच्छा भाई हेमन्त। कमला को मैं यहाँ बुलाता हूँ। पर, तुम बीच में बिल्कुल मत बोलना। मैं ही उससे बातचीत करूँगा। उसे ६००० रुपया तुम इसी वक़्त अदा कर दोगे। और यह तुम्हारा वायदा रहा कि कमला पर किसी तरह की आँच न आने पाएगी।

हेमन्त

देखिए साहब ! मैं खरा आदमी हूँ। आँच की बात तो मैं नहीं कहता। पर किसी तरह की कोई बड़ी मुसीबत में कमला पर नहीं आने दूँगा। यह मेरा वायदा रहा।

सदानन्द

ठीक।

(भीतर का टेलीफोन उठाकर)

कमला, कुछ देर के लिए यहाँ आ जाओ।...कुछ भी साथ लाने की जरूरत नहीं।...हाँ, हेमन्त जी अभी यहाँ ही हैं।

(रिसीवर रखकर माथे पर से पमीना पोंछता है और भेदती-सी दृष्टि से हेमन्त की ओर देखता है, जो मिर झुकाए चुपचाप बैठा है।)

(मुस्कराती हुई कमला का प्रवेश)

सदानन्द

आओ कमला, यहाँ बैठ जाओ।

कमला

(बैठकर) धन्यवाद।

सदानन्द

मैं बहुत दिनों से सोच रहा था कि तुम्हारे पास अपनी एक छोटी गाड़ी जरूर होनी चाहिए। दफ्तर से घर जाने में तुम्हें प्रायः देर हो जाती है। मैंने उसका कुछ इन्तजाम किया है।

कमला

आपकी कृपा है। गाड़ी की जरूरत तो मैंने कभी अनुभव नहीं की।

सदानन्द

बात यह है कि श्री हेमन्त की एक सिगरेट कम्पनी है। इस कम्पनी के

सेक्रेटरी का वेतन १००० रुपया महीना था। इस साल के शुरू से इन्होंने अपना कोई सेक्रेटरी नहीं रखा था। पर अब कुछ ऐसी जरूरत आ पड़ी है कि उन दिनों कम्पनी के कागजों और रजिस्ट्रों पर किसी सेक्रेटरी के दस्तखतों के बिना सारी कम्पनी मुसीबत में पड़ सकती है। अगर तुम्हें कोई एतराज न हो, तो उन ६ महीनों के लिए यह तुम्हें इस कम्पनी के सेक्रेटरी पद का नियुक्ति पत्र दे देंगे। तुम्हें ६००० रुपया इसी समय दे दिया जाएगा और अब से ३ महीना पहले की तारीख से इस सिगरेट कम्पनी से तुम्हारा त्यागपत्र भी ले लिया जाएगा।

कमला

मैं यह सब कुछ नहीं समझती। मुझे रुपया भी नहीं चाहिए। फिर भी अगर आप आज्ञा दें तो मैं चाहे जितनी जगह और जिस हैसियत से आँख मूंद कर हस्ताक्षर करने को तैयार हूँ।

(सदानन्द का चेहरा बहुत गम्भीर हो जाता है, वह कुछ विचलित होने लगते हैं, पर बड़ी कठिनता से अपने में किसी तरह का परिवर्तन नहीं आने देते। उधर हेमन्त के चेहरे पर हँसी झलकने लगती है, जिसे वह कठिनता से रोक पाता है।)

सदानन्द

नहीं, नहीं। अगर तुम न चाहो तो बेशक इस झमेले में मत पड़ो।

हेमन्त

कमला बहन, साहब तो यह सब सिर्फ तुम्हारे भले के लिए कह रहे हैं।

(सदानन्द हेमन्त की ओर आग्नेय दृष्टि से देखता है।)

कमला

तो बताइए, मुझे कहाँ-कहाँ हस्ताक्षर करने होंगे?

(हेमन्त शीघ्रता से तीनों कागज पोर्टफोलियो केस से बाहर निकालता है।)

सदानन्द

अभी ठहरो हेमन्त। कमला को पूरी बात समझा देना तुम्हारा कर्तव्य है।

कमला

मैं कुछ भी समझना नहीं चाहती। कम्पनियों की ये पेचीदा बातें मेरी समझ में आएँगी भी नहीं। मुझे तो आपकी आज्ञा चाहिए।

(सदानन्द अभी मोच ही रहा होता है कि इस सम्बन्ध में क्या सलाह कमला को दे कि हेमन्त तीनों कागज़ कमला की ओर बढ़ा कर कहता है।)

हेमन्त

बस, कृपया, इन तीन कागज़ों पर हस्ताक्षर कर दीजिए। इनमें से दो आपके नियुक्ति पत्र से सम्बद्ध हैं और एक आपका कम्पनी से त्यागपत्र है।

(कमला हस्ताक्षर कर देती है और हेमन्त सौ-सौ रुपयों के सौ नोट कमला की ओर बढ़ाता है।)

हेमन्त

यह १०,००० रुपया है। इसमें ६,००० आपकी उन ६ महीनों की तनख्वाह है और ४००० कार खरीदने के लिए उधार। इस उधार की रसीद देने की आवश्यकता नहीं है।

कमला

मुझे माफ़ कीजिए। मुझे यह रुपया नहीं चाहिए।

हेमन्त

(सदानन्द से) साहब, अब आप ही कमला बहन को समझाइए कि यह रुपया वह स्वीकार कर लें।

सदानन्द

(धीमे स्वर से) यह रुपया अपने पास रख लो कमला । कार न भी खरीदनी हो, तो भी बैंक में अपने नाम से हिसाब खोल देना ।

कमला

(अत्यन्त विनय भाव से) मुझे यह रुपया छूते हुए भी डर लगता है ।

सदानन्द

तुम समझती नहीं हो कमला । उन छः महीनों के लिए, चाहे कागजी तौर से सही, कम्पनी की सेक्रेटरीशिप स्वीकार कर तुमने इन पर बहुत बड़ा उपकार किया है । यह रुपया उसी की कीमत है ।

कमला

मेरे पड़ौस में एक छोटा-सा टिन शेड है । इसमें पास पड़ौस के शरणार्थी बच्चे जमा होते हैं और एक दूसरे की मदद से पढ़ने-लिखने का प्रयत्न करते हैं । सिर्फ एक गरीब-सी अध्यापिका वहाँ आती हैं, जो बड़े लड़कों को पढ़ाती है । वे बड़े लड़के अपने से छोटों को पढ़ाते हैं, और वे अपने से छोटे बच्चों को । अगर यह रुपया आपके काम का न हो, तो मैं आपसे अनुरोध करूँगी कि यह रकम आप उसी स्कूल को दान कर दें ।

हेमन्त

अब यह आपका रुपया है । आप चाहें, जिस तरह इसका इस्तेमाल कर सकती हैं । अगर आप चाहें तो इसे दान भी दे सकती हैं ।

(कमला उसी तरह खड़ी रहती है । नोटों को वह हाथ भी नहीं लगाती । हेमन्त नोट टेबल पर रख देता है ।)

सदानन्द

यह रुपया मेरे पोर्टफोलियो केस में रख दो कमला । तुम्हारी इच्छा के अनुसार यह रुपया उसी स्कूल को भेज दिया जाएगा ।

(कमला अनमने भाव से पास ही रक्खा सदानन्द का पोर्टफोलियो

केस उठा लाती है और उसमें धीरे-धीरे नोट रखती जाती है। सदानन्द क्षण भर यह दृश्य देखता है और उसके बाद ज़रा दूर हटकर अपनी उद्विग्नता छिपाने के लिए रेडियोग्राम को छेड़ने लगता है। कुछ ही क्षणों में रेडियो से आवाज़ आने लगती है। सदानन्द चौंककर खड़ा हो जाता है। उसके मंह से आप ही आप निकलता है।)

सदानन्द

ओह ! यह तो प्रधानमन्त्री^१ साहब बोल रहे हैं !

(आप ही आप सदानन्द दोनों पैर मिलाकर सावधान रूप में खड़ा हो जाता है। उसका दायाँ हाथ सैल्यूट के लिए ज़रा-सा उठकर नीचे चला जाता है। उधर हेमन्त कमला को घूर रहा है, जैसे उसके आन्तरिक भावों को पढ़ने का प्रयत्न कर रहा हो। रेडियो से मुनाई देता है। प्रधानमन्त्री^१ बोल रहे हैं--)

“सरकारी पैसा हिंदोस्तान के गरीब किसान की जेब का पैसा है ! भारत के किसान पसीना बहाकर जो कमाते हैं, वही टैंक्स वगैरह के रूप में हमारे पास आता है और हम उसे खर्च करते हैं। हम सैंकड़ों-करोड़ों रुपए इसीलिए खर्च कर रहे हैं कि हम उस गरीब किसान को लाभ पहुँचाना चाहते हैं। अपना पेट काट कर और हजार बातों में कमी करके हम यह पैसा खर्च कर रहे हैं। इसलिए कि बाद में लाभ हो। लेकिन यह एक गरीब देश के गरीब निवासियों का पैसा है। इस पैसे को खर्च करते हुए हमें यह ख्याल हमेशा रखना चाहिए कि इस रकम का एक पैसा भी जाया न हो। हर एक शस्त्र को, जो सरकारी मुलाजिम है, सोचना चाहिए कि आखिर यह पैसा गरीबों की जेब से आता है।”

(रुपये रखकर पहले कमला ध्यान से उक्त भाषण सुनने लगती है और

१. प्रधानमन्त्री के इस भाषण का पूरा रिकार्ड आकाशवाणी दिल्ली के पास विद्यमान है।

बाद में हेमन्त का ध्यान भी उधर जाता है। हेमन्त के चेहरे पर पहले अवज्ञा का भाव आता है और फिर खिज का। यह खिज इतनी बढ़ जाती है कि वह तेज़ी से आगे बढ़कर रेडियो का स्विच बन्द कर देता है।)

(परदा गिरता है।)

दूसरा अंक समाप्त

साठ दिन बाद

तोसरा अंक

स्थान—हेमन्त की बैठक

समय—एक तूफानी और बरसाती रात ।

(पहले अंक में वर्णित हेमन्त की वही बैठक । अन्तर केवल इतना ही है कि उसकी सज्जा बदल दी गई है । सोफा सेट के आचरण और कमरे के पर्दे भी बदल दिए गए हैं । उनके रखने का ढंग भी बदल दिया गया है । बाई दीवार के बीचोंबीच पहले अंक में जो बन्द खिड़की थी, वह इस समय खुली हुई है और उस का परदा भी एक तरफ को हटा दिया गया है । जब परदा उठता है तो हेमन्त उद्विग्न भाव से इसी खिड़की के पास खड़ा दिखाई देता है । उसके बाल अस्त-व्यस्त हैं और वह खिड़की के बाहर के अन्धकार की ओर देख रहा है । वह खुले गले का लग्नवी कुर्ता और खुले पहुँचे का पाजामा पहने है । पैरों में सफ़ेद पेशावरी चप्पल हैं । आसमान बादलों से घिरा है । बिजली की चमक दिखाई देने के बाद बादलों की गरज सुनाई दे रही है । परदा उठने के २, ३ क्षणों के बाद हेमन्त के परेशान चेहरे पर बिजली की चमक का तेज़ प्रकाश पड़ता है और उसके बाद बादल की ऊँची गरज सुनाई देती है । क्षण भर बाद तेज़ हवा के साथ वर्षा का एक झोंका उसके चेहरे पर पड़ता है । हेमन्त शीघ्रता से खिड़की बन्द कर देता है और उसके सामने का पर्दा खींच देता है । उसके बाद धीरे-धीरे चलकर वह बैठक के मध्य तक आ पहुँचता है और आवाज़ देता है)

हेमन्त

मुन्शी जी !

(दफ़्तर की मेज़ के पीछे का चोर दरवाज़ा खोलकर मुन्शी जी शीघ्रता से बाहर आते हैं ।)

मुन्शी

जी, मैं हाज़िर हूँ।

हेमन्त

कहाँ जा छिपे थे ?

मुन्शी

आप ही ने तो कहा था कि मुझे अपना मुंह मत दिखाओ !

हेमन्त

मुझे उसके लिए खेद है मुन्शीजी ! पर मेरी परेशानी आप नहीं समझेंगे तो और कौन समझेगा ?

मुन्शी

जी, मैं तो आपका बच्चा हूँ !

हेमन्त

(मुस्करा कर) अब ठीक है ! मैं घबराया तो तब था, जब मैंने पाया कि आप भी गम्भीर हो गए हैं। जिसका अर्थ है कि बस, अब सब तरफ़ अंधेरा ही अंधेरा है !

मुन्शी

मैं देख रहा हूँ, जब से अमरसिंह आया, आप बहुत परेशान नज़र आ रहे हैं। ये पुलिस वाले जहाँ भी जाते हैं, अपनी मनहूसियत साथ ले जाते हैं। क्या कहता था यह अमरसिंह ?

हेमन्त

वही सब बताने के लिए तो मैंने आपको बुलाया है मुन्शी जी ! (गम्भीर होकर) अमरसिंह कहता था कि मेरे विरुद्ध पुलिस को इतने प्रमाण मिल गए हैं कि कल सुबह सूर्य निकलने से पहले ही पुलिस मुझे गिरफ्तार कर लेगी।

मुन्शी

यहाँ तक !

हेमन्त

हाँ, यहाँ तक ! उसने बताया कि मेरे विरुद्ध जो यह सब कुछ हो रहा है, उसके पीछे कोई बहुत बड़ा व्यक्ति है। वह कौन है, इस सम्बन्ध में पुलिस भी अभी तक कुछ नहीं जानती।

मुन्शी

तो अब क्या करने का निश्चय किया है आपने ?

हेमन्त

इतनी देर से मैं यही सब तो सोच रहा हूँ। कुछ ऐसा चक्कर चला है कि इस मामले को जितना ही सुलझाने की कोशिश करता हूँ, उतना ही यह उलझता चला जा रहा है। मैंने कुछ कोशिश तो की है। पर मालूम नहीं कि बाज़ी चित पड़ेगी या पट। हैड या टेल—अभी कहना कठिन है।

मुन्शी

कैसी बाज़ी ?

हेमन्त

कुछ ही देर हुई, मैंने राजीव को टेलीफ़ोन किया था कि वह इसी समय मेरे पास आ जाए। उसने पूछा—“क्या बात है ?” मैंने कहा, “बस, बहुत जरूरी काम है।” उसने पूछा—“क्या काम ?” मैंने कहा—“यहाँ आने पर ही बताऊँगा।” उसने दुबारा पूछा, तब भी मैंने इन्कार कर दिया। इस पर उसने खिजकर टेलीफ़ोन का सम्बन्ध ही काट दिया।

मुन्शी

यह तो अच्छा नहीं हुआ साहब।

हेमन्त

अब मैं भी यही सोच रहा हूँ कि शायद अच्छा नहीं हुआ। पर अब भी मुझे विश्वास है कि राजीव यहाँ आएगा। वह एक बार यहाँ आ जाए, तो मुझे विश्वास है कि इस गोली और अंधेरी रात के ८ घंटों में बिगड़ी हुई बाज़ी फिर से बना ली जा सकती है।

मुन्शी

आखिर आप क्या करने की सोच रहे हैं साहब ?

हेमन्त

तुमने कभी चाणक्य का नाम सुना है मुन्शी जी ?

मुन्शी

वही जो अशोक होटल के पास है ?

हेमन्त

वह तो उसकी यादगार है मुन्शी जी । चाणक्य एक बड़ा समझदार आदमी था ।

मुन्शी

मगर इस समय वह आपको कैसे याद आ गया ?

हेमन्त

चाणक्य ने कहा है—“विषस्य विषमौषधम् !” अर्थात् जहर का इलाज भी जहर ही है ।

मुन्शी

वह कोई बहुत बड़ा हकीम रहा होगा साहब ।

हेमन्त

बहुत ठीक समझे आप ! उसने यह भी कहा है—“कण्टकेनैव कण्टकम् !” अर्थात् कांटे को कांटे ही से निकाला जाता है ।

मुन्शी

(बड़ी चिन्ता के साथ हेमन्त की ओर देखकर) आप बहुत थक गए हैं साहब ! बरफ़ की टोपी ले आऊँ ?

हेमन्त

(मुस्करा कर) अभी मैं पागल नहीं हुआ, मुन्शी जी !

(इसी समय सहन में एक कार के आने और रुकने की आवाज़ आती है ।)

हेमन्त

(धीरे से) मुन्शी जी ! आप इसी क्षण भीतर के कमरे में जाकर छिप जाइए। बस, यह समझ लीजिए कि आज रात इस घर में मेरे सिवा और कोई मौजूद नहीं है। समझे ?

(मुन्शी शीघ्रता से चोर दरवाजे द्वारा भीतर चला जाता है। क्षण भर के इस सन्नाटे के बीच दरवाजे पर खटखटाहट सुनाई देती है।)

हेमन्त

(आगे बढ़कर दरवाजा खोलते हुए) भीतर आ जाइए राजीव भाई !

(उमा का प्रवेश। अप्रत्याशित रूप से एकाएक बहन को देखकर हेमन्त घबरा जाता है। परन्तु बहुत शीघ्र अपनी घबराहट पर नियन्त्रण पाकर वह कहता है।)

हेमन्त

तुम ! इस वस्तु एकाएक तुम यहाँ कैसे चली आई बहन ? राजीव भाई कहाँ हैं ?

उमा

मुझे जरा आराम से बंठ तो लेने दीजिए। आप इतने घबराए हुए क्यों हैं भैया ?

हेमन्त

यों तो हम सबों को पचास तरह की चिन्ताएँ रहती हैं। मगर मैं घबराने वाला कहाँ हूँ उमा ?

उमा

तो इतनी घबराहट के साथ अपने बहनोई को टैलीफोन क्यों किया था ?

हेमन्त

(जरा आश्वस्त होकर) बस, तुम इतनी-सी बात से चिन्तित हो उठीं ! अच्छा, अब बंठो तो सही। मुझे खेद है कि इस वस्तु में तुम्हारी कोई खातिर नहीं कर सकूंगा।

उमा

(बैठ कर) नौकर-चाकर सब चले गए क्या ?

हेमन्त

इस आँधी-पानी के दिन मैंने उन्हें यहाँ रोकना मुनासिब नहीं समझा । राजीव भाई कहाँ हैं उमा ?

उमा

देखो भैया, आपका चेहरा देख कर मैं कह सकती हूँ कि आप किसी भारी मुसीबत में फँस गए हैं । मुझ पर विश्वास करो भैया ! मुझे सभी कुछ बता दो ।

हेमन्त

क्या पागलपन की बातें करती हो उमा । आखिर कोई बात भी हो !

उमा

मुझे अभी तक आप बच्चा समझते हैं भैया । आपके सुख-दुख में मैं साथ नहीं दूंगी तो और कौन साथ देगा ! मुझ पर विश्वास करो हेमन्त भैया ।

हेमन्त

(जबरदस्ती मुस्कराकर) आखिर तुम्हें यह शक किस बात से हुआ कि मैं मुसीबत में हूँ ?

उमा

आपके बहनोई कितने ठहरे हुए आदमी हैं । उनके चेहरे को देख कर कोई नहीं बता सकता कि उनके जी में क्या है । पर आपका टेलीफ़ोन आने के बाद से वह बहुत गम्भीर दिखाई दे रहे हैं ।

हेमन्त

बस, इतनी ही बात थी ! मैंने कहा तो, हम मर्दों को पचास तरह की ज़िम्मेदारियाँ उठानी पड़ती हैं । हर एक ज़िम्मेदारी के साथ बीसों तरह की चिन्ताएँ रहती हैं । तुम किस-किस में हाथ बँटाती फिरोगी ?

उमा

मैं यह सब कुछ नहीं समझती भैया ! मैं तो आज आप से एक अनुरोध करने आई हूँ ।

हेमन्त

कैसा अनुरोध ?

उमा

पिताजी की मृत्यु-शय्या के पास खड़े होकर आपने उन्हें वचन दिया था कि आप आजीवन कभी कानून का उल्लंघन नहीं करेंगे । अपना अनुरोध करने से पहले मैं आपको उस वचन की याद दिलाना चाहती हूँ ।

हेमन्त

तुम बड़ी भोली हो उमा ! मेरा यह दावा सदा से रहा है कि मेरा कोई काम कानून की सीमा से बाहर नहीं होता ।

उमा

आपके बहनोई आपके इस दावे को स्वीकार करते हैं या नहीं ?

हेमन्त

अब मैं उनके बारे में क्या कह सकता हूँ । नगर की कितनी ही प्रमुख संस्थाओं का मैं ज़िम्मेवार पदाधिकारी हूँ । समाज में मेरा सम्मान है । मेरे मित्रों की संख्या हज़ारों में है । अगर इस पर भी वह मुझे एक सम्मान-शील नागरिक नहीं समझते, तो मैं क्या कर सकता हूँ ?

उमा

आप उनसे इस वस्तु क्या बात करना चाहते थे ?

हेमन्त

(मुस्कराकर) मुझे कैबिनेट में जगह मिल रही है ! भैया की राय जानना चाहता था कि उसे मंजूर करूँ या नहीं !

उमा

मैं अब बच्चा नहीं हूँ भाई साहब, जो अभी तक आप मेरी हर बात को हंसी में ढालने की कोशिश करते हैं।

हेमन्त

तभी तो मैंने तुमसे कहा था बहन कि तुम इन बातों में दखल मत दो। यह बताओ कि राजीव भाई कहाँ हैं ?

उमा

वह यहाँ आने ही वाले हैं। उनके आने से पहले मैंने तुम से मिलना जरूरी समझा, सो एक टैंक्सी लेकर यहाँ चली आई।

हेमन्त

(गम्भीर होकर) तुम मेरी कितनी अच्छी बहन हो उमा।

उमा

(अनुनय से) अब मुझे वचन दो भैया।

हेमन्त

मैंने कहा न कि पिताजी के सम्मुख मैंने जो प्रतिज्ञा की थी, वह सदा मेरे ध्यान में रहती है। और कौन-सा वचन चाहती हो तुम ?

उमा

मैं आप से यह वचन माँगने आई हूँ भैया कि आज अपने बहनोई से कुछ भी नहीं छिपाओगे। ज़रूर भर बात भी उनसे नहीं छिपाओगे। यदि आप ऐसा कर सके तो मुझे विश्वास है कि वह आपको बड़ी से बड़ी मुसीबत से भी बचा लेंगे।

हेमन्त

(क्षण भर के लिए हेमन्त के चेहरे पर गहरी गम्भीरता छा जाती है। उसके बाद वह मुस्करा कर कहता है।)

तुम मेरी कितनी भली और कितनी भोली बहन हो उमा।

(उमा चुपचाप हेमन्त की आँखों में झाँकती रहती है। क्षण भर के बाद)

हेमन्त

“मनुष्य के जीवन की सबसे बड़ी ट्रेजेडी यही है कि वह खुद अपना सबसे बड़ा दुश्मन है ! अपने बनाए चक्रःयूह में वह इतना अधिक फँस जाता है कि समझते-बूझते भी उससे निकल नहीं पाता । ”

उमा

यह सब आप क्या कह रहे हैं भाई साहब ?

हेमन्त

तुम्हारा यह प्यार मैं कभी भूल नहीं सकूँगा बहन !

(इसी समय सहन में कार के आने और रुकने की आवाज आती है।)

उमा

वह आ गए हैं। इस मौके को हाथ से न जाने देना। यह तुम्हारी छोटी बहन का अनुरोध है भैया।

(हेमन्त आगे बढ़कर दरवाज़ा खोलता है। दरवाज़ा खुलते ही बिजली की तेज़ चमक का प्रकाश दिखाई देता है। इसी चमक में राजीव का प्रवेश। क्षण भर बाद हेमन्त के दरवाज़ा बन्द करते-न-करते बादल की ऊँची गरज सुनाई देती है।)

राजीव

तुम यहाँ आ गई ? मैं तुम्हें घर पर तलाश करता रहा। गाड़ी भी साथ नहीं लाई ?

उमा

जी किया मैं भैया से मिलने चली आई। अब तुम आ गए हो, तो मैं जा रही हूँ।

राजीव

आज यह कैसी तूफानी रात बनी हुई है हेमन्त भैया ! (उमा से) मुझे तुम्हारे भाई साहब से कुछ कामकाज की बातें करनी हैं। यहाँ बैठना न चाहो तो भीतर चली जाओ। थोड़ी देर में एक साथ ही घर चलेंगे।

उमा

नहीं जी ! मैं घर जा रही हूँ। वहाँ पहुँचते ही कार वापस भेज दूंगी। (उमा दरवाजा खोलती है तो गीली हवा का एक तेज झोंका भीतर आता है। उमा जैसे स्वगत कहती है) यह तूफान कभी चिरस्थायी नहीं होता ! (हेमन्त की ओर हाथ बढ़ाकर, जो उसके साथ-साथ दरवाजे तक आया है) मैं कल सुबह फिर आऊँगी भैया। उम्मीद है, तब तक बादल पूरी तरह छंट जाएँगे।

(हेमन्त बहन से हाथ मिला कर, धीरे-धीरे दरवाजा बन्द करता है, और राजीव के पाम आ बैठता है।)

राजीव

अच्छा हेमन्त भाई, अब तो बताइए कि वह अत्यन्त आवश्यक काम कौन-सा है, जिसके बारे में आप टेलीफोन पर कुछ भी कहने को तैयार नहीं थे ?

हेमन्त

मध्ययुग में यूरोप में अपराध स्वीकृति की जो संस्था थी, आज एका-एक मेरा उस पर विश्वास उत्पन्न हो आया।

राजीव

तो आप कौन्फ्रेंशन करना चाहते हैं ?

हेमन्त

बात तो कुछ ऐसी ही है।

राजीव

पर याद रखिए मैं पादरी नहीं हूँ। इससे जो कुछ अपराध स्वीकृति आप मेरे सामने करेंगे, मैं यह वायदा नहीं करता कि वह सब मैं पुलिस को नहीं बताऊँगा।

हेमन्त

मैं यह अपराध स्वीकृति किसी सौदेबाजी के लिए नहीं कर रहा। आप चाहे जिस तरह उसका उपयोग कीजिएगा।

राजीव

शाबाश !

हेमन्त

एक दिन आपने मुझ से पूछा था कि मेरा पेशा क्या है ? आज मैं उसका जवाब देता हूँ। मेरा पेशा है, बेईमान व्यक्तियों के लिए परमिटों का इन्तज़ाम करना, बेईमान और लालची व्यवसायपतियों को बड़े बड़े ठेके दिलवाना और यह सब मैं कर पाता हूँ, ऊँचे ओहदों पर विद्यमान कुछ बेईमान और विश्वासघाती अफसरों की सहायता से।

राजीव

मज़ाक मत कीजिए भाई साहब। आप तो हमारे समाज के लीडरों में हैं।

हेमन्त

आपको आश्चर्य क्यों हुआ भाई साहब ?

राजीव

इसलिए कि आप हमारे नगर के उन सम्मानित नेताओं में हैं, जिनके कन्धों पर हमारा आज का समाज टिका हुआ है।

हेमन्त

(मुस्करा कर) ओह, मुश्किल तो यह है कि आप बहुत जल्द यह समझ गए कि मैं आप से मज़ाक कर रहा हूँ !

राजीव

इस बरसाती अंधेरी रात में आपने मुझे यहाँ मज्जाक करने के लिए बुलाया है क्या ?

हेमन्त

यह बात नहीं है राजीव भाई ! पर मेरा ख्याल है कि आप मुझे सचमुच वही कुछ समझते हैं, जो अभी-अभी मैंने आपसे कहा था ।

राजीव

मैं क्या समझता हूँ और क्या नहीं, यह तो समय आने पर आप को स्वयं मालूम हो जाएगा । अभी तो आप वह बात बताइए, जिसके लिए आपने मुझे यहाँ बुलाया है ।

हेमन्त

(गम्भीर होकर) बात यह है राजीव भाई कि मैं एक बहुत बड़े धर्म-संकट में पड़ा हूँ ।

राजीव

धर्म-संकट कैसा ?

हेमन्त

मुझे जो तथ्य मालूम हैं, वे एक ऐसे व्यक्ति के विरुद्ध हैं, जो शायद मेरा सबसे घनिष्ठ मित्र है ।

राजीव

आपका यह घनिष्ठ मित्र कौन है ? मेरा तो ख्याल था कि संसार भर में आपका एक भी घनिष्ठ मित्र नहीं है ।

हेमन्त

मेरे इस घनिष्ठ मित्र का नाम है सदानन्द ।

राजीव

(चौंक कर) सदानन्द !

हेमन्त

आप चाहे विश्वास करें या न करें, मैं जो कुछ कहने जा रहा हूँ, वह सब अक्षरशः सत्य है।

राजीव

अच्छा रहिए।

हेमन्त

पिछले कुछ सालों से मेरे इस मित्र ने मुझ से ऐसे-ऐसे काम लिये हैं, जो सचमुच गंर कानूनी थे। अपना मित्र समझ कर, वह जो कुछ कहते गए, मैं करता चला गया। मुझे स्वप्न में भी ध्यान न था कि इतना बड़ा सरकारी अफ़सर इतना बेईमान होगा।

राजीव

आप इतने ही भोले हैं न ?

हेमन्त

यह भोलेपन या चालाकी की बात नहीं है राजीव भाई। उदाहरण के लिए श्री सदानन्द ने मुझ से कहा कि सरकार अमुक व्यवसाय के लिए सहायता देने को तैयार है। मैं अपने किसी अमीर जानकार को उनके पास ले गया। अब हज़रत ने न सिर्फ़ उससे बड़ी-बड़ी रिश्वत ली, बल्कि मुझे देने के नाम पर भी एक अच्छी-खासी रकम लूट ली !

राजीव

कोई सबूत है आपके पास ?

हेमन्त

जी हाँ जरूर। मैं समाज सेवा का काम करता हूँ, इससे कितनी ही नौजवान लड़कियाँ और लड़के काम-काज की तलाश में मेरे यहाँ आते रहते हैं। ३-४ महीने हुए, मैंने एक जवान शरणार्थी लड़की को श्री सदानन्द के पास भेजा था। वह सुन्दरी थी, इससे उन्होंने उसे अपना सेक्रेटरी बना लिया। जब इनकी उस पर अधिक मेहरबानी हुई, तो मुझसे उसे ६ हज़ार

रुपया किसी बहाने से नक़द दिलवा दिया। कहें तो मैं आपको उसके दस्त-
ख़त भी दिखा सकता हूँ।

राजीव

पर मैंने तो दूसरी ही बात सुनी थी।

हेमन्त

मैं तो सभी बातों के पक्के प्रमाण आपको दूंगा।

(शीघ्रता से ३ चिट्ठियाँ ड्रावर से निकाल ले आता है और कमला के हस्ताक्षर राजीव को दिखाता है।)

राजीव

हाँ, बात तो आपकी ठीक मालूम होती है भाई साहब ! २३ साल की एक नासमझ लड़की को सिगरेट कम्पनी का सेक्रेटरी कोई महामूर्ख ही बनाएगा।

हेमन्त

अभी तो कितने ही प्रमाण मैं आपको दूंगा राजीव भाई।

राजीव

(ज़रा गम्भीर होकर) शायद मैंने कभी आपको ठीक तरह नहीं समझा। मुझे इस बात का अफ़सोस है।

हेमन्त

अफ़सोस ? किस बात का अफ़सोस।

राजीव

वह सब अब जाने दीजिए।

हेमन्त

नहीं राजीव भाई ! आपको मेरी कसम। आप मुझसे कोई बात छिपा रहे हैं।

राजीव

बात यह है भाई साहब, कि हाल ही में मुझे इस बात के प्रमाण दिखाए गए थे कि आप कितनी ही गैरकानूनी कार्रवाइयाँ करते हैं। उनके आधार पर पुलिस आपको गिरफ्तार करना चाहती थी।

हेमन्त

(घबराहट का नाट्य कर) पुलिस मुझे गिरफ्तार करना चाहती थी ?

राजीव

कल प्रातः सूर्य निकलने से पूर्व ही आप गिरफ्तार हो गए होते। परन्तु अब वह नहीं होगा।

हेमन्त

(अत्यन्त आश्चर्य के साथ) आप क्या पुलिस विभाग में हैं ?

राजीव

(मुस्करा कर) नहीं भाई साहब ! आपको मालूम ही है कि मैं तो स्वतन्त्र व्यवसाय करता हूँ।

हेमन्त

(कुछ सोचकर) अगर पुलिस विभाग से आपका कोई भी सम्बन्ध है, तब तो मेरा काम बहुत अधिक आसान बन जाएगा।

राजीव

किस तरह का काम ?

हेमन्त

मेरे पास एक रजिस्टर है, जिसमें बीसों बेईमान सरकारी अफसरों के बारे में कितने ही तथ्य अंकित हैं। मैं तो इसी तलाश में था कि किसी विद्वस्त उच्च पुलिस अधिकारी को वह रजिस्टर दे दूँ।

राजीव

आपके रजिस्टर की बात भी मुझे मालूम है भाई साहब। अच्छा यही होगा कि आप वह रजिस्टर मुझे दे दें।

हेमन्त

आप चाहते हैं तो वह रजिस्टर कल में जरूर आपको दे दूँगा। इस समय वह घर पर नहीं है।

राजीव

हाँ, हाँ ! खूब अच्छी तरह सोच समझ कर कदम उठाइए भाई साहब। कोई काम जल्दी में करने की जरूरत नहीं है।

हेमन्त

आप बहुत बड़े देशसेवक हैं, राजीव भाई।

राजीव

अगर मैं अपनी अन्तरात्मा की आवाज़ सुन कर उस पर चल सकूँ, तो वही मेरे लिए बहुत होगा हेमन्त भाई। इसमें छोटे-बड़े का तो सवाल ही पैदा नहीं होता।

हेमन्त

आप मुझसे चाहते क्या हैं राजीव भाई ?

राजीव

यही कि आप जैसे समझदार व्यक्ति अगर कुछ समय तक देश पर मेहरबानी रखें तो बड़ा काम हो जाए।

हेमन्त

किस तरह की मेहरबानी ?

राजीव

हमारा यह विशाल देश एक बहुत बड़ी मानसिक बीमारी का शिकार है। यह अत्यन्त घातक बीमारी है, हमारे देश में गहरी भेद-भावना की विद्यमानता। कभी प्रान्त के नाम पर, कभी धर्म के नाम पर, कभी भाषा के नाम पर और कभी जात-पाँत के नाम पर हमारे देश के करोड़ों निवासी आसानी से बहका लिए जाते हैं। और तब वे आपस में ही लड़ने-झगड़ने

लगते हैं। इन बातों में उलझ कर देश की चिन्ता किसी को नहीं रहती। यहाँ तक कि बहुत से सरकारी अफसर भी इन्हीं कमजोरियों का शिकार हैं।

हेमन्त

(निरपेक्ष भाव से) पर यह सब आप मुझे क्यों सुना रहे हैं, राजीव भाई? मैं तो सरकारी अफसर नहीं हूँ।

राजीव

इसलिए आप जैसे समझदार लोग इन सरकारी अफसरों की सब तरह की कमजोरियों से नाजायज फायदा उठाने के लिए उनकी कमजोरियों को और भी अधिक उभारते हैं। भाई साहब, आप देखेंगे कि जो अफसर जितना अधिक नालायक या बेईमान है, वह अपनी कमजोरी छिपाने के लिए, अपने स्वार्थ के लिए, उतना ही अधिक प्रान्तीयता का, जात पात का, या धर्म का सहारा लेता है। मेरी राय से ये लोग देश के सबसे बड़े दुश्मन हैं।

हेमन्त

(चौकन्ना होकर) आज मेरी आँखों के सामने से जैसे पर्दा उठ गया !

(इसी समय सहन में कार के आकर खड़े होने की आवाज सुनाई देती है।)

राजीव

आँखों के सामने का पर्दा अब सदा के लिए उठ जाना चाहिए। बहुत देर हो गई। अब मैं चलता हूँ। मेरी कार भी आ गई।

(खड़ा हो जाता है।)

क्या मैं आशा करूँ हेमन्त भाई, कि आज की यह तूफानी अंधेरी रात आपके जीवन का एक मोड़ सिद्ध होगी ?

हेमन्त

मैं आपकी तरह महान नहीं हूँ, राजीव भाई।

राजीव

अच्छा, अब आप भीतर जाकर बिस्तर पर सो जाइए। आपको आराम की बहुत सख्त जरूरत है।

हेमन्त

(फोका-ता मुस्करा कर) मुझे अब करना ही क्या है ?

राजीव

(दरवाजे की ओर बढ़ते हुए)

वेद का एक मन्त्र आज न जाने क्यों मुझे बार-बार याद आ रहा है—

“विश्वानि देव सवितर्दरितानि परासुव । यद्भद्रं तन्न आसुव ॥”^१

हेमन्त

(नकली हंसी के साथ) बचपन में पिता जी ने यह मन्त्र जबरदस्ती मुझे भी याद करवाया था। बड़े होकर मैं तो सभी मन्त्र भूल गया। पर मुझे मालूम नहीं था कि आपका बचपन अभी तक जारी है !

राजीव

आप भूलते हैं हेमन्त भैया। पिता जी ने शायद आज ही के लिए यह मन्त्र आप को याद करवाया था।

हेमन्त

(गम्भीर हो कर) शायद आप ठीक कहते हों ! (आगे बढ़ कर दरवाजा खोलता है)

(बाहर की ओर देखकर) वर्षा तो बन्द हो गई।

राजीव

पर अभी तक बादल बाकी हैं !

(दोनों एक दूसरे को प्रणाम करते हैं। राजीव का प्रस्थान। हेमन्त

१. “सृष्टिकर्त्ता परमात्मा चारों ओर फैली हुई सब बुराइयों को दूर करे और जो कुछ भद्र है, वह हमें प्राप्त हो।”

वहीं खड़े रहकर कार के चले जाने की आवाज़ सुनता है और उसके बाद दरवाज़ा बन्द कर सीधा टेलीफ़ोन तक पहुँचता है। शीघ्रता से रिसीवर उठा कर वह एक नम्बर मिलाता है। क्षण भर बाद—)

हेमन्त

मैं हेमन्त बोल रहा हूँ।...नमस्कार। सदानन्द जी हैं?...क्या कहा, वह सो रहे हैं?...जी, उन्हें अभी जगा दीजिए। बहुत ज़रूरी काम है।...वही समझ सकेंगे।...ठीक। (क्षण भर बाद)...नमस्कार साहब, माफ़ कीजिएगा। मैंने आपको बेवस्त कष्ट दिया।...माफ़ कीजिएगा, मैं एक बहुत बुरी खबर आपको दे रहा हूँ।...आप के नाम गिरफ्तारी का वारण्ट है। बहुत बड़ा खतरा है।...हाँ, आप आ जाइए। इसी वस्त आ जाइए।...नहीं। मेरे यहाँ और कोई नहीं है। कोई नौकर-चाकर तक भी यहाँ नहीं है।...मैं इन्तज़ार में हूँ।

(रिसीवर रख देता है। उसके बाद वह चोर दरवाज़े के पास जाकर धीरे-धीरे उस पर दस्तक देता है। भीतर से मुन्शीजी की आवाज़ आती है।)

मुन्शी

क्या हुक्म है साहब?

हेमन्त

मुन्शीजी, इधर आ जाइए।

(मुन्शी बैठक में आ जाता है। वह कुछ घबराया हुआ-सा प्रतीत होता है। हेमन्त मुन्शी से बात करते हुए कुछ टाइप भी करने लगता है।)

हेमन्त

कहिए, कान लगाकर सभी कुछ सुन रहे थे न?

मुन्शी

आपकी कसम साहब! मैं तो सो रहा था। कैसी अच्छी रात है। ठंडी हवा चल रही है।

हेमन्त

बहुत ठीक ! अगर नहीं सुना तो मैं ही सभी कुछ बता देता हूँ ।

मुन्शी

हैं : हैं : हैं : जी, मैं तो आपका बच्चा हूँ !

हेमन्त

देखो मुन्शी जी, आखिर आज मुझे राजीव का रहस्य मालूम हो ही गया । प्रकृति भी कभी-कभी कितना मजाक करती है । कभी यही रहस्य जानना मेरे जीवन की सबसे बड़ी साध बन गई थी और आज वह रहस्य एकाएक ऐसे समय खुल गया है, जब मेरे लिए उसका अधिक महत्त्व ही नहीं रहा ।

मुन्शी

वह रहस्य क्या है ?

हेमन्त

मुझे पता चल गया है कि राजीव अब भी सरकारी अफसर है । वह जरूर ही होम मिनिस्टरी का कोई बहुत बड़ा अफसर होगा, जो खुफ़िया डंग से देश के सबसे बड़े व्यवसायियों में उठता-बैठता है ।

मुन्शी

क्या काम है उनका ?

हेमन्त

बस यही, हमारे जैसे भलेमानसों का शिकार । तुम्हारा वह कच्चे तम्बाकू वाला रजिस्टर उसके लिए हीरे-जवाहरों से भी बढ़कर कीमती है । कच्चे तम्बाकू की सभी तरह की किस्मों का वह सबसे बड़ा ग्राहक है !
(मुस्कराहट)

मुन्शी

जी, हमारा माल भी तो खरा है ।

हेमन्त

यह राजीव अपने को बहुत चालाक समझता था, पर मैंने अभी-अभी उसे वह बुत्ता दिया है कि सारी उन्न याद रखेगा ।

मुन्शी

आपका पार कौन पा सकता है साहब ।

हेमन्त

देखो मुन्शी जी, आपसे मेरी कोई भी बात छिपी हुई नहीं है । पर यह कान लगाकर सभी बातें सुनने की आदत आपको छोड़ देनी होगी ।

मुन्शी

हैं-हैं-हैं ! यह क्या कहते हैं आप जी ? हरे राम ! हरे राम ! मैं तो आपका बच्चा हूँ !

(डमी समय महन में किसी कार के आने और खड़े होने की आवाज सुनाई देती है । हेमन्त मुन्शी जी से कहता है ।)

हेमन्त

जल्दी से भीतर चले जाइए मुन्शी जी ! याद है न ? आज रात इस घर में मैं अकेला हूँ; सिर्फ अकेला ।

(मुन्शी चोर दरवाजे से भीतर चला जाता है । इसी समय दरवाजे पर दस्तक होती है । हेमन्त दरवाजा खोलता है । सदानन्द का प्रवेश । वह बहुत अधिक घबराया हुआ है । जल्दी में उसने कपड़े भी नहीं बदले । रात की पोशाक के ऊपर लबादा भर पहन लिया है । दोनों बड़ी गम्भीरता से एक-दूसरे को देखते हैं और प्रणाम करते हैं । हेमन्त दरवाजा बन्द कर देता है ।)

हेमन्त

माफ़ कीजिए साहब । इस गीली और अंधेरी रात में आपको मैंने यह कष्ट दिया । आइए, आपका ड्रिंक तैयार है ।

सदानन्द

तकल्लुफ़ की बातें छोड़िए । यह बताइए कि बात क्या है ?

मुन्शी

तकल्लुफ़ नहीं, यह तो शिष्टाचार है।

सदानन्द

यही बातें सुनाने के लिए आपने मुझे यहाँ बुलाया है ?

हेमन्त

देखिए साहब, यहाँ आकर आपने मुझ पर कोई एहसान नहीं किया है। यह तो आपकी खुशकिस्मती थी कि अभी-अभी एकाएक मुझे अपने आदमी से एक ऐसी खबर मिल गई, जिसके साथ आपका भविष्य बँधा हुआ है।

सदानन्द

मुझे और परेशान न करो भाई हेमन्त। साफ़-साफ़ बताओ तो सही कि मामला क्या है ?

हेमन्त

आपकी आजादी के अब कुछ ही घंटे बाकी हैं। अफ़सोस यही है कि ये चन्द घंटे भी एक गीली और अंधेरी रात के हैं।

सदानन्द

आपको कैसे मालूम हुआ कि मैं कल प्रातः गिरफ़्तार हो रहा हूँ ?

हेमन्त

अभी-अभी मुझे एक बहुत बड़े पुलिस अफ़सर से यह खबर मिली है।

सदानन्द

किस अफ़सर से ?

हेमन्त

मुझे खेद है कि उसका नाम मैं आपको नहीं बता सकता।

सदानन्द

पहले चाहे मैं कुछ भी करता रहा हूँ, पर अब मैंने यह कसम खा ली है कि किसी तरह का भ्रष्टाचार मैं नहीं करूँगा।

हेमन्त

कहते हैं न 'नौ सौ चूहे खाय के बिल्ली चली हज को !' क्या मैं जान सकता हूँ कि आपके इस हृदय-परिवर्तन का कारण क्या है ?

सदानन्द

तुम्हारे जैसा शैतान इन बातों को समझ भी नहीं सकेगा ।

हेमन्त

फिर भी कोशिश करने में क्या हर्ज है ? कैसे हुआ आपका यह हृदय परिवर्तन ?

सदानन्द

उस दिन से, जिस दिन कमला जैसी गरीब लड़की ने अपने हाथ में आए १० हजार रुपए अपने पुराने मोहल्ले के रिफ्यूजी स्कूल को दे दिए । तुमने जो २५ हजार रुपया मुझे उसी दिन दिया था, वह भी मैंने उसी स्कूल को दे दिया था । पर मुझे मालूम है कि तुम्हारे जैसे दानव पर इन बातों का कोई असर नहीं पड़ेगा । यह सब तुम्हें सुनाना बिल्कुल बेकार है । सचाई यह है कि अब मेरी और तुम्हारी राह एकदम भिन्न-भिन्न है ।

हेमन्त

अब चाहे आप देवता ही क्यों न बन गए हों । पर आपका पुराना रिकार्ड तो बदल नहीं जाएगा !

सदानन्द

(खिज कर) मगर आखिर मुझ पर क्या आरोप लगाए गए हैं ?

हेमन्त

यही कि आप रिश्वतें लेकर ठेके देते हैं, हिस्सा रखकर परमिट जारी करते हैं और अपनी ऊँची स्थिति का अनुचित लाभ उठाते हैं ।

सदानन्द

(श्रवज्ञा भाव से) बस इतना ही ? मैं देख लूँगा कि कौन माई का लाल इस आधार पर मुझे गिरफ्तार करता है ।

हेमन्त

पर ये आरोप इतने हवाई नहीं है, जितना आप समझ रहे हैं साहब ।
उदाहरण के लिए—(क्षण भर के लिए रुक जाता है ।)

सदानन्द

हाँ, हाँ, कहिए न । उदाहरण के लिए—

हेमन्त

उदाहरण के लिए, यदि मैं आपको बताऊँ कि पुलिस छापा मार कर आज साँझ मेरे यहाँ से वे तीनों कागज ले गई है, जिन पर आपके सामने और आपके ही कमरे में कमला से हस्ताक्षर लिए गए थे, तो क्या यह काफ़ी गम्भीर स्थिति नहीं है ?

सदानन्द

पर पुलिस को यह कहाँ मालूम कि वे हस्ताक्षर मेरे कमरे में और मेरे सामने किए गए थे ?

हेमन्त

क्या आप समझते हैं कि इस बात का कोई गवाह नहीं है ?

सदानन्द

इस बात के गवाह या तो तुम हो और या कमला । जहाँ तक कमला का सम्बन्ध है, मुझे विश्वास है कि वह कभी मुझे फँसाने का प्रयत्न नहीं करेगी । और तुम्हारे बारे में मैं इतना ही कह सकता हूँ कि यदि तुमने मेरे खिलाफ़ गवाही दी तो तुम्हारे लिए मुझसे अधिक बुरा और कोई न होगा ।

हेमन्त

मेरे घर में मुझे ही इस तरह की धमकी देना आपके लिए कहाँ तक उचित है, यह तो आपके सोचने की बात है । पर यह मत भूलिए कि अदालत में गवाह के कटघरे में खड़ी होकर २३ बरस की वह बेवकूफ़ लड़की बड़े-बड़े सरकारी वकीलों की जिरह का सामना खाक करेगी । कहते हैं न कि झूठ के पैर नहीं होते ।

सदानन्द

पर तुम्हारे जैसे झूठे आदमी के न सिर्फ पैर हैं, बल्कि वे पैर उखड़ने में ही नहीं आते।

हेमन्त

इस प्रशंसा के लिए धन्यवाद। जो खबर मैंने आपको दी है, यदि वह आपके लिए चिन्ताजनक नहीं है, तो फिर जाइए और आराम से सो जाइए। यह गीली और अंधेरी रात शायद सोने के लिए ही बनी है। आप भी जाइए और आराम से सो जाइए !

सदानन्द

तुम शंतान के भी बाप हो हेमन्त। तुम्हीं बताओ कि मुझे क्या करना चाहिए ?

हेमन्त

अब आए न सीधी राह पर। मैं आचार्य चाणक्य का अनुयायी हूँ। मैं कभी निराश नहीं होता। मेरे सामने कभी अंधेरा नहीं आता। मैं अंधेरे में भी दूर तक देख लेता हूँ।

सदानन्द

हाँ, हाँ, तुम उल्लू जो हुए। बताओ मेरे लिए तुम्हें क्या दिखाई दे रहा है ?

हेमन्त

आप चाहे जो कुछ कह लीजिए साहब। मैं बुरा नहीं मानूंगा। आपको क्या करना चाहिए, यह मैंने खूब अच्छी तरह सोच लिया है। सोच ही नहीं लिया, बल्कि पूरा खरीता भी तैयार कर लिया है।

(अपनी जेब से टाइप किए हुए दो कागज़ बाहर निकालता है। एक कागज़ वह सदानन्द की ओर बढ़ाता है और दूसरा, जो पहले की कापी है, अपने हाथ में ही रखता है।)

हेमन्त

यह चिट्ठी लीजिए, इस पर अपने हस्ताक्षर कर दीजिए और बस, इस गीली और अंधेरी रात में आराम से और बेफ़िक्री से अपने बिस्तर पर जाकर सो जाइए।

(सदानन्द कागज़ हाथ में ले लेता है। एक मिनट तक वह मन ही मन उसे पढ़ता है। क्रमशः उसके हाथ कांपने लगते हैं और वह बढ़ते हुए क्रोध और घृणा से उक्त कागज़ का पिछला अंश बोलकर पढ़ने लगता है।)

“धीरे-धीरे यह स्पष्ट हो गया कि २३ बरस की यह शरणार्थी लड़की अधिक-से-अधिक रुपया वसूल करने के लिए कोई भी काम कर सकती है। मुझे इस बात के पूरे प्रमाण मिले हैं कि ६ महीनों तक तम्बाकू कम्पनी का सेक्रेटरी रहकर अपने मौसा की देख-रेख में इसी कमला ने वे सब कारनामे किए हैं, जो शेयर मार्केट का कोई बड़े-से-बड़ा चालबाज़ और बेईमान जानकार कर सकता है। मैं निश्चय से कह सकता हूँ कि अपने जीवन में इस कमला से बढ़कर चालबाज़ नारी मैंने दूसरी नहीं देखी।”

सदानन्द

(हेमन्त से) खूब ! खूब ! बहुत खूब ! अब मुझसे क्या चाहते हो ?

हेमन्त

बस, इस कागज़ पर अपने दस्तखत कर दीजिए।

सदानन्द

जरा अपनी कलम तो लाओ !

(इतनी आमानी से काम बनता देखकर हेमन्त खुशी में भर उठता है और अपनी कलम खोलकर सदानन्द के पास ले जाता है। हेमन्त के निकट आते ही सदानन्द पूरे जोर से एक थप्पड़ उसके मुँह पर मारता है, जिसकी ऊँची आवाज़ दूर तक सुनाई देती है। कलम छिटककर दूर जा गिरती है।)

सदानन्द

बेईमान ! हरामखोर ! बदमाश ! तुने समझ क्या रक्खा है !

(हेमन्त अचानक लगे थप्पड़ के धक्के से संभलकर ज़रा पीछे हट गया है। पर अब भी वह क्रुद्ध दिखाई नहीं देता।)

हेमन्त

अपना पूरा गुस्सा निकाल लीजिए साहब। आप मेरे घर आए हैं और मेरे मेहमान हैं। मैं आप पर हाथ नहीं उठाऊंगा। (जबरदस्ती मुस्कराने की कोशिश करते हुए) मुझे आप पर रहम आता है सदानन्द साहब !

सदानन्द

मेरे पास पिस्तौल होता तो तुझ जैसे कमीने को इसी वक़्त गोली से उड़ा देता !

हेमन्त

मेरा पिस्तौल हाज़िर है। कहिए तो अभी निकाल लाऊँ ?

सदानन्द

ओह, तुम्हारे जैसा शैतान मैंने अपने जीवन में दूसरा नहीं देखा।

हेमन्त

यह आपका सौभाग्य है। अच्छा, अब आप जा सकते हैं। आपको आराम की बहुत ज़रूरत है।

(सदानन्द ३, ४ क्षणों तक चुपचाप खड़े रहकर कुछ सोचता रहता है और हेमन्त भी निश्शब्द रूप से वहीं आस-पास टहलने लगता है। उस के बाद)

सदानन्द

(बहुत धीमी और शिथिल आवाज़ में) अगर मैं इस कागज़ पर हस्ताक्षर कर भी दूँ तो इस बात की क्या गारण्टी है कि मैं बच जाऊँगा ?

हेमन्त

यह बात यदि आप मुझ से पहले ही पूछ लेते तो शायद इतनी दूर तक पहुँचने की नौबत ही न आती। बात यह है कि यह नोट मेरा बनाया हुआ नहीं है। यह नोट पुलिस ही ने मुझे दिया है। पुलिस का कहना है कि सदानन्द साहब जैसे बड़े अफसर से लोहा लेने में उन्हें भी खुशी नहीं है। और फिर यदि सच्चा मुजरिम सीधे तौर से हिरासत में लिया जा सके तो फिर घुमा-फिरा कर कार्रवाई की ही क्यों जाए ?

सदानन्द

(अत्यन्त घृणा भरे स्वर में) सच्चा मुजरिम !

हेमन्त

जी हाँ। फिर इस नगण्य-सी बेवकूफ लड़की के लिए पुलिस का सामना करने भी कौन आएगा ? आपके तो हजार तरफदार हैं।

(हेमन्त वह कागज़ और कलम पुनः सदानन्द के पाम ले जाता है, जो काँपते हाथों से उस पर हस्ताक्षर कर देता है। सदानन्द क्रोध से हेमन्त की ओर कागज़ फेंक कर उधर देखे बिना ही तेज़ी से दरवाज़े की ओर बढ़ता है।)

हेमन्त

(कागज़ उठाकर जेब के हवाले करने के बाद) धन्यवाद। अजी, मंने कहा, अपना ड़िक तो पीते जाइए !

(सदानन्द हेमन्त की ओर घूम कर भी नहीं देखता और शीघ्रता से दरवाज़ा खोल कर बाहर चला जाता है। दरवाज़े से तेज़ और गीली हवा का एक झोंका भीतर आता है, जिसमें कमरे के सब परदे हिल जाते हैं।)

हेमन्त

(आगे बढ़कर दरवाज़ा बन्द करता है और ऊँचे स्वर में अत्यन्त नीरस बल्कि कर्कश हँसी हँसता है।)

हः-हः-हः ! हाः-हाः-हाः ! एह-एह-एह !

(इसी समय चोर दरवाज़ा खोल कर खर की टोपी हाथ में लिए मुन्शी धीरे-धीरे बैठक में आता है। हेमन्त का ध्यान उधर नहीं है। जब मुन्शी काफ़ी नज़दीक पहुँच जाता है, तो हेमन्त हँसने-हँसते अचानक पीछे की ओर घूम कर देखता है। खर की टोपी हाथ में लिए मुन्शी पर एकाएक निगाह पड़ते ही हेमन्त इतना अधिक चौंक उठता है, जैसे उसने कोई भूत देख लिया हो। उसके मुँह से अचानक एक चीख निकलती है और वह कांप उठता है। पर जैसे उसी क्षण वह मुन्शीजी को पहचान लेता है और गुस्से से भर उठता है।)

हेमन्त

(मुन्शी जी की ओर लपक कर) अबे मुन्शी के बच्चे ! मैं आज तुझे ऐसा सबक दूंगा !

(मुन्शी खर की टोपी लिए तेज़ी से पीछे की ओर दौड़ना है और ३, ४ कदम हेमन्त उमका पीछा करता है। उसके बाद वह एकाएक रुक जाता है। मुन्शीजी इस समय तक चोर दरवाज़े तक पहुँच गए हैं।)

हेमन्त

ओह, मैं यह सब क्या कर बैठा ! मुझे माफ़ कर दीजिए मुन्शी जी !

मुन्शी

(घबराहट भरे स्वर में) जी...मैं तो आपका बच्चा हूँ ! जी, मैं तो आपका बच्चा हूँ !

हेमन्त

खरवाज़े के साथ कान लगा कर बात सुनने की आदत से आप बाज़ नहीं आए न मुन्शी जी। मैंने आपसे क्या कहा था ?

मुन्शी

अजी, बीच में एकाएक ऐसी ऊँची आवाज़ मेरे कानों में आई कि मैं रह नहीं सका। वह आवाज़ कैसी थी साहब !

(हेमन्त कोई जवाब नहीं देता।)

मुन्शी

अब आइन्दा कभी ऐसी भूल करूँ तो आप चाहे जो सजा दीजिएगा ।
(हेमन्त कुछ भी कहे बिना शान्त भाव से एक सोफा कुर्सी पर बैठ जाता है । कुछ क्षण कमरे में चुप्पी रहती है । उसके बाद)

मुन्शी

आप बहुत थक गए हैं साहब ! इतना चिन्तित मैंने आज तक कभी आपको नहीं देखा था । अगर मेरे लायक कोई सेवा हो तो—

हेमन्त

(शान्त स्वर से) सब काम ठीक हो गया है मुन्शी जी ! आप किसी किस्म की चिन्ता न करें । मेरा सब काम समाप्त हो गया है और मुझे नींद आ रही है । जाइए, अब आप भी अपने घर जाकर आराम कीजिए ।

मुन्शी

(विनय से) आपकी इजाजत हो तो मैं यहाँ ही पड़ा रहूँगा साहब । अब इतनी रात गए कहाँ जाऊँगा ? फिर आज वर्षा भी तो हो रही है । इस गीली रात में आप मुझे घर से निकाल रहे हैं !

हेमन्त

आप घबराइए नहीं मुन्शी जी ! मैं आत्महत्या नहीं करूँगा । वर्षा कब की बन्द हो चुकी है और आपका घर दूर भी तो नहीं है । अब आप जाइए । आप बहुत अच्छे आदमी हैं । इस मुसीबत में भी आप मेरा साथ नहीं छोड़ना चाहते । मैं आजीवन आपका कृतज्ञ रहूँगा । पर अब आप जाइए ! मुझे आराम की जरूरत है । (खड़े होकर मुन्शी जी से हाथ मिलाता है ।)

(अनमने भाव से मुन्शी का प्रस्थान । खुले दरवाजे से हेमन्त जाते हुए, मुन्शी की ओर ताकता रहता है । तेज़ हवा से उसके सिर के बाल,

कपड़े और कमरे के परदे हिलते दिखाई देते हैं। २, ४ क्षणों तक हेमन्त चुपचाप कुछ मोचता है। और फिर दरवाजा भीतर से बन्द कर टेलीफोन के पास आ खड़ा होता है। उसके बाद जैसे अपने आप से बातें करने लगता है।)

हेमन्त

(आप ही आप) इतना आगे बढ़ आया हूँ कि अब मेरे लिए लौटने की राह ही बन्द हो चुकी है। राजीव मुझ पर विश्वास करने लगा है। सदानन्द अब मेरी मुट्ठी में है। तम्बाकू कम्पनी ने जिन दिनों सब से अधिक बेईमानियाँ की थीं, उन दिनों कमला ही उसकी सेक्रेटरी थी। अब कमला न रहे तो सारा मामला सुलझ जाता है। कितनी दिलचस्प बात है! दो बड़े-बड़े बदमाशों के काले कारनामों का सारा बोझ एक निरीह लड़की पर डाल दिया जा सकता है, क्योंकि इतने ही से कानून का पेट मज्जे में भर जाता है। हः हः हः !

(शीघ्रता ने वह एक छोटा-सा नोट टाइप कर जेब में डाल लेता है। उसके बाद वह टेलीफोन डाइरेक्टरी उठाता है। उसमें से एक नम्बर देख कर वह नम्बर मिलाता है और रिसीवर कान से लगा लेता है।)

हेमन्त

हैलो, कमला जी। मैं हेमन्त बोल रहा हूँ।...मेरी आवाज आप पहचान गईं न?...इतनी रात गए आपको तकलीफ़ देने के लिए क्षमा चाहता हूँ। पर कोई और चारा भी नहीं था!...अच्छा है, आप अभी सोई न थीं!...देखिए, बात यह है कि सदानन्द जी एकाएक मुसीबत में फँस गए हैं। अगर इसी समय हम लोगों ने कुछ न किया, तो कल प्रातः तक उनके हाथों में हथकड़ियाँ पड़ जाएंगी!...जी, आप परेशान न हों, मुझे विश्वास है कि अब भी हम उन्हें बचा सकते हैं।...आपको यकीन नहीं आ रहा?...आप बेशक सदानन्द जी को टेलीफोन करके देख लें।...वह तो

मुझ से शरण माँगने यहाँ आए थे, पर मैंने उन्हें समझा दिया कि यहाँ रहने में खतरा है...आर इसी वस्तु यहाँ आ जाइए।...मैं अपनी गाड़ी लेकर आ जाता, मगर वह खतरे से खाली न होगा।...हाँ, ठीक है। आपका घर नज़दीक ही तो है।...तेज़ चाल से पाँच ही मिनटों में आप यहाँ पहुँच सकती हैं...नहीं टैंक्सी करना भी ठीक न होगा !...नहीं, मैं अकेला नहीं हूँ। मेरा मुन्नी यहाँ ही है...आप बेफ़िक्र रहें ! वही आपको आपके घर तक छोड़ आएगा !...आज तो बादलों वाला दिन है, आप बरसाती ओढ़कर आएंगी तो किसी को पता भी न चलेगा।

(रिसीवर टेलीफ़ोन पर रख कर हेमन्त क्षण भर वहीं खड़ा रहता है। उसके बाद धीरे-धीरे वह सभी परदों की जाँच करता है। खिड़कियों और दरवाज़ों की नीचे और ऊपर की चिटकनियाँ ठीक से बन्द करता है। उसके बाद पहले कमरे की सभी वस्तियाँ एकाएक बुझा देता है और करीब-करीब साथ ही साथ केवल एक बड़ी शक्ति का टेबल लैम्प जला देता है। क्षण भर के लिए सारे कमरे पर नज़र डाल कर वह अपनी मेज़ के निकट जाता है। वहाँ चाची से मेज़ की पिछली दराज़ इस तरह खोलता है कि ज़रा भी आवाज़ न हो। इस दराज़ में से वह छोटा-सा पिस्तौल निकालता है। इस पिस्तौल के ६ घरों में वह ६ गोलियाँ डालता है और उसे बन्द कर वह उम पर सेफ़्टी कैच लगा देता है। किसी भी काम में जल्दी नहीं करता। पिस्तौल हाथ में लिए वह पुनः अपनी मेज़ के पास पहुँचता है और उसे सबसे ऊपर के दराज़ में रख देता है। धीरे-धीरे चल कर वह सोफ़ा कुर्मी के निकट पहुँचता है और उसकी पीठ पर सहाग लेकर बैठ जाता है। उसके दोनों हाथ उसकी छाती पर एक दूसरे का सहारा लेकर पड़े हैं।)

हेमन्त

(कमरे के अर्ध-अन्धकार मग्न भाग की ओर देखकर एकाएक चौक

उठता है, जैसे उसने वहाँ किसी और को देख लिया हो। वह आप ही आप कहने लगता है।)

ओह, यह छाया-मूर्ति-सा कौन है?...यह तो मेरी अपनी ही प्रतिमूर्ति है! हेमन्त! मेरा ही दूसरा स्वरूप! क्या कहने आए हो मुझसे तुम भाई हेमन्त?...कहते हो वापस लौट जाओ? नहीं, नहीं, हरगिज नहीं! तुम मुझे बहन उमा की वोहाई देना चाहते हो! तुम मुझे मेरे मुन्शी की याद विलांना चाहते हो! पर मैं तुम्हारी कोई बात नहीं सुनूँगा। हेमन्त अपने मार्ग से कभी वापस नहीं लौटा! हेमन्त ने कभी प्रायश्चित्त नहीं किया! नहीं, तुम हेमन्त नहीं हो; तुम सिर्फ छल हो, माया हो, झूठ हो! हेमन्त तो मैं हूँ! मैं डूँगा नहीं! मैं वापस नहीं लौटूँगा! मैं हार नहीं मानूँगा! हरगिज नहीं!!

(एकाएक आकाश में जोर से बिजली चमकती है, उमका प्रतिबिम्ब अर्ध-अन्धकारमग्न खिड़की के परदों पर भी पड़ता है। हेमन्त उसे देखकर चौंक उठता है।)

हेमन्त

ओह, वह कौन है जो आज की इस गीली, अंधेरी रात को प्रकाशमान करने का व्यर्थ प्रयत्न कर रहा है? मुझे प्रकाश नहीं चाहिए! मुझे अन्धकार चाहिए! अन्धकार!! गहन अन्धकार!!!

(बादल की गरज सुनाई देती है। हेमन्त चुपचाप गरज सुनता है। दो-तीन क्षण सन्नाटा रहता है। उसके बाद साफ़ तौर से दरवाजे पर दस्तक सुनाई देती है। हेमन्त शीघ्रता से तीन बत्तियाँ एक साथ जला देता है और आगे बढ़कर दरवाजा खोलता है। घबराई हुई दशा में कमला प्रवेश करती है। कमला की सज्जा और पोशाक से ऐसा प्रतीत होता है, जैसे वह किसी पार्टी से लौट कर आई हो। अपनी सुन्दर पोशाक पर उसने बरसाती ओढ़ रक्खी है। वह हेमन्त को नमस्कार करती है।

फीकी-सी जबरदस्ती की मुस्कराहट के साथ नमस्कार का उत्तर देकर हेमन्त दरवाजा अन्दर से भेड़ लेता है।)

हेमन्त

आइए कमला जी, बैठिए। मालूम होता है, किसी दावत में गई थीं।

कमला

(बिना बैठे) बहुत रात बीत गई। बैठने की जरूरत नहीं है। जल्दी से मुझे बता दीजिए कि श्री सदानन्द पर क्या मुसीबत आई है? उनके लिए मुझे क्या करना होगा? (इधर-उधर देखकर) ओह, यहाँ कितना सघाटा है! मुन्दी जी कहाँ हैं?

हेमन्त

मुन्दी जी साथ के कमरे में कुछ जरूरी काम कर रहे हैं। वह अभी आते ही होंगे। आप बैठिए तो।

(अनमने भाव से कमला सोफ़ा कुर्सी पर बैठ जाती है।)

कमला

मामला क्या है?

हेमन्त

अभी बताता हूँ। मगर आप यह बरसाती कोट तो उतार दीजिए।

कमला

ओह, मुझे ख्याल ही नहीं रहा।

(बरसाती कोट उतारकर एक तरफ़ डाल देती है। हेमन्त कमला की ओर देखता रहता है।)

हेमन्त

तुम सचमुच सुन्दरी हो कमला।]

कमला

(गम्भीर स्वर से) इस आधी रात के समय ये बातें सुनने के लिए मैं आपके यहाँ नहीं आई। आप श्री सदानन्द के बारे में क्या कह रहे थे?

हेमन्त

यही कि कल सुबह वह गिरफ्तार हो जाने वाले थे ।

कमला

उस वक्त टेलीफोन पर तो आपने कहा था कि वह कल सुबह गिरफ्तार हो जाएँगे । अब आप कह रहे हैं कि वह गिरफ्तार हो जाने वाले थे । इसका क्या मतलब ?

हेमन्त

यही कि अब वह गिरफ्तार नहीं होंगे ।

कमला

यह कौन-सा मजाक है । एक लड़की को आधी रात के समय घर बुलाकर इस तरह की अभद्रता बरतना कहाँ तक उचित है ! मैं आपको इतना नीच नहीं समझती थी ।

हेमन्त

कमला, यह मजाक नहीं है । सदानन्द साहब जरूर ही गिरफ्तार हो जाते, यदि वह यह चिट्ठी पुलिस को न लिख देते ।

(सदानन्द के हस्ताक्षर वाले पत्र की प्रतिलिपि कमला की ओर बढ़ाता है ।)

कमला

(अत्यन्त सरमरी निगाह में पढ़कर) यह सब तो साफ़ तौर से जालसाजी मालूम होती है ! यह सदानन्द जी की भाषा ही नहीं है । इतने दिनों में मैं उनकी शैली खूब समझ गई हूँ । यह जालसाजी मुझ पर नहीं चलेगी !

हेमन्त

तुम बड़ी भोली हो कमला ।

कमला

(उत्तेजित होकर) पर आप मुझसे क्या चाहते हैं ? आपने मुझे इस आधी रात के समय इस तरह धोखे से अपने घर क्यों बुलाया ?

हेमन्त

उद्विग्न मत होओ कमला । अभी मैं तुम्हें सब कुछ बताता हूँ ।

कमला

(एकाएक खड़ी होकर) नहीं, मैं कुछ नहीं सुनना चाहती । मैं घर जाऊँगी । मुझे घर जाने दीजिए ।

(दरवाजे की ओर बढ़ती है । हेमन्त आगे बढ़कर उसकी राह रोक लेता है और अधिकारपूर्ण तथा ऊँचे स्वर से पुकारता है)

हेमन्त

कमला !

(कमला सिहर कर खड़ी हो जाती है । वह कोई जवाब नहीं देती ।)

हेमन्त

(उसी तरह आज्ञापूर्ण स्वर से) बैठ जाओ कमला !

(कमला घबराकर उसी सोफ़ा कुर्सी पर बैठ जाती है ।)

हेमन्त

(धमकी भरे स्वर में) यदि अबके तुमने उठने का प्रयत्न किया तो याद रखना—

कमला

(घबराहट और विनय के साथ) मुझे यहाँ से जाने दीजिए हेमन्त भाई !

(हेमन्त दरवाजे की ओर बढ़ता है और उस पर ताला लगा कर चाबी अपनी जेब में डाल लेता है ।)

कमला

(दरवाजे की ओर देख कर) ओह, आपने दरवाजे पर ताला क्यों लगा दिया हेमन्त भाई ?

हेमन्त

देखो कमला, इस तरह घबराने से काम नहीं चलेगा। सच बात तो यह है कि हम सब खतरे में हैं—सदानन्द जी, तुम, मैं—हम सभी !

(कमला कोई जवाब नहीं देती। वह और भी अधिक घबराई हुई दिखाई देती है और ढासना लगाकर निश्चेष्ट-मी पड़ी रहती है।)

हेमन्त

कमला !

(कोई जवाब नहीं मिलना।)

हेमन्त

(ऊँचे स्वर से) कमला ! कमला !

(फिर भी कोई जवाब नहीं मिलता। हेमन्त आग बढ़कर कमला के पास जाता है, जो अब भी आँखें बंद किए सोफ़ा कुर्मी की पीठ से ढासना लगाए उसी तरह पड़ी है।)

हेमन्त

(अभ्यास वश) मुन्शी जी ! मुन्शी जी !

(प्रायः साथ ही साथ)

हेमन्त

ओह, मैं तो अकेला हूँ ! पानी ! मुझे ठण्डा पानी लाना चाहिए ! यह बेवकूफ़ लड़की तो बेहोश हो गई !

(शीघ्रता से चोर दरवाज़े की तरफ़ जाता है और दरवाज़ा खोल कर भीतर चला जाता है। कमला आँखें खोलती है और हेमन्त को दूसरे कमरे में जाता देखकर शीघ्रता से उठती है। निश्चब्द रूप से उठकर वह पास ही की बाईं दीवार की खिड़की के परदे के पीछे जाकर उसकी दोनों चिटकनियां खोल देती है, पर खिड़की नहीं खोलती, न पर्दों को ही हिलाती है। उसके बाद अत्यन्त शीघ्रता से लौट-

कर वह उसी तरह सोफ़ा कुर्सी पर पड़ जाती है। क्षण भर बाद एक हाथ में फ्रिज से ठंडे पानी की बोतल और दूसरे हाथ में शीशे का गिलास लिए हेमन्त का प्रवेश।)

हेमन्त

कमला !

(कोई उत्तर नहीं मिलता। तब हेमन्त कमला के मुँह पर बरफ़ के समान ठंडे पानी का छीटा देता है। कमला एकाएक आँखें खोल देती है।)

कमला

ओह, मैं कहाँ हूँ ?

हेमन्त

कमला, तुम मेरे घर में हो।

कमला

ओह, याद आया। आपने मुझे किसी जरूरी काम से यहाँ बुलाया था न ?

हेमन्त

हाँ, कमला ! अब तुम ठीक हो न ?

कमला

(आँखें अच्छी तरह खोल कर इधर-उधर देखते हुए) आप मुझे इस तरह डरा क्यों रहे हैं ?

हेमन्त

सच्ची बात का सामना तो तुम्हें करना ही होगा, कमला।

कमला

(ज़रा संभल कर अपने सहारे बैठते हुए) आप मुझसे चाहते क्या हैं ?

हेमन्त

जब मैंने टेलीफ़ोन किया था, यह तो स्पष्ट है कि तब तक तुम सोई नहीं थीं।

कमला

नहीं ।

हेमन्त

उस वस्तु तुम क्या कर रही थी ?

कमला

मैं सोने की तैयारी करने ही वाली थी कि आपका टेलीफोन आ गया ॥

हेमन्त

तुम्हें इधर आते किसी ने देखा है ?

कमला

नहीं ।

हेमन्त

तुम्हारे घर पर कौन-कौन लोग हैं ?

कमला

सिर्फ एक नौकरानी ।

हेमन्त

उसे यह मालूम है कि तुम बाहर गई हो ?

कमला

नहीं । वह अपना काम समाप्त कर अपने क्वार्टर में चली जाती है, जो मेरे फ्लैट के पिछवाड़े में है ।

हेमन्त

बहुत ठीक । मेरी कोई स्कीम कभी उलटी नहीं पड़ती ।

कमला

(घबरा कर) आप आखिर चाहते क्या हैं ?

हेमन्त

देखो कमला, मैंने अभी तुमसे कहा था कि हम तीनों खतरे में हैं । सदानन्द जी, मैं और तुम । मैंने इस बारे में बहुत कुछ सोचा है ।

कमला

क्या सोचा है ?

हेमन्त

(क्रूर भाव से) मैं इस परिणाम पर पहुँचा हूँ कि सदानन्द जी की और मेरी खातिर तुम्हें आत्महत्या कर लेनी चाहिए !

कमला

(अननुयपूर्वक) मुझे बहुत अधिक घबराहट अनुभव हो रही है । आप मुझे यहाँ से चले जाने दीजिए हेमन्त भाई !

हेमन्त

देखो कमला, इस गीली और अंधेरी रात में मुझे अपने भाग्य का निश्चय करना है । मेरी और सदानन्द जी की बरबादी आने में इस गीली और अंधेरी रात के सिर्फ कुछ घंटे ही बाकी हैं ।

कमला

मैं यह सब कुछ नहीं जानती । मुझे कृपा कर अपने घर लौट जाने दीजिए ।

हेमन्त

कमला, मैं यहाँ अगर तुम्हारी हत्या भी कर दूँ तो किसी को पता नहीं चलेगा । इस बँठक के सब दरवाजे बन्द हैं । हजार प्रयत्न करके भी तुम यहाँ से बाहर नहीं जा पाओगी । यहाँ सिर्फ मैं और तुम हैं । मेरे सिवा दूसरे किसी भी व्यक्ति को यह मालूम तक भी नहीं कि तुम यहाँ आई हुई हो !

कमला

(आवेश से खड़ी होकर) मैं मौत से उतना नहीं डरती, जितना तुम जैसे लोगों से डरती हूँ । मैंने अपनी आँखों से अपनी माँ की और अपने पिता जी की हत्या देखी है ! पर तुम लोग तो उन कातिलों से भी बड़े कातिल हो !

हेमन्त

बिलकुल ठीक । मगर यह इलहाम तुम्हें बहुत देर में हुआ है कमला !

कमला

(आवेश से) तुम लोगों का बस चले तो सारे देश को लूट-खसोट कर अपनी जेबों में भर लो ! तुम लोगों का बस चले तो देश तक को बेच खाओ !

हेमन्त

तुम तो बहुत अच्छा लंक्चर दे लेती हो कमला !

कमला

(आवेश से आँखों में आँसू भर आते हैं, पर आवाज धीमी नहीं होती) मुझ नगण्य-सी लड़की की कौन सुनेगा ? मेरा बस चले तो ऐसी ऊँची आवाज में, जिसे सारा देश एक साथ सुन सके, मैं कहूँ—“खबरदार रहो और अपने ही आस-पास मौजूद भीतर के दुश्मन को पहचानो ! यह देशद्रोही दुश्मन तुम्हारे घर में, दफ्तर में, बाज़ार में सभी जगह मौजूद है ! खबरदार रहो और अपने दुश्मन को पहचानो !”

हेमन्त

(जवरदस्ती मुस्कराने की चेष्टा करते हुए) पर यह कितनी बड़ी दंजेडी है कमला, कि कुछ ही देर बाद जब यहाँ से तुम्हारी लाश बरामद होगी तो दुनिया यही समझेगी कि तुम्हीं देश को बेच खाने वालों में थी !

(एकाएक खड़ा होकर अट्टहास करता है और कहने लगता है।)

हेमन्त

रवीन्द्रनाथ ठाकुर की एक कहानी में एक आदमी दुबारा मर कर यह सिद्ध करता है कि वह अब तक ज़िन्दा था। आज कमला मर कर यह सिद्ध करेगी कि सारा अपराध उसी का था और हेमन्त तथा सदानन्द जैसे धाध निर्वोष थे ! हः हः हः !!

(बहुत शीघ्रता से पिस्तौल निकाल कर उसे कमला की छाती के सम्मुख तान कर बायें हाथ से अपनी जेब से एक कागज़ निकालता है और यह कागज़ कमला की ओर बढ़ा कर कहता है।)

हेमन्त

यह इबारत अपने हाथ से दूसरे कागज पर लिखो कमला !

(कमला वह कागज हेमन्त से ले लेती है।)

हेमन्त

(तिपाई पर रखे एक पैड की ओर इशारा कर) यह पैड उठा लो !

(कमला वह पैड भी उठा लेती है।)

हेमन्त

(पिस्तौल और अधिक नज़दीक लाकर) जल्दी करो कमला !

(कमला उसी तरह बैठी रहती है। घबराहट और शीघ्रता में हेमन्त ज़से स्वयं बोल कर वह इबारत लिखवाने लगता है।)

हेमन्त

जल्दी लिखो कमला—

“अपने जीवन से मैं इतना तंग आ गई हूँ कि इससे छुटकारा पा लेने के सिवा और कोई उपाय मुझे नज़र नहीं आता। मैं हेमन्त जी के यहाँ अपराध स्वीकृति करने आई थी। पर इस वस्तु वह भी घर पर नहीं हैं। उनका रिवाज़वर मुझे उनके दरज़ में मिल गया है।”

—कमला

(कमला उमी तरह चुप बैठी रहती है। उसी समय टैलीफ़ोन की घंटी बज उठती है।)

हेमन्त

(घबराहट भरे स्वर में) मैं कहता हूँ, जल्दी करो कमला !

(कमला उसी तरह बैठी रहती है। टैलीफ़ोन की घंटी बजे जा रही है। हेमन्त और भी उतावलेपन से कमला की ओर पिस्तौल बढ़ाकर कहता है।)

हेमन्त

कमला, उठो और उसी कुर्सी पर बैठ जाओ !

(कमला कागज़ हाथ में लिए उठती है और दफ़्तर की टेबल के पास रखी कुर्सी पर जा बैठती है, जो टैलीफ़ोन के बहुत निकट है। हेमन्त रिसीवर उठा लेता है।)

हेमन्त

हैलो ! (बिना सुने) रॉग नम्बर ! (रिसीवर रख ही रहा होता है कि दरवाज़े पर जोर की थपथपाहट सुनाई देती है। हेमन्त घबराकर कमला से कहता है)

हेमन्त

जल्दी करो कमला, नहीं तो मैं गोली चला दूंगा !

(दरवाज़े पर की थपथपाहट और आवाज़ और भी अधिक ऊँची सुनाई देती है। कुछ क्षणों के बाद राजीव की आवाज़ सुन पड़ती है।)

राजीव

हेमन्त भैया, दरवाज़ा खोल दो ! तुम्हारा खेल ख़त्म हो गया ! दरवाज़ा खोल दो !

हेमन्त

(घबरा कर) ओह राजीव !

(हेमन्त पसोपेश में पड़कर बुत-सा खड़ा रह जाता है। कमला अपनी जगह बैठे-बैठे उसे देखती रहती है। दरवाज़े पर की पुकारें और खटखटाहट निरन्तर सुनाई दे रही हैं, बल्कि उनका वेग बढ़ता जाता है। कुछ क्षणों के बाद हेमन्त के चेहरे पर से घबराहट और अनिश्चितता के चिह्न मिट जाते हैं और वह चिल्ला कर कहता है)

हेमन्त

जो भीतर आएगा, उसे मैं गोली मार दूंगा !

(बाहर से राजीव की आवाज़ सुनाई देती है।)

राजीव (नेपथ्य से)

हिम्मत है तो मुझे गोली मार दो !

(हेमन्त दरवाजे की ओर पिस्तौल का मुँह करता है, पर अगले ही क्षण वह चिन्तित दिखाई देता है। उसके मुँह से निकलता है)

हेमन्त

ओह, उमा का क्या होगा !

(धीरे-धीरे हेमन्त पिस्तौल झुका लेता है और दूसरे हाथ से जेब में से दरवाजे की चाबी निकाल कर कमला की ओर फेंकते हुए कहता है।)

हेमन्त

यह चाबी लो कमला और दरवाजा खोल दो।

(कमला चाबी लेकर दरवाजे की ओर बढ़ती है, इधर हेमन्त तेजी से चोर दरवाजे से भीतर चला जाता है और दरवाजा बन्द कर लेता है। कमला बाहर का दरवाजा खोलती है। राजीव और जुगलकिशोर शीघ्रता से प्रवेश करते हैं।)

राजीव

हेमन्त कहाँ है कमला ?

(कमला उंगली से दूसरे कमरे की ओर इशारा करती है। राजीव शीघ्रता से उधर बढ़ता है और बन्द दरवाजे के पास आकर आवाज देता है।)

राजीव

हेमन्त भैया, तुम्हारा खेल समाप्त हो गया ! तुम अब आत्म-समर्पण कर दो !

(भीतर से भीषण अट्टहास सुनाई देता है। उसके बाद)

हेमन्त (नेपथ्य से)

हेमन्त कभी आत्म-समर्पण नहीं करेगा !

(और उसी क्षण पिस्तौल छूटने की ऊँची आवाज सुनाई देती है।)

राजीव

ओह ! हेमन्त ! हेमन्त !! (दरवाजा धकेल कर भीतर चला जाता है।)

(क्षण भर के लिए कमला और जुगलकिशोर पत्थर की मूर्तियों के समान खड़े रहते हैं। इसी समय घबराए हुए मदानन्द का प्रवेश।)

मदानन्द

तुम यहाँ कैसे जुगलकिशोर ? और तुम भी यहाँ ही हो कमला ?

जुगलकिशोर

आज रात माताजी ने कमला को दावत दी थी। उसके बाद मैं कमला को इनके घर छोड़ने गया तो उसी वक्त इनके टेलीफोन की घंटी बजी। यह हेमन्त जी का टेलीफोन था। मैंने कहा कि मैं भी साथ ही चलूँगा।

कमला

और उसी समय राजीव जी का टेलीफोन भी आया कि मैं उनका इन्तजार करूँ; वह भी मेरे साथ चलेंगे।

मदानन्द

(आश्चर्य से) राजीव जी का ! वह कैसे ?

कमला

राह में राजीव जी ने बताया कि पिछले कितने ही दिनों से हेमन्त जी के टेलीफोन पर होनेवाली सभी बातें उनके यहाँ रिकार्ड की जा रही थीं। हेमन्त के सब टेलीफोन उन्होंने सुने थे। वह सभी कुछ जानते हैं।

मदानन्द

राजीव जी इस वक्त कहाँ हैं ? हेमन्त कहाँ है ?

(इसी समय राजीव का प्रवेश। वह बहुत गम्भीर दिखाई दे रहा है।)

मदानन्द

हेमन्त कहाँ है राजीव भाई ?

राजीव

ओह, वह कहता था 'हेमन्त कभी आत्म-समर्पण नहीं करेगा !' कितनी भयानक बात है !

जुगलकिशोर

(सदानन्द से) हेमन्त ने आत्महत्या कर ली है साहब !

सदानन्द

ओह, यहाँ तक ! (मिर पकड़ लेता है।)

राजीव

आप इस वक्त यहाँ कैसे सदानन्द जी ?

सदानन्द

जब मैं घर वापस गया तो पता चला कि कमला ने मुझे टेलीफोन किया था । मैंने कमला को फोन किया तो वहाँ किसी ने रिसीवर तक नहीं उठाया । तब सारी बात मेरे लिए स्पष्ट हो गई और मैं इधर चला आया !

राजीव

(अत्यन्त दुःखित स्वर से) कमला, ज़रा टेलीफोन कर मि० मेहरा एस० पी० को तो बुलाओ ! और हाँ, एक टेलीफोन उमा को भी करना होगा !

(कमला टेलीफोन की तरफ़, बढ़ती है और परदा गिरता है।)

समाप्त

